अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

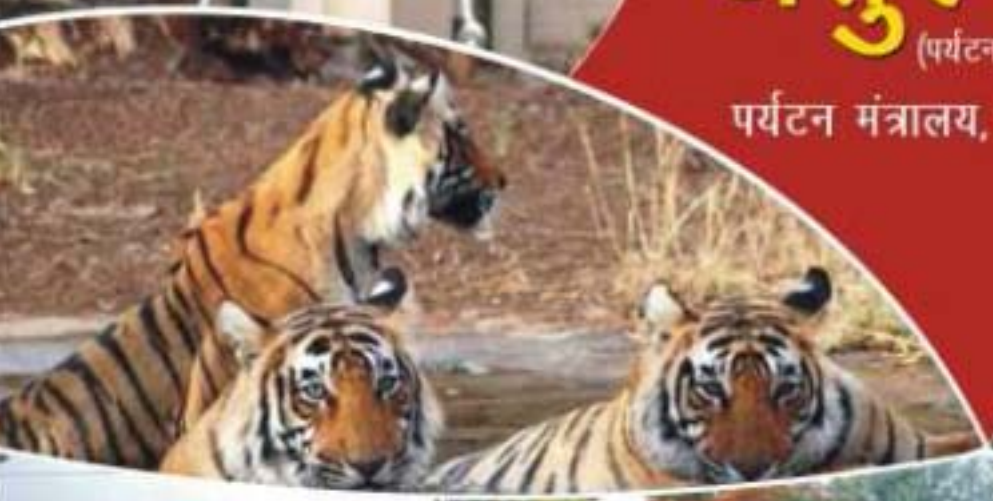

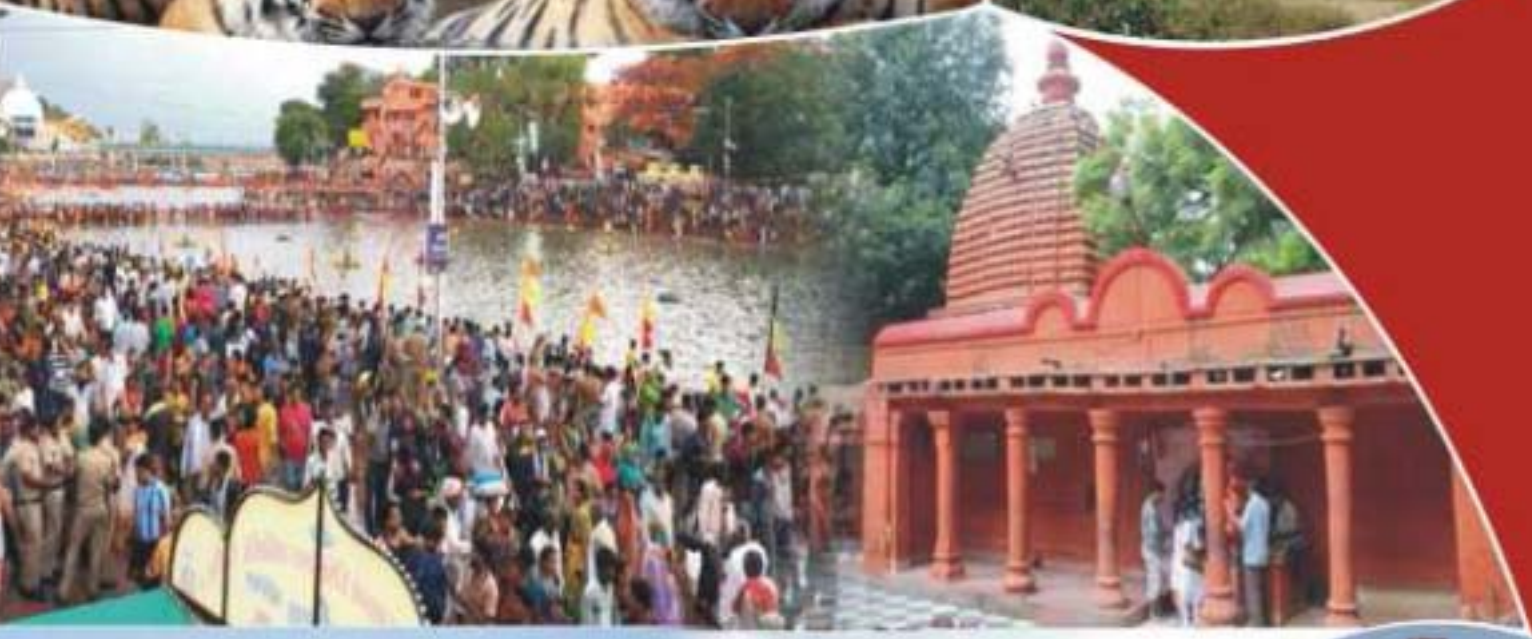

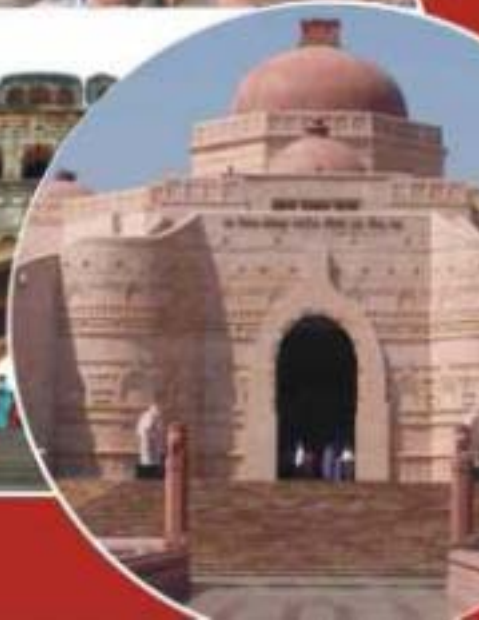

अतुल्य
भारत
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी होंगे अतुल्य
भारत के नए ब्रांड ऐम्बैसडर

वर्ष 1 अंक 4–5 अप्रैल–सितम्बर, 2016

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका)

- संरक्षक : **विनोद जुत्शी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **राम कर्ण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादन एवं प्रबंधन : **मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अध्यक्ष : **राज कुमार, राम बाबू**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
डलहौजी रोड, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– **editor-atulyabharat@gmail.com**
दूरभाष 011–23015594, 23793858

निःशुल्क वितरण के लिए

अतुल्य भारत

वर्ष 1 अंक–4 अप्रैल–सितम्बर, 2016

क्र.सं.	लेख		पृष्ठ
	माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का संदेश		v
	सचिव (पर्यटन) राज्य का संदेश		vii
	प्रधान संपादक की कलम से		ix
1.	लैंसडाउन	राजेन्द्र सिंह मनराल	1
2.	आओ चलें झारखण्ड	कप्तान प्राण रंजन प्रसाद	4
3.	नवाबों का शहर लखनऊ	राम बाबू	11
4.	पर्यटक इन्फो सेवा : 1393	शिवकुमार	20
5.	हमारे संस्थान : होटल प्रबंध संस्थान हैदराबाद	संजय ठाकुर	22
6.	अतुल्य भारत : एक विचार एक अभियान	प्रो. (डॉ.) निमित चौधरी	27
7.	योग बनाए सुंदर	शहनाज हुसैन	36
8.	साधारण कसरत	अनिल कुमार	38
9.	दोस्ती साईकिल से	राज कुमार	39
10.	पानी का करें सम्मान	मोहन सिंह	40
11.	महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती	हेमन्त कुमार	43
12.	कहानी राजभाषा नियमों की		48
13.	खुलकर पढ़िए, लिखिए, बोलिए हिंदी	बालेन्दु शर्मा दाधीच	49
14.	माजूली नदी दीप	सुधीर कुमार	51
15.	पर्यटन का आनन्द लें	रमण कुमार वर्मा	59
16.	पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक	एक रिपोर्ट	62
17	नाथुला	र्निमला खन्ना	65
18.	मेरा शहर (कविता)	रेखा द्विवेदी	71
19.	इसलिए यूं ही नहीं, पानी.....हूं (कविता)	उरूज जैदी	72
20.	फिर मौका हाथ न आएगा (कविता)	हेमन्त कुमार	73
21.	फाईल पर दर्द नहीं आता (कविता)	राजीव कुमार पाहवा	74
22.	लखनऊ मैट्रों में आपका इस्तकबाल है! हास्य व्यंग्य	राम बाबू	75
23.	विविध : i) **हिन्दी में काम करने वाले कार्मिक** ii) **शुभकामनाएं** iii) **लेखकों से अनुरोध**		76 77 78
24.	पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक सचित्र गतिविधियां		79-86

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 12 से 18 अगस्त, 2016 तक नई दिल्ली में इंडिया गेट पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम–भारत पर्व की कुछ झलकियां।

डॉ. महेश शर्मा
Dr. Mahesh Sharma

सत्यमेव जयते

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार, नई दिल्ली
MINISTER OF STATE (IC) FOR TOURISM
MINISTER OF STATE (IC) FOR CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मंत्रालय द्वारा "अतुल्य भारत" गृह पत्रिका का (चतुर्थ अंक) प्रकाशित किया जा रहा है, इसके संपादक वृंद को पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए बधाई।

"अतुल्य भारत" में भारतीय संस्कृति और धरोहरों के साथ–साथ भारत में ऐसे दुर्गम पर्यटक स्थलों के बारे में लेख प्रकाशित होते हैं, जो कि घरेलू पर्यटकों से अभी अछूते रहे हैं। पर्यटन मंत्रालय का यह प्रयास है कि दूरदराज के पर्यटक स्थलों का विकास किया जाए। हमारा यह भी प्रयास रहा है कि इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा में भारत के इन कम प्रसिद्ध रत्नों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका न केवल सरकारी कामकाज हिन्दी में करने में अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित करेगी। बल्कि इसमें प्रकाशित की गई उपयोगी रचनाओं के माध्यम से लोगों में पर्यटन के प्रति रूचि बढ़ेगी और भारत के सुदूर प्रखण्डों में स्थित पर्यटन स्थलों का विकास होगा।

"अतुल्य भारत" के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

नई दिल्ली

(डॉ. महेश शर्मा)

Incredible !ndia अतुल्य!भारत

301, परिवहन भावन, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001 दूरभाषः 91-11-23717969, 23710431 फैक्सः 91-11-23731506
कैम्प कार्यालय : एच–33, सैक्टर–27, नोएडा–201301 (उ.प्र.) दूरभाष : 0120–2444444, 2466666 फैक्स : 91–1202544488
301, Transport Bhawan, Parliament Street, New Delhi-110001 Tel : 91-11-23717969, 23710431 Fax : 91-1123731506
Camp Office : H-33, Sector-27, Noida - 201301 (U.P.) Tel. : 0120-2444444, 2466666 Fax : 91-120-2544488
E-mail : dr.mahesh@sansad.nic.in, drmahesh3333@gmail.com

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 12 से 18 अगस्त, 2016 तक नई दिल्ली में इंडिया गेट पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम–भारत पर्व की कुछ झलकियां।

विनोद जुत्शी, भा.प्र.से.
सचिव
Vinod Zutshi, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
पर्यटन मंत्रालय
परिवहन भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली–110001
Government of India
Ministry of Tourism
Transport Bhawan, Parliament Street
New Delhi-110001
Tel. : 91-11-23711792, 23321395
Fax : 91-11-23717890
E-mail : sectour@nic.in

संदेश

मंत्रालय में पिछले तीन अंकों के सफल प्रकाशन के बाद "अतुल्य भारत" पत्रिका का चतुर्थ अंक प्रकाशित होने पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक मंत्र प्रदान करती है। इस मंच के माध्यम से उन्हें अपने अनुभवों एवं विचारों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का एक सुअवसर मिला है। हमारा लक्ष्य भारतीय प्रर्यटन को विश्व स्तरीय बनाकर भारत को सर्वाधिक लोकप्रिय गंतव्य बनाना है और इसके लिए हमें निरंतर प्रयास करते रहने की आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि पिछले अंकों की तरह ही यह अंक भी उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगा। यह अधिकारियों और कर्मचारियों को सरकारी कामकाज राजभाषा हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करने के अलावा पर्यटन से संबंधित साहित्य सृजित करने में सहायक होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(विनोद जुत्शी)

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 12 से 18 अगस्त, 2016 तक नई दिल्ली में इंडिया गेट पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम–भारत पर्व की कुछ झलकियां।

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
राम कर्ण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

यह पत्रिका "अतुल्य भारत" का चतुर्थ अंक विविधतापूर्ण सामग्री संयोजन और नई छटा के साथ आपके सम्मुख है। इस अंक में भी हमने विभिन्न लेखकों एवं रचनाकारों से प्राप्त लेखों के अतिरिक्त अप्रैल से सितम्बर, 2016 की छमाही अवधि के दौरान विशेष उपलब्धियों एवं कार्यकलापों का उल्लेख किया है। पर्यटन मंत्रालय पर्यटन को नए शिखर पर लाने के लिए माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा के कुशल नेतृत्व और सचिव (पर्यटन) श्री विनोद जुत्शी के कुशल संचालन में कार्य कर रहा है।

गृह पत्रिका "अतुल्य भारत" का यह अंक विविधतापूर्ण सामग्री संयोजन के साथ आपके समक्ष है। इस अंक में झारखण्ड राज्य में पर्यटन के बारे कप्तान प्राण रंजन प्रसाद ने अपने सूचनाप्रद लेख "आओ चलें झारखण्ड" के माध्यम से इस राज्य की बहूमूल्य प्राकृतिक सम्पदा, मंदिरों, खनिज भंडारों एवं अन्य पर्यटक स्थलों एवं महत्वपूर्ण स्थनों का सजीव वर्णन किया है। देश की राजधानी दिल्ली से लगभग 350 कि.मी की दूरी पर एक बहुत ही सुन्दर पर्यटन स्थल है, "लैंसडाउन", जिसके बारे में राजेन्द्र सिंह मनराल का लेख, जल संरक्षण पर श्री मोहन सिंह का आलेख "पानी का करें सम्मान", देश की महान विभूति "महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती" के बारे में हेमन्त कुमार का लेख सम्मिलित किए गए हैं। श्री राम बाबू ने "नवाबों का शहर लखनऊ" मे इस शहर में विद्यमान रमणीय इमारतों, पार्को, खूबसूरत बागों तथा आसपास के क्षेत्रों में खास पर्यटक स्थलों के बारे में वर्णन किया है। श्री संजय ठाकुर ने "होटल प्रबंध और खान–पान प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद" शीर्षक के अंतर्गत इस संस्थान के बारे में विशेष जानकारी का सटीक चित्रण किया है। इसके अलावा आ. जकल योग का बड़ा प्रचार है इसी कड़ी में सुप्रसिद्ध सौंदर्य विशेषज्ञ शहनाज हुसैन का लेख "योग बनाए सुन्दर", अनिल कुमार का आलेख "साधारण कसरत", हिन्दी दिवस के अवसर पर बालेन्दु दाधीच का आलेख "खुलकर पढ़िए, लिखिए, बोलिए हिन्दी" के अलावा सुधीर कुमार का सूचनाप्रद लेख "असम का नदी द्वीप–माजुली", भारत –चीन सीमा पर पर्यटकों का आकर्षण "नाथुला दर्रा" पर निर्मला खन्ना का लेख तथा पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की 15.04.2016 को हुई बैठक की एक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई है।

विभिन्न विविधताओं और रमणीय पर्यटक स्थलों को समेटे हुए भारत देश पर्यटन विकास के लिए अपार सम्भावनाएं रखता है। हमें आवश्यकता है कि अपनी प्राकृतिक धरोहरों को पर्यटकों के लिए आकर्षक एवं सभी मायने में उपयुक्त बनाते हुए देश के पर्यटन को नवीन ऊचाइयों तक ले जाएं। माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा के कुशल नेतृत्व में पर्यटन मंत्रालय भारतीय पर्यटन को नवीन उचाईयों तक ले जाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। आदरणीय सचिव (पर्यटन) श्री विनोद जुत्शी इस प्रयोजन को सफल बनाने के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं।

वित्त वर्ष 2016–17 के लिए बजट में योजना और गैर योजना बजट अनुमान के अंतर्गत पर्यटन मंत्रालय के लिए कुल 1590.32 करोड़ रूपए आवंटित किए गए। इसमें 1500 करोड़ रूपए योजना परिव्यय तथा 90.32 करोड़ रूपए गैर–योजना परिव्यय शामिल है। स्वदेश दर्शन योजना के लिए 706.35 करोड़ रूपए गंतव्यों तथा प्रसाद स्कीम के लिए 100.00 करोड़ रूपए यूटी प्लान के अंतर्गत गंतव्यों तथा परिपथों के अवसंरचनाओं के विकास के लिए 10.00 करोड़ रूपए, पर्यटन अवसंरचना विकास के लिए केन्द्रीय एजेंसियों को सहायता के रूप में 70.00 करोड़ रूपए, बाजार अनुसंधान एवं भावी योजनाओं के लिए 11.00 करोड़ रूपए, राजस्व सृजित करने वाली बड़ी परियोजनाओं की सहायता के लिए 1.00 करोड़ रूपए आवंटित किए गए। इसके अतिरिक्त 410.00 करोड़ रूपए संवर्धन एवं प्रचार के लिए, 160.00 करोड़ रूपए प्रशिक्षण के लिए जिसमें 95.00 करोड़ रूपए होटल प्रबंध संस्थानों/भोजन कला संस्थानों/भारतीय पर्यटन व यात्रा प्रबंध संस्थान/राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनालॉजी परिषद के लिए तथा 65.00 करोड़ रूपए सेवा प्रदाताओं को क्षमता निर्माण के लिए आवंटित किए गए। योजना शीर्ष के अंतर्गत 30.00 करोड़ रूपए कम्प्यूटरीकरण के लिए भी आवंटित किए गए।

अप्रैल से जून 2016 की त्रैमासिक अवधि के दौरान विदेशी पर्यटकों के आगमन में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कुल 7.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जनवरी से जून 2016 की अवधि के दौरान कुल विदेशी मुद्रा आय 73065 करोड़ रूपये थी जो गत वर्ष इसी अवधि के दौरान प्राप्त 64035 करोड़ रूपए की तुलना में 14.1 प्रतिशत की वृद्धि रही, जबकि अप्रैल से जून 2016 की त्रैमासिक अवधि के दौरान कुल 32384 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा अर्जन के साथ 11.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जुलाई–सितम्बर, 2016 की त्रैमासिक अवधि में कुल 2021314 विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ जो वर्ष 2015 की इसी अवधि के दौरान आए 1770401 विदेशी पर्यटकों की तुलना में कुल 14.2% की वृद्धि है। जुलाई–सितम्बर, 2016 त्रैमासिक अवधि के दौरान कुल 39003 करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई जो वर्ष 2015 की इसी अवधि के दौरान अर्जित की गई 33808 करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा के अर्जन की तुलना में कुल 15.7% की वृद्धि रही। जनवरी–सितम्बर, 2016 की अवधि के दौरान कुल 6207441 विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ जो 2015 के इसी अवधि के दौरान 5615177 विदेशी पर्यटकों के आगमन की तुलना में 10.5% की वृद्धि दर्शाते हैं। यह 2015 की इसी अवधि के दौरान 4.7% की वृद्धि की तुलना में काफी अच्छा सुधार है।

जुलाई से सितम्बर तिमाही के दौरान 2016 में कुल 203393 इलेक्ट्रानिक पर्यटक वीजा (ई–टीवी) जारी किए गए जो 2015 की इसी अवधि के दौरान 75491 ई–टीवी की तुलना में 169.4% की वृद्धि थी। 2016 के पहले 9 महीने (जनवरी से सितम्बर) की अवधि के दौरान कुल 675302 ई–टीवी जारी किए गए जो वर्ष 2015 की इसी अवधि के दौरान 201705 ई–टीवी की तुलना में कुल 234.8% की वृद्धि दर्शाते हैं। इन आंकडों से यह साबित होता है कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को बराबर सफलता मिल रही है।

भारतीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने अप्रैल–जून, 2016 की त्रैमासिक अवधि के दौरान कई महत्वपूर्ण बैठकों एवं गतिविधियों में भाग लिया। पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा ने 7 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली में क्रूज पर्यटन पर कार्यदल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पर्यटन का प्रत्येक घटक महत्वपूर्ण है और हमारा लक्ष्य भारत को 365 दिन के अंदर यात्रा गंतव्य के रूप में पुनः स्थापित करना है। भारत सरकार ने पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने के लिए मालदीव गणराज्य की सरकार के साथ दिनांक 10.04.2016 को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) हस्ताक्षरित किया। भारत सरकार और कतर राज्य की सरकार के बीच 5 जून, 2016 को पर्यटन क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्थापित स्वायत्त शासी निकाय भारत पाक कला संस्थान (आईसीआई), तिरूपति अगस्त 2016 में आगामी शैक्षिक सत्र

से पाक कला में बीएससी कार्यक्रम चलाने हेतु 5 मई, 2016 को भारत पाक कला संस्थान (आईसीआई) और इन्दिरा गांधी नेशनल ओपद यूनिवर्सिटी (इग्नु) के बीच एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किए गए। 30.05.2016 को नई दिल्ली में माननीय पर्यटन मंत्री जी ने इन्क्रेडिबल इंडिया बेड एंड ब्रेकफास्ट/होम स्टे स्कीम पर कार्यशाला की अध्यक्षता की जिसका मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से बजट श्रेणी के प्रतिनिधियों के आवास सैक्टर में कमरों में बढ़ोतरी करना था।

पर्यटन मंत्रालय ने जुलाई से सितम्बर, 2016 की अवधि के दौरान बहुत सारे रगारंग कार्यक्रमों एवं अन्य गतिविधियों में भाग लिया। वर्ष 2014–15 के राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार के विजेताओं को श्रीमती सुमित्रा महाजन, माननीय अध्यक्ष लोक सभा ने 30 जुलाई, 2016 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली मं एक विशेष समारोह में सम्मानित किया तथा विभिन्न सेगमेंटों में कुल 74 पुरस्कार प्रदान किए। मंत्रालय ने 12 से 18 अगस्त, 2016 तक राजपथ लॉन में स्वतंत्रता दिवस समारोह के उपलक्ष में "भारतपर्व" समारोह का आयोजन किया। पर्यटन मंत्रालय ने 1 और 2 सितम्बर, 2016 को खजुराहो में पर्यटन पर ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी की। 27 सितम्बर, 2016 को विश्व पर्यटन दिवस का आयोजन किया गया जिसे पूर्वोत्तर में भी पूरे जोश और उत्साह के साथ मनाया गया।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु मंत्रालय राजभाषा विभाग के अनुदेशों का पालन कर रहा है। डॉ. महेश शर्मा, पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने दिनांक 15 अप्रैल 2016 को होटल ताज लैंड्स एंड, मुंबई में पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय हिंदी को महत्व दे रहा है और मंत्रालय से संबंधित सरकारी कामकाज का एक बड़ा हिस्सा हिंदी में किया जा रहा है। मंत्रालय की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अप्रैल–जून तिमाही की बैठक दिनांक 29 जून, 2016 को आयोजित की गई थी जिसमें मंत्रालय में हिंदी किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की तथा हिंदी कार्यों व संबंधित निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की आवश्यकता पर बल दिया गया। जुलाई से सितम्बर, 2016 की तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 07 अक्तूबर, 2016 को सम्पन्न हुई।

मंत्रालय के अधिकतर अधिकारी तथा कर्मचारी इस पत्रिका में नियमित रूप से अपनी रोचक रचनाएं भेज कर सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि हमारे मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों में प्रतिभा की कमी नहीं है। लेकिन अभी भी कुछ कार्मिक जो वास्तव में प्रतिभा के धनी हैं संभवतः कार्य की अधिकता के कारण अपना योगदान नहीं दें पा रहे हैं ऐसे सभी कार्मिकों से मैं अनुरोध करता हूं कि वे भी कुछ समय निकाल कर पत्रिका में अपना अमूल्य योगदान दें। इसके साथ अपनी प्रतिक्रिया एवं सुधार के लिए अपने सुझाव अवश्य दें।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी के निरंतर सहयोग से यह पत्रिका और अधिक ज्ञानवर्धक, रोचक एवं समय–संगत सामग्री तथा सूचना प्रदान कर पाठकों को भारत के पर्यटनसे संबंधित विभिन्न पहलुओं एवं पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ, स्वच्छ एवं स्वस्थ सोच का संचार कर सकेगी। आपके रोचक, सामयिक एवं उत्कृष्ट विचारों तथा पर्यटन संबंधी सूचना एवं लेखों का हम सदा स्वागत करते हैं।

राम कर्ण

(राम कर्ण)

भारत पर्व की कुछ झलकियां

रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर, पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा तथा सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर 12 अगस्त, 2016 को नई दिल्ली के इंडिया गेट पर 12 से 18 अगस्त तक स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में भारत सरकार द्वारा आयोजित 'भारत पर्व' का गुब्बारा उड़ाकर उद्घाटन करते हुए।

केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर, शहरी विकास, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन एवं सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री एम.वेंकैया नायडू, पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा 12 अगस्त, 2016 को नई दिल्ली के इंडिया गेट पर 12 से 18 अगस्त तक स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में भारत सरकार द्वारा आयोजित 'भारत पर्व' उद्घाटन समारोह में।

दिल्ली के निकट एक सुन्दर पयर्टन स्थल

लैंसडाउन

– राजेन्द्र सिंह मनराल

उत्तराखण्ड राज्य (भारत) के पौड़ी गढ़वाल जिले में एक छावनी शहर स्थित, लैंसडाउन बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 1706 मीटर है। यहां की प्राकृतिक छटा सम्मोहित करने वाली है। यहां का मौसम पूरे साल सुहावना बना रहता है। हर तरफ फैली हरियाली आपको एक अलग दुनिया का एहसास कराती है। दरअसल, इस जगह को अंग्रेजों ने पहाड़ों को काटकर बसाया था। खास बात यह है कि दिल्ली से यह हिल स्टेशन काफी नजदीक है। आप 8–10 घंटे में लैंसडाउन पहुंच सकते हैं। अगर आप बाइक से लैंसडाउन जाने की प्लानिंग कर रहे हैं तो आनंद विहार के रास्ते दिल्ली से उत्तर प्रदेश में एंट्री करने के बाद मेरठ, बिजनौर और कोटद्वार होते हुए लैंसडाउन पहुंच सकते हैं।

गढ़वाल राइफल्स का गढ़

खूबसूरत हिल स्टेशन लैंसडाउन को अंग्रेजों ने वर्ष 1887 में बसाया था। उस समय के वायसराय ऑफ इंडिया लॉर्ड लैंसडाउन के नाम पर ही इसका नाम रखा गया। वैसे, इसका वास्तविक नाम कालूडांडा है। यह पूरा क्षेत्र सेना के अधीन है और गढ़वाल राइफल्स का गढ़ भी है। आप यहां गढ़वाल राइफल्स वॉर मेमोरियल और रेजिमेंट म्यूजियम देख सकते हैं। यहां गढ़वाल राइफल्स से जुड़ी चीजों की झलक पा सकते हैं। म्यूजियम शाम के 5 बजे तक खुला रहता है। इसके करीब ही परेड ग्राउंड है, जिसे आम टूरिस्ट बाहर से ही देख सकते हैं। वैसे, यह स्थान स्वतंत्रता आंदोलन की कई गतिविधियों का गवाह भी रह चुका है।

अतुल्य उत्तराखण्ड – लैंसडाउन / Incredible Uttarakhand Lansdowne

पर्यटन स्थल

भुल्लाताल झील

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस इलाके में देखने लायक काफी कुछ है। प्राकृतिक छटा का आनंद लेने के लिए टिप इन टॉप जाया जा सकता है। यहां से बर्फीली चोटियों का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। दूर–दूर तर फैले पर्वत और उनके बीच छोटे–छोटे कई गांव आसानी से देखे जा सकते हैं। इनके पीछे से उगते सूरज का नजारा अद्भुत प्रतीत होता है। साफ मौसम में तो बर्फ से ढके पहाड़ों की लम्बी श्रृंखला दिखती हैं। पास में ही 100 साल से ज्यादा पुराना सेंट मैरी का चर्च भी हैं। यहां की भुल्ला ताल बहुत प्रसिद्ध है। यह एक छोटी–सी झील है जहाँ नौकायन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। शाम को सूर्यास्त का खूबसूरत नजारा संतोषी माता मंदिर से दिखता हैं। यह मंदिर लैंसडाउन की ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। वैसे, यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर ताड़केश्वर मंदिर भी है। भगवान शिव का यह प्राचीन मंदिर पहाड़ पर 2092 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसे सिद्ध पीठ भी माना जाता है। पूरा मंदिर ताड़ और देवदार के वृक्षों से घिरा है। यह पूरा इलाका खूबसूरत होने के साथ–साथ शांत भी है। सैलानी यहां पहाड़ पर ट्रैकिंग करने, बाइकिंग, साईक्लिंग जैसे साहसी खेलों के लिये भी आते हैं।

गढ़वाल मंडल विकास निगम का गैस्ट हाउस

ताड़केश्वर मंदिर

बर्फबारी के दौरान सेंट मैरिज गिरिजाघर

संतोषी माता मंदिर

कैसे पहुंचें

भारत की राजधानी दिल्ली से लैंसडाउन करीब 270 किमी की दूरी पर है। यहाँ विभिन्न मार्गों से पहुँचा जा सकता है।

- **सड़क मार्गः** लैंसडाउन कोटद्वार होकर कई शहरों से जुड़ा हुआ है। प्राइवेट और सरकारी बसें कोटद्वार तक जाती हैं, जहां से लैंसडाउन करीब 40 किमी. की दूरी पर है।
- **रेलः** नजदीकी रेलवे स्टेशन कोटद्वार है। वहां से फिर टैक्सी आदि से लैंसडाउन पहुंचा जा सकता है।
- **हवाई अड्डाः** यहां का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा जौलीग्रॉट एयरपोर्ट है, जो लैंसडाउन से करीब 152 किमी. दूर है।
- लैंस डाउन जाने के लिए सबसे अच्छा समय मार्च से लेकर नवम्बर तक है। इन दिनों यहां का वातावरण बहुत मधुर और सुहावना बन जाता है जो इस स्थान का आनन्द लेने का सही समय है।

पर्यटन मंत्रालय
भारत सरकार

प्राकृतिक छटा तथा खनिज सम्पदा से परिपूर्ण पर्यटन

आओ चलें झारखण्ड

– कप्तान प्राण रंजन प्रसाद

यदि झारखण्ड राज्य को जंगल एवं खनिजों का राज्य कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। सम्पूर्ण राज्य हरियाली एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। इस इलाके को छोटानागपुर के नाम से भी जाना जाता है। देवघर स्थित गौरवशाली विश्व प्रसिद्ध शिव मंदिर, हजारीबाग का संरक्षित वन्य क्षेत्र "इसको" के क्षेत्र में पाषाण युग के भित्तिचित्र और प्रस्तर कलाकृतियाँ, टाटानगर का जुबली पार्क एवं डिमना झील, बेतला का संरक्षित राष्ट्रीय उद्यान, डालमा का वन्यप्राणी संरक्षित क्षेत्र, पारसनाथ का जैन मंदिर, पवन पुत्र भगवान हनुमान का तथाकथित जन्मस्थान अन्जन धाम, टान्गीनाथ का प्रसिद्ध मंदिर एवं त्रिशूल, प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण मनमोहक स्थल नवरतनगढ़ एवं नेतरहाट, राजरप्पा का प्रसिद्ध प्रचीन सूर्यमंदिर, रांची में पहाड़ी पर सिद्ध शिव मंदिर सहित जगन्नाथ मंदिर, टैगोर हिल तथा जैविक उद्यान, रांची के आस–पास हुन्डरु, होरहाप, जोन्हा एवं दशम जलप्रपात।

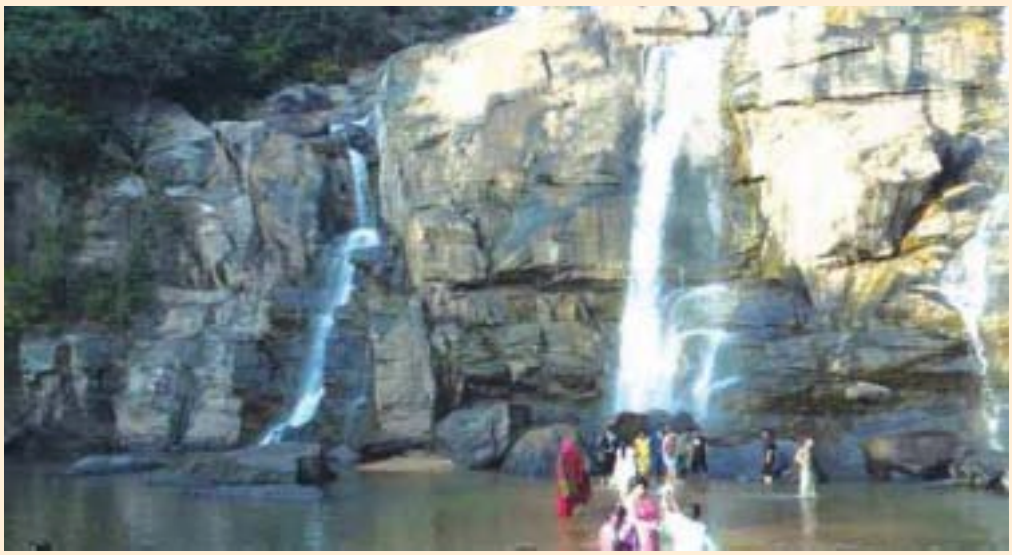

विश्व प्रसिद्ध इस्पात नगर – टाटानगर (जमशेदपुर), कोयला, लौह, अ□ख, अल्मुनियम तथा यूरेनियम जैसे खनिजों का प्रचुर भंडार, राष्ट्रीय महत्व के कई पुरातात्विक स्थल, खदानों और खनन के बारे में शिक्षा देने वाला, धनबाद में देश का एकमात्र प्रतिष्ठित संस्थान इंडियन स्कूल आफ माइन्स (अब आईआईटी) इत्यादि इस राज्य को पर्यटन की दृष्टि से बहुआयामी बनाते हैं। राज्य के किसी भी जिले में आइए और घूमिए–फिरिए और आनन्द लीजिए यानि पर्यटन की अपार संभावनाएं। इनमे से कुछ स्थानों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

सबसे पहले बात करते हैं, झारखण्ड की राजधानी रांची की, जो 15 नवम्बर 2000 में इस राज्य के गठन से पहले बिहार राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी भी हुआ करती थी। शहर के मध्य में झील एवं पहाड़ी तथा शिव मंदिर इसके मुख्य जमीनी निशान हैं। सावन के महीने में तथा शिवरात्रि में इस मंदिर में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ होती है। हटिया क्षेत्र में प्रचीन जगन्नाथ मंदिर जहाँ हर वर्ष रथ यात्रा के पर्व की धूम रहती है। पुरी की रथयात्रा की तरह ही यहाँ भी उसी समय रथयात्रा निकाली जाती है, जो मुख्य मंदिर तथा उससे कुछ दूरी पर स्थित

मौसिबाड़ी मंदिर के बीच पूरी की जाती है। इस समय इसके आस–पास अच्छे बड़े मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें अनूठी क्षेत्रीय कुटीर वस्तुओं की जोरदार खरीद बिक्री होती है। इनमें हथकरघे से बने चादर एवं अन्य कपड़े, धातु एवं बांस से बनी वस्तुएं, जैसे पैला, तीर–धनुष, ढोल, पारंपरिक जेवर इत्यादि बेचे और ख़रीदे जाते हैं। मोराबादी क्षेत्र में स्थित टैगोर हिल की भी ऐतिहासिक पहचान कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर से जुड़ी हुई है। शहर के बाहरी हिस्से मे जैविक उद्यान एवं आस–पास के कई मनमोहक जलप्रपात भी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र हैं। शहर के इलाके मे कांके डैम भी लोगों के □मण हेतु अच्छी जगहें हैं।

जमशेदपुर (टाटानगर) – इसे इस्पातनगर के रूप मे भी जाना जाता है। जमशेदजी नुस्सरवानजी टाटा द्वारा स्थापित इस औद्योगिक नगर की भारतवर्ष में विशेष पहचान है। यहाँ के डिमना झील में वाटर स्पोर्ट्स की व्यवस्था है। सूर्यास्त के बाद जुबली पार्क में मनोरम रोशनी एवं फव्वारे का दृश्य अदभुत आनंद देता है। रांची और जमशेदपुर के सड़क रास्ते पर मशहूर देओरी मंदिर और सूर्य मंदिर स्थित हैं, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र हैं।

देवघर – द्वादश ज्योतिर्लिंग में एक ज्योतिर्लिंग का पुराणकालीन मन्दिर है जो भारतवर्ष के राज्य झारखंड में सुप्रसिद्ध देवघर नामक स्थान पर अवस्थित है। पवित्र तीर्थ होने के कारण लोग इसे वैद्यनाथ धाम भी कहते हैं। जहाँ पर यह मन्दिर स्थित है उस स्थान को "देवघर" अर्थात देवताओं का घर कहते हैं। बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग स्थित होने के कारण इस स्थान को देवघर नाम मिला है। यह ज्योतिर्लिंग एक सिद्धपीठ है। कहा जाता है कि यहाँ पर आने वालों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस कारण इस लिंग को "कामना लिंग" भी कहा जाता हैं। यहाँ सावन के महीने मे जलाभिषेक करने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ की छटा देखते ही बनती है। इस समय श्रद्धालु करीब सौ मील की दूरी पर सुल्तानगंज (बिहार राज्य) से कांवड़ में गंगाजल लेकर इस मंदिर मे आकर पवित्र शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। बिहार तथा झारखण्ड सरकारों द्वारा इस आयोजन में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु पूरे रास्ते पर और मंदिर परिसर में हर प्रकार की विशेष व्यवस्था की जाती है।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर, देवघर

नेतरहाट– 'छोटा नागपुर की रानी' के नाम से प्रसिद्ध नेतरहाट रांची से करीब 156 किलोमीटर दूर, समुद्रतल से 3622 फीट की ऊंचाई पर स्थित पर एक पहाड़ी पर्यटन–स्थल है। प्रकृति ने इसे बहुत ही खूबसूरती से संवारा है। गर्मी के मौसम में पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। आम तौर पर साल भर यहां ठंड का मौसम बना रहता है। यहाँ से सूर्योदय एवं सूर्यास्त के मनोहारी दृश्य का आनंद लिया जा सकता है। यह नजारा नेतरहाट से करीब 10 किमी की दूरी पर आकर्षक ढंग से देखा जा सकता है। इसके अलावा यहाँ घाघरी एवं लोअर घाघरी नामक दो छोटे–छोटे प्रसिद्ध जलप्रपात भी हैं।

नेतरहाट में सूर्यास्त का दृश्य

नेतरहाट विद्यालय अपने शिक्षा के उच्च स्तर के लिए काफी मशहूर है। यहाँ के विद्यार्थियों ने विश्वभर में हर क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है। घने जंगल के बीच बसे इस जगह की प्राकृतिक सुन्दरता देखते ही बनती है। पर्यटक यहां आने पर प्रसिद्ध नेतरहाट विद्यालय, लोध झरना, उपरी घाघरी झरना तथा निचली घाघरी झरना देखना नही भूलते हैं। झारखंड का दूसरा सबसे बड़ा वाटर–फाल बरहा घाघ (466 फुट) नेतरहाट के पास ही है। नेतरहाट में वन विभाग की अनुमति से फिल्मों की शूटिंग भी की जाती है। यहाँ कुछ भागों में बाघों की संख्या बहुत अधिक है। नेतरहाट के विकास के साथ यहाँ पर्यटक, शिकारी काफी आकर्षित हो रहे हैं। नेतरहाट एक बहुत महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। यहां पर्यटकों के ठहरने की अच्छी व्यवस्था है

बेतला राष्ट्रीय उद्‌द्यान : पलामू जिले में स्थित यह देश का बाघ संरक्षित क्षेत्र है। यहाँ हाथी, सॉभर, चीता, हिरण, भालू इत्यादि भी पाए जाते हैं। इस इलाके मे 16वीं शताब्दी का पलामू किला भी मौजूद है। यह 1974 में बाघ परियोजना के अंतर्गत गठित प्रथम नौ बाघ आरक्षों (संरक्षित वनक्षेत्र) में से एक है। पलामू व्याघ्र आरक्ष 1026 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें पलामू वन्यजीव अभयारण्य का क्षेत्रफल 980 वर्ग किलोमीटर है। अभयारण्य के कोर क्षेत्र 226 वर्ग किलोमीटर को बेतला राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया है।

पलामू ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सन 1857 की क्रांति में पलामू ने अहम भूमिका निभाई थी। चेर राजाओं द्वारा निर्मित दो किलों के खंडहर पलामू व्याघ्र आरक्ष में विद्यमान हैं। पलामू में कई प्रकार के वन पाए जाते हैं, जैसे शुष्क मिश्रित वन, साल के वन और बांस के झुरमुट, जिनमें सैकड़ों वन्य जीव रहते हैं। पलामू के वन तीन नदियों के जलग्रहण क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान करते हैं। ये नदियां हैं – उत्तर कोयल, औरंगा और बूढ़ा। आर्थिक दृष्टि से 200 से अधिक गांव पलामू व्याघ्र आरक्ष क्षेत्र पर ही निर्भर हैं। इन गांवों की मुख्य आबादी जनजातीय है। इन गांवों में लगभग एक लाख लोग रहते हैं। पलामू के खूबसूरत वन, घाटियां और पहाड़ियां तथा वहां के शानदार जीव–जंतु बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

मैथन बांध – धनबाद से 52 किमी दूर मैथन बांध दामोदर घाटी निगम का सबसे बड़ा जलाशय है। इसके आस–पास का सौंदर्य पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बराकर नदी के ऊपर बने इस बाँध का निर्माण बाढ़ को रोकने के लिए किया गया था।

मैथन बांध

यहां बराकर के साथ ही अजय नदी भी आकर मिलती है। बाँध के नीचे एक पावर स्टेशन का भी निर्माण किया गया है, जो दक्षिण पूर्व एशिया में अपने आप में आधुनिकतम तकनीक का एक उदाहरण माना जाता है। इसके निर्माण और परिकल्पना में तत्कालीन प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू का विशेष योगदान माना जाता है। इसके पास ही माँ कल्याणेश्वरी का एक अति प्राचीन मंदिर है।

लगभग 65 वर्ग कि.मी. में फैले इस बाँध के पास एक झील भी है जहाँ नौकायन और आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त एक मृग तथा पक्षी विहार भी है, जहाँ पर्यटक जंगल के प्राकृतिक सौन्दर्य तथा विभिन्न किस्म के पशु–पक्षियों को देख सकते है। 15,712 फीट लंबे और 165 फीट ऊँचे इस बाँध से 60,000 किलोवाट बिजली का उत्पादन होता है। वैसे आजकल यह इलाका नक्सली प्रभावित है। इसलिए जाने से पहले थोड़ा सावधान रहने की जरूरत है।

यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए दोनों नदियों के बीच एक गैस्ट हाउस बनाया गया है जहां से दोनों नदियों के जलप्रवाह के साथ ही दूर से बांध का भी नजारा लिया जा सकता है। बराकर और कुमारधुबी यहाँ के निकटतम रेलवे–स्टेशन हैं, जो यहाँ से आठ कि.मी. की दूरी पर है। मैथन के लिए धनबाद, आसनसोल तथा बराकर से हर समय बस सेवा उपलब्ध है।

डालमा वन्य प्राणी क्षेत्र–जमशेदपुर से करीब 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस क्षेत्र मे अनेकों दुर्लभ प्रजातियों के वन्यप्राणी पाए जाते हैं। यहाँ एक मनोरम झील भी है जो वन्य प्राणियों का मुख्य जलस्रोत है।

सारंडा वन क्षेत्र – स्थानीय 'हो–भाषा' मे सारंडा का अर्थ 700 पहाड़ी वाला क्षेत्र होता है। यह काफी बड़ा वनक्षेत्र है और इस वन में जंगली हाथियों की बड़ी तादाद मौजूद है। यहाँ उड़ने वाली गिलहरी भी काफी संख्या मे मौजूद हैं। यहाँ बांस के घने जंगल मौजूद हैं। इस क्षेत्र मे थलकोबाद स्थान एवं किरीबुरू स्थान पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केंद्र है। किरीबुरू से सूर्योदय एवं सूर्यास्त के मनोरम दृश्य का आनंद मिलता है।

पारसनाथ पहाड़ी क्षेत्र – गिरिडीह जिले में पड़ने वाला यह पहाड़ करीब 4,480 फीट की ऊंचाई के साथ इस राज्य का सबसे ऊँचा स्थान है। जैन धर्मावलम्बियों के लिए यहाँ स्थित पारसनाथ मंदिर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अन्जन धाम – पौराणिक कथाओं के अनुसार गुमला जिले के इस स्थान को भगवान हनुमान की जन्मस्थली माना जाता है। इस स्थान का नामकरण हनुमान की माता अंजनी के नाम पर पड़ा है। यह काफी प्रसिद्ध पूजास्थल है।

राजरप्पा – यहाँ का प्रचीन सूर्यमंदिर काफी जागृत एवं प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिदिन सैंकड़ो श्रद्धालु पूजा–अर्चना करने आते हैं। यहाँ बकरे की बलि देने की प्रथा आज भी बरक़रार है। राजरप्पा में स्थित यह मंदिर मां छिन्नमस्तिका मंदिर के नाम से विख्यात है जो रामगढ़ छावनी से 28 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हिंदू तीर्थ यात्रा के लिए यह स्थान एक लोकप्रिय गंतव्य स्थल है। इस मंदिर को एक शक्ति पीठ के नाम से भी जाना जाता है।

मंदिर की पुरानी वास्तुकला, इस मंदिर की तांत्रिक महत्वता को दर्शाती है। इस मंदिर का मुख्य आकर्षण माता छिन्नमस्तिका का बिना सिर वाला स्टेच्यु है, जो कि कामदेव और रति की प्रतिमाओं पर खड़ा है और बिछे हुए कमल पर विराजमान है। यह मंदिर, दामोदर नदी और भैरवी नदी के संगम के पास स्थित है जिसे भगवान शंकर और माता पार्वती का मिलन स्थल माना जाता है। कई समारोह और विवाह इस मंदिर में आयोजित किए जाते है।

राजरप्पा मंदिर

बेनीसागर पुरातात्विक स्थल – यह झारखण्ड राज्य के दक्षिणी हिस्से मे ओड़िसा राज्य से सटे मयुरभंज इलाके के मयुर वंश के राजा बेनी का स्थान है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा संरक्षित स्थल है। यहाँ एक बड़े से तालाब के साथ ही कई पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसका सौन्दर्यीकरण किया जा रहा है।

जामी मस्जिद, हदफ़ – हदफ़ राजमहल का हिस्सा है। साहेबगंज जिले में यह मस्जिद सन 1592 में राजा मान सिंह द्वारा 250X210 फीट क्षेत्र में बनाई गई थी। यह भव्य मस्जिद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा संरक्षित स्मारक है जो एक आकर्षक वास्तुकला का नमूना है।

जामी मस्जिद, साहेबगंज

अन्य मशहूर स्थल – उपरोक्त स्थानों के अलावा भी राज्य के विभिन्न जगहों पर अनेकों स्मारक एवं आकर्षक स्थल हैं। जैसे रांची के दक्षिण मे करीब 70 कि.मी. की दूरी पर घने जंगलों के मध्य मनोरम हिरनी जलप्रपात इसको भित्तिचित्र, इतखोरी, नवरतनगढ़, बोकारो स्टील सिटी इत्यादि यहाँ के संग्रहालयों की भी विशेष पहचान है। सभी जगहों पर पर्यटन विभाग, वन्य विभाग एवं अन्य सुविधा देय संस्थाओं द्वारा रात्रि विश्राम की सुविधा उपलब्ध हैं।

हुन्डरू जल प्रपात

झारखण्ड प्रदेश बृहत् रांची को जल्द ही स्मार्ट सिटी का स्वरुप देने जा रहा है जिससे कई विशेषताएं उधृत होंगी। राज्य मे पहली बार फिल्म उद्योग को बढ़ावा देने हेतु पतरातू मे फिल्म सिटी की परिकल्पना को अंजाम दिया जा रहा है। झारखण्ड जल्द ही अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के क्षेत्र में अपना स्थान सुनिश्चित करने की ओर अग्रसर एवं कटिबद्ध है। इस कदम मे कई परियोजना विचाराधीन हैं।

मुख्य सुरक्षा अधिकारी (से. नि.),
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
जनपथ, नई दिल्ली 110011

आओ चलें

नवाबों के शहर लखनऊ

– राम बाबू

अदब और तहज़ीब के शहर में जन्म लेना और बड़ा होना आपके व्यक्तित्व पर ख़ासा असर डालता है। एक आम मध्यम वर्गीय परिवार की बात करें तो बोलना सीखने के साथ ही यहाँ एक अदबी लहज़ा खुद–ब–खुद आ जाता है। आपकी बोली में यहाँ की भाषा उन कुछ चीज़ों की लिस्ट में सबसे ऊपर है जो हमें हमारे शहर का दीवाना बनाती हैं और उस पर फ़ख्र करना भी सिखाती हैं। हालाँकि, आज वो पहले जैसी बात नहीं रही अब यहाँ की भाषा में भी अंग्रेजी और अंग्रेजियत के पीछे दौड़ती आज की युवा पीढ़ी अपनी मातृभाषा, राष्ट्र भाषा, जन–जन की भाषा हिंदी बोलने में भी शर्म महसूस करती है, तो अदब और तहज़ीब की बात कौन करे। बहरहाल अभी भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो आज भी हमारी इस विरासत को सम्भाले हुए हैं, जिनकी बदौलत दुनिया आज भी अदब और आदाब के इस शहर की कायल है। वो लोग जो एक हाथ से बीते कल की डोर थामे हुए हैं और दूसरे हाथ से वर्तमान की। देखा जाये तो लक्ष्मण की नगरी और नवाबों के इस शहर लखनऊ में कोई एक भाषा नहीं बोली जाती यहां अवधी, उर्दू, अंग्रेजी और हिंदी का कुछ मिला–जुला सा रूप है और जब ये चारों भाषाएं आपस में घुल–मिल कर एक हो जाएँ तो क्या जादू करती हैं, इसका असर आप सिर्फ़ लखनऊ आ कर ही महसूस कर सकते हैं।

लखनऊ की कुछ पुरानी इमारतें रमणीय हैं, जिसमें हुसैनाबाद स्थित छोटा इमामबाड़ा बेहद ख़ास है। सन 1838 में अवध के तीसरे नवाब मुहम्मद अली शाह द्वारा बनवाए गये इस इमामबाड़े की ख़ासियत यह है कि इस पूरी इमारत की बाहरी दीवार पर अरबी में ख़त्ताती और तुगराकरी उकारी गई है, जो अपने आप में बेजोड़ है तथा दूर से देखने में यह बड़ा ही कलात्मक प्रतीत होती है।

रफ़्ता रफ़्ता अर्श पे पहुंची है शान–ए–लखनऊ
मिलती–जुलती है फ़रिश्तों से ज़बान–ए–लखनऊ
– शफ़ीक़ लखनवी

लखनऊ को नवाबों की नगरी के नाम से जाना जाता है, जो उत्तर प्रदेश की राजधानी है तथा गोमती नदी के तट पर स्थित है। इस शहर का इतिहास सूर्यवंशी राजवंश के काल का है। लखनऊ की स्थापना नवाब आसफ–उद्–दौला द्वारा की गई थी। उन्होंने इसे अवध के नवाबों की राजधानी के रूप में पेश किया था। वास्तव में, नवाबों ने इस शहर को एक विनम्र संस्कृति के अलावा शानदार पाक शैली भी प्रदान की थी, जो वर्तमान समय में पूरी दुनिया में विख्यात है।

ऐतिहासिक रूप से अवध प्रांत के नाम विख्यात लखनऊ हमेशा से ही बहुसांस्कृतिक सभ्यता का शहर रहा है। शाही तहजीब, खूबसूरत बागों, शायरी, संगीत और शहर के पारसी जदा नवाबों की शह में सुसज्जित बावर्ची खाने, दक्षिण एशियाई संस्कृति और इतिहास भारतीयों में सुपरिचित रहे हैं। आज भी लखनऊ नवाबों के शहर के रूप में विख्यात है। इसे पूरब का स्वर्णिम शहर, शीराज–ए–हिन्द और भारत के कुस्तुनतूनिया के नाम से भी जाना जाता है। गंगा के बृहत मैदानी मध्य हृदय में अवस्थित लखनऊ शहर ग्रामीण, कस्बो और गांवों जैसे – उद्यान

कस्बा मलिहाबाद, ऐतिहासिक नगर काकोरी, मोहनलालगंज, गोसाईगंज, चिनहट, इटौंजा आदि से घिरा है। इसके पूर्व में बाराबंकी, पश्चिम में उन्नाव, दक्षिण में रायबरेली और उत्तर में सीतापुर तथा हरदोई जिले हैं। इसकी मुख्य भौगोलिक विशेषता यह है कि गोमती नदी शहर के बीचोबीच से होकर गुजरती है तथा लखनऊ को दो भागों में विभक्त करती है।

लखनऊ की खासियत

इस शहर में अभूतपूर्व विकास और आधुनिकीकरण के बावजूद, यहां का प्राचीन आकर्षण और महत्व बना हुआ है। अगर आप सड़क पर भी चलते हुए किसी से बात करेंगे तो लखनवी तहज़ीब की झलक साफ नजर आएगी। हालांकि, बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए यहां की हवेलियों (मकानों) को अपार्टमेंट में बदल दिया गया है। लेकिन लोगों में मोहब्बत और अपनापन अभी भी बरकरार है।

नवाबों के युग में, इस शहर में उम्दा तहज़ीब व तमीज़ के साथ – साथ मुंह में पानी ला देने वाले पकवानों व व्यंजनों को भी बढ़ावा दिया गया है। उस अवधि में साहित्य, संगीत, नृत्य और कला व शिल्प भी चरम पर था। वास्तव में, लखनऊ ऐसा शहर है जहां भारत की सांस्कृतिक धरोहर कहे जाने वाले कत्थक जैसे नृत्य का जन्म हुआ है। समय के साथ साथ, लखनऊ पर मुगल शासकों के बाद अंग्रेजों का बोलबाला हो गया और उन्होंने यहां आकर यहां की इमारतों और स्मारकों में शाही शासन की झलक देखी और कब्ज़ा कर लिया।

"पहले आप, पहले आप" की संस्कृति वाले लखनऊ में इधर कुछ वर्षों से भूमण्डलीकरण का ऐसा जादू चला कि लोग एकांगी होते चले जा रहे हैं और अपने और पराये की समझ अब बच्चो को जन्म से प्राप्त होने लगी है। ऐसे में अब लखनऊ में गंगा – जमुनी तहज़ीब को संजो के रख पाना मुश्किल होता जा रहा है। फिर भी, यहां के लोग आज भी रिश्तों में अपनापन समेटे हुए हैं।

लखनऊ उर्दू, अरबी और हिन्दी भाषी प्रेमियों की जन्मभूमि है और भारतीय कविता और साहित्य में इस शहर का एक बड़ा योगदान रहा है। पूरे देश में इस शहर के सबसे उम्दा कारीगर मिलते हैं और यहां की चिकनकारी का काम पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, हर पुरूष और महिला के पहनावे में लखनऊ के चिकनकारी का कपड़ा जरूर मिलता है।

लखनऊ का कोई भी विवरण यहां के शानदार व्यंजनों के गुणों का बखान किए बिना पूरे हो ही नहीं सकते। हालांकि, यहां आकर आपको प्रसिद्ध मुगलई व्यंजनों का स्वाद जरूर चखना चाहिए, जिनमें टिक्का और कबाब सबसे प्रमुख और खास हैं।

लखनऊ और उसके आसपास के क्षेत्रों में स्थित पर्यटक स्थल

लखनऊ को देखने और यहां घूमने–फिरने के लिए बहुत कुछ खास है। इस शहर मे सबसे खास पर्यटन स्थल बड़ा इमामबाड़ा और भूल–भूलैया हैं, जो एक बड़ा सा प्रभावशाली कब्र परिसर है। जो 1783 में बनाई गई एक दिलचस्प भूल–भलैया है। इस स्मारक के लिए लिया गया टिकट छोटा इमामबाड़ा, हुसैनाबाद, घंटाघर और पिक्चर गैलरी के लिए भी वैध है। इसके अलावा, लखनऊ में रेजीडेंसी के खंडहर और मेमोरियल म्यूजियम में भी जाएं, जहां 1857 में आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गई थी। यहां का खूनी इतिहास अमर है, यहां का रेजिडेंसियल इलाका गर्मी, धूल और शहर के शोर–शराबे से दूर एक सुंदर स्वर्ग के समान प्रतीत होता है। लखनऊ में काफी हरियाली है। लखनऊ का चिडियाघर, बॉटनिकल गार्डन और बुद्धा पार्क, कुकरैल फॉरेस्ट रिजर्व और सिकंदरा

बाग जैसे प्राकृतिक छटा वाले स्थल लखनऊ को खास और जरूरत से ज्यादा सुंदर बनाते हैं। लखनऊ में कई प्रभावशाली स्मारक और इमारतें हैं जो अवध की शानदार वास्तुकला का प्रमाण हैं। यहां का कैसरबाग, तालुकेदार हॉल, शाह नज़फ इमामबाड़ा, बेगम हजरत महल पार्क, रूमी दरवाजा और द गेटवे ऑफ लखनऊ आदि भारत के सबसे प्रभावशाली वास्तुकला संरचनाओं में से एक हैं। यहां उल्लेखनीय है कि जामा मस्जिद को सन् 1423 ई. में सुल्तान अहमद शाह ने बनवाया था। यह पूरी मस्जिद पीले बलुआ पत्थर से बनी हुई है, जो आकर्षक डिजायन और वास्तुकला की जटिल शैली के लिए विख्यात है, इसे भारत की सबसे खूबसूरत मस्जिदों में से एक माना जाता है। इसके अलावा, लखनऊ में कई अन्य आकर्षण भी □मण करने के लायक हैं जो हमेशा से पर्यटको को अपनी ओर आकर्षिक करते हैं।

दर्शनीय स्थल

लखनऊ के वास्तुशिल्प के महत्व के स्मारकों में आसफी इमामबाड़ा (जो बड़ा इमामबाड़ा के नाम से विख्यात है) छोटा इमामबाड़ा, रेसीडेन्सी और शाहनज़फ हैं। प्रसिद्ध भूल–भुलैया आसफी इमामबाड़ा परिसर का ही हिस्सा है। कुछ अन्य दर्शनीय स्थलों में पिक्चर–गैलरी, छत्तर–मंजिल, राज्य–संग्रहालय, लखनऊ–चिडियाघर, शहीद–स्मारक, अंबेडकर–स्मारक, नक्षत्रशाला, बारादरी और रामकृष्ण मठ हैं। अंग्रेजों द्वारा निर्मित वास्तुशिल्पों में विधान सभा, घंटाघर और विशिष्ट गुंबदों तथा मेहराबों वाला चारबाग का रेलवे स्टेशन शामिल है।

चारबाग का रेलवे स्टेशन

भारत के कुछ प्राचीन शिक्षा केन्द्र– लखनऊ क्रिश्चियन पीजी कालेज, ला–माटेनियर कालेज लखनऊ, संत फ्रैन्सिस कॉलेज (1855) लेरंटों कान्वेंट कालेज लखनऊ और केल्विन तालुकेदार कॉलेज आदि भी लखनऊ में स्थित हैं। यहां का अमीरउद्दौला इस्लामिया कॉलेज लगभग 100 वर्ष पुराना है।

लखनऊ में अनेक सुसज्जित पार्क हैं जहां शाम के वक्त, छुट्टियों और सप्ताह के अंत में काफी संख्या में लोग पर्यटन का लुत्फ उठाते हैं। बड़े पार्को में गोमतीनगर का जनेश्वर मिश्र पार्क, अंबेडकर पार्क और लोहिया पार्क, इंदिरानगर में स्वर्णजयंती पार्क और अरविन्दव पार्क, दिलकुशा पार्क, बेगम हजरतमहल पार्क, ग्लोबपार्क, मुखर्जी फुहार पार्क, हाथी पार्क, बुद्धा पार्क और नीबू पार्क हैं। गोमती नदी के किनारे सिकंदराबाग में राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान पार्क और भी दर्शनीय हैं। इस शहर में कुकरैल क्रोकोडाइल पार्क (घड़ियाल पुनर्वास केन्द्र और पिकनिक स्थल) नामक सुरक्षित वन भी हैं। अन्य प्रसिद्ध स्थलों में मूसा बाग, बनारसी बाग आदि हैं। लखनऊ के नजदीक अन्य प्राकृतिक आकर्षणों में आम्रपाली पार्क, कटरनिया घाट, दुधवा राष्ट्रीय पार्क, नबाबगंज पक्षी अभयारण्य आदि प्रमुख हैं।

विधान भवन

काउन्सिल हाउस (विधान भवन) के भव्य भवन की नींव 15 दिसम्बर, 1922 को तत्कालीन गवर्नर सर स्पेंसर हरकोर्ट बटलर द्वारा रखी गयी थी तथा 21 फरवरी, 1928 को इसका उद्घाटन हुआ था। इस भवन का निर्माण कलकत्ता की कम्पनी मेसर्स मार्टिन एण्ड कम्पनी द्वारा किया गया था। इसके मुख्य आर्कीटेक्ट सर स्विनोन जैकब तथा श्री हीरा सिंह थे। उस समय इसके निर्माण हेतु 21 लाख रूपया स्वीकार हुआ था। इस भवन की स्थापत्यकला यूरोपियन और अवधी निर्माण की मिश्रित शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह भवन अर्धचक्राकार रूप में मुख्य रूप से दो मंजिलों में मिर्जापुर (चुनार) के भूरे रंग के बलुआ पत्थरों से निर्मित है। अर्धचक्र के बीच में 'गोथिक' शैली

का गुम्बद है जिसके शीर्ष पर एक आकर्षक छतरी है। इस गुम्बद के चारों ओर सजावट के रूप में "रोमन" शैली में बड़े आकार की पत्थर की मूर्तियां बनी हुयी हैं। भवन के बाहरी भाग के पोर्टिको के ऊपर संगमरमर से प्रदेश का राज्य चिन्ह बना हुआ है।

भवन के अन्दर अनेक हाल एवं दीर्घायें हैं जो मुख्यतः आगरा और जयपुर के संगमरमर से बनी हैं। ऊपरी मंजिल तक जाने के लिए मुख्य द्वार के दाहिने एवं बायीं ओर अत्यन्त सुन्दर शैली में संगमरमर निर्मित गोलाकार सीढ़ियां बनी हुई हैं। इन सीढ़ियों की दीवारों पर विशिष्ट प्रकार की पेन्टिंग करायी गयी है।

गुम्बद के नीचे अष्टकोणीय चेम्बर अर्थात मुख्य हाल बना है। इसकी वास्तुकला अत्यन्त ही आकर्षक शैली में है। हाल की गुम्बदीय आकार की छत में जालियां तथा नृत्य करते हुए आठ मोरों की अत्यन्त सुन्दर आकृतियां उकेरी गई हैं। इसी चैम्बर में विधान सभा की बैठकें होती है।

यह भारत का सबसे ऊंचा (221 फिट) घंटाघर है। यह घंटाघर 1887 ई. में बनवाया गया था। इसे ब्रिटिश वास्तुकला के सबसे बेहतरीन नमूनों में माना जाता है। 221 फीट ऊंचे इस घंटाघर का निर्माण नवाब नसीरूद्दीन हैदर ने सर जार्ज कूपर के आगमन पर करवाया था। वे संयुक्त अवध प्रान्त के प्रथम लेफ्टिनेंट गवर्नर थे।

घंटाघर

भूल–भुलैया

सआदत अली का मकबरा

लखनऊ के इस प्रसिद्ध इमामबाड़े का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। नवाब आसफउद्दौला ने सन् 1784 ई0 में अकाल राहत परियोजना के अन्तर्गत इस इमामबाड़े का निर्माण करवाया था। यह विशाल गुम्बदनुमा हॉल 50 मीटर लंबा और 15 मीटर ऊंचा है। यहां एक अनोखी भूल–भुलैया है। इस इमामबाड़े में एक आसफी मस्जिद भी है, मस्जिद परिसर के आंगन में दो ऊंची मीनारें हैं।

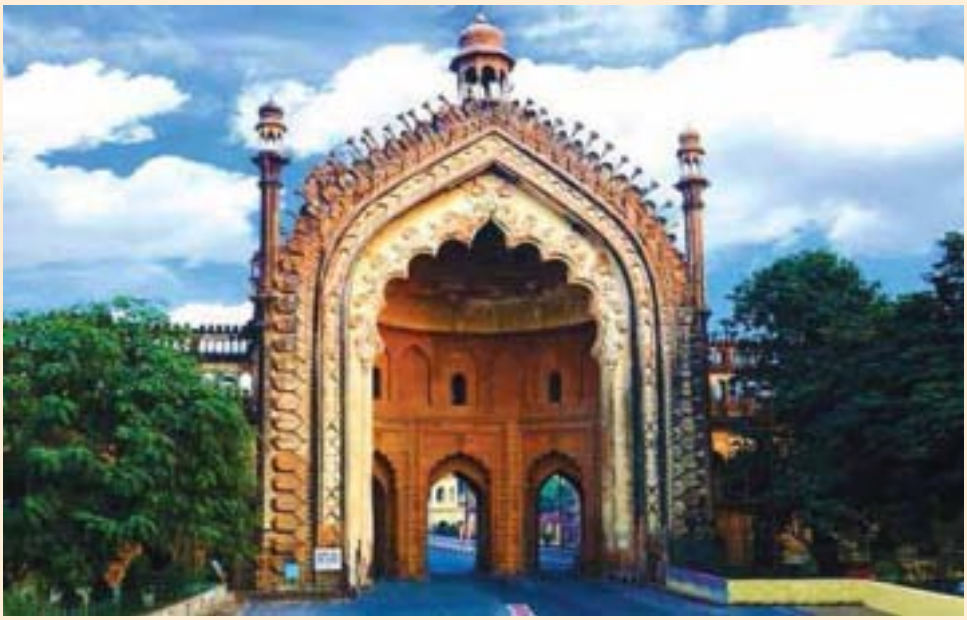

रूमी दरवाजा

बेगम हजरत महल पार्क के समीप सआदत अली खां और खुर्शीद जैदी का मकबरा है। यह मकबरा अवध वास्तुकला का शानदार उदाहरण है। मकबरे की शानदार छत और गुम्बद इसकी खासियत हैं।

रूमी दरवाजा : बड़ा इमामबाड़ा की तर्ज पर ही रूमी दरवाजे का निर्माण भी अकाल राहत प्रोजेक्ट के अन्तर्गत किया गया है। नवाब आसफउद्दौला ने यह दरवाजा सन् 1783 ई. में अकाल के दौरान बनवाया था ताकि लोगों को रोजगार मिल सके। अवध वास्तुकला के प्रतीक के रूप में इस दरवाजे को तुर्किश गेटवे कहा जाता है। रूमी दरवाजा कांस्टेनटिनोपल के दरवाजों के समान दिखाई देता है। यह इमारत 60 फीट ऊंची है।

हुसैनाबाद इमामबाड़ा : यह इमामबाड़ा मोहम्मद अली शाह की रचना है जिसका निर्माण सन् 1837 ई. में किया गया था। इसे छोटा इमामबाड़ा भी कहा जाता है। माना जाता है कि मोहम्मद अली शाह को यहीं दफनाया गया था। इस इमामबाड़े में मोहम्मद की बेटी और उसके पति का मकबरा भी बना हुआ है। मुख्य इमामबाड़े की चोटी पर सुनहरा गुम्बद है जिसे अली शाह और उसकी मां का मकबरा माना जाता है। मकबरे के विपरीत दिशा में सतखंड नामक अधूरा घंटाघर है जिस पर सन् 1840 ई० में अली शाह की मृत्यु के उपरान्त इसका निर्माण रोक दिया गया था। उस समय 67 मीटर ऊंचे इस घंटाघर की चार मंजिलें ही बनी थी। मोहर्रम के अवसर पर इस इमामबाड़े की आकर्षक सजावट की जाती है।

रेजिडेन्सी : लखनऊ रेजिडेन्सी के अवशेष ब्रिटिश शासन की स्पष्ट तस्वीर पेश करते हैं। सिपाही विद्रोह के समय यह रेजिडेंसी ईस्ट इंडिया कम्पनी के एजेन्ट का भवन था। यह ऐतिहासिक इमारत शहर के केन्द्र में स्थित हजरतगंज क्षेत्र के समीप है। यह रेजिडेन्सी अवध के नवाब सआदत अली खां द्वारा सन् 1800 ई. में बनवाई गई थी। यह रेजिडेंसी वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन एक राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक है। इस रेजिडेंसी का निर्माण लखनऊ के समकालीन नवाब आसफुद्दौला ने सन् 1780 ई0 में प्रारम्भ करवाया था जिसे बाद में नवाब सआदत अली द्वारा सन् 1800 में पूरा करावाया गया। यह रेजिडेंसी अवध प्रांत की राजधानी लखनऊ में रह रहे, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंम्पनी के अधिकारियों का निवास स्थान हुआ करता थी। सम्पूर्ण परिसर मे मुख्यतया पाँच–छह भवन थे, जिनमें मुख्य भवन, बेंक्वेट हाल, डाक्टर फेयरर का घर, बेगम कोठी, बेगम कोठी के पास एक मस्जिद, कोषागार आदि प्रमुख थे।

जामा मस्जिद, लखनऊ : हुसैनाबाद इमामबाड़े के पश्चिमी दिशा में जामा मस्जिद स्थित है। इस मस्जिद का निर्माण मोहम्मद शाह ने शुरू किया था लेकिन सन् 1840 ई. में उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी ने इसे पूरा करवाया। जामा मस्जिद लखनऊ की सबसे बड़ी मस्जिद है। मस्जिद की छत के अंदरुनी हिस्से में खूबसूरत चित्रकारी देखी जा सकती है।

बनारसी बाग : वास्तव में यह एक चिड़ियाघर है। स्थानीय लोग इस चिड़ियाघर को बनारसी बाग कहते हैं। यहां के हरे भरे वातावरण में जानवरों की कुछ प्रजातियों को छोटे पिंजरों में रखा गया है। चिड़ियाघर में ही एक सरकारी संग्रहालय है जहां बहुत–सी ऐतिहासिक वस्तुएं देखी जा सकती हैं। मथुरा से लाई गई पत्थरों की मूर्तियों का संग्रह और रानी विक्टोरिया की मूर्ति देखने में बेहद आकर्षक हैं। संग्रहालय में मिस्र की एक ममी भी रखी हुई है जो पर्यटकों के बीच आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

पिक्चर गैलरी : हुसैनाबाद इमामबाड़े के घंटाघर के समीप 19वीं शताब्दी में बनी यह पिक्चर गैलरी है। यहां लखनऊ के लगभग सभी नवाबों की तस्वीरें देखी जा सकती हैं। यह गैलरी लखनऊ के उस अतीत की याद दिलाती है जब यहां नवाबों का डंका बजा करता था।

मोती महल : गोमती नदी के तट पर बनी तीन इमारतों में मोती महल प्रमुख है। इसे सआदत अली खां ने बनवाया था। मुबारक मंजिल और शाह मंजिल अन्य दो इमारतें हैं। बालकनी से जानवरों की लड़ाई और उड़ते पक्षियों को देखने हेतु नवाबों के लिए इन इमारतों को बनवाया गया था।

बेगम हजरत महल पार्क : लखनऊ के हृदय हज़रत गंज में गोमती नदी के हनुमान–सेतु पुल के ठीक सामने परवर्तन चौक के बाद बना हुआ एक उद्यान है। इसमें खुर्शीद जैदी और सआदत अली का मकबरा बना हुआ है, जिसके आस–पास उद्यान विकसित किया गया है। इस उद्यान का नाम बदल कर उर्मिला वाटिका कर दिया गया था।

कुकरैल संरक्षित वनः यह उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित एक मगरमच्छ, घड़ियाल और कछुओं का अभ्यारण्य है जो यह इंदिरा नगर, लखनऊ के रिंग रोड पर स्थित है। कुकरैल संरक्षित वन की स्थापना सन् 1978 में उत्तर प्रदेश वन विभाग और भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सहयोग से की गई थी। इस केंद्र की स्थापना का विचार 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ के संस्थान – प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय संघ की उस रिपोर्ट के बाद आया, जिसमें कहा गया था कि उत्तर प्रदेश की नदियों में मात्र 300 मगरमच्छ ही जीवित बचे हैं। मगरमच्छों के संरक्षण के लिए कुकरैल संरक्षित वन को विकसित किया गया है। आजकल यह एक पिकनिक स्थल के रूप में लोकप्रिय हो रहा है।

अम्बेडकर उद्यान : गोमती नदी के दक्षिणी तट पर लगभग 22 एकड़ (86460 वर्गमीटर) के विशाल क्षेत्र में दो बड़े भव्य द्वार है एवं पार्क के भीतर भारत के संविधान निर्माता बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर की भव्य प्रतिमा, 676.50 वर्गमीटर छतरी (कैनोपी) के मध्य में स्थापित है। इस छतरी के दोनों तरफ फूलों की व्यापक बागवानी इस क्षेत्र को सम्पूर्णता व सुन्दरता प्रदान करते हैं। 'डा० भीमराव अम्बेडकर गोमती पार्क' के मध्य में म्यूजिकल फाउण्टेन है, जिसके मध्य फूल का व्यास 38.20 मीटर है, जो आस–पास के मनोरम दृश्य वातावरण को अत्यन्त सुन्दरता प्रदान करता है तथा पर्यटकों को भाव–विभोर व आनन्दित करता है। लखनऊ के लोगों के साथ–साथ यहां आने वाले पर्यटकों के लिये आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है।

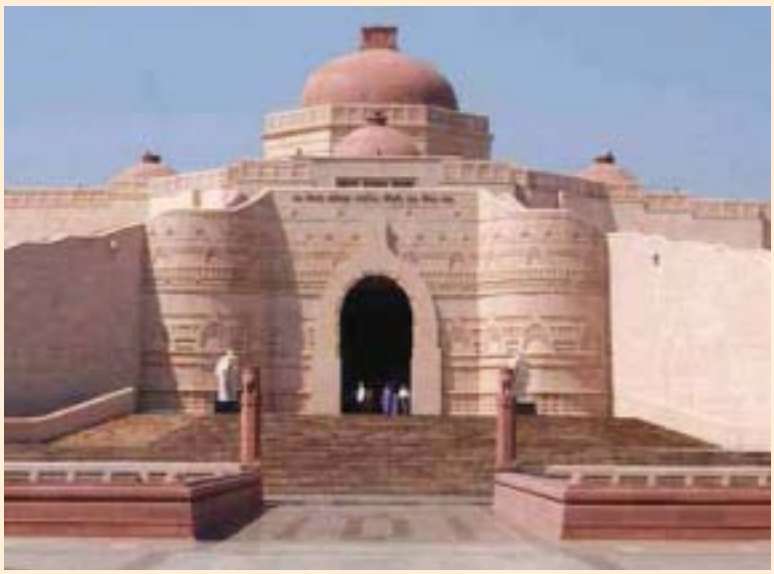

अम्बेडकर उद्यान

जेनेश्वर मिश्रा पार्कः उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में जेनेश्वर मिश्रा पार्क उत्तर प्रदेश सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट है और वह इसे हर संभव बड़ा बनाने में लगी हुई है। इस पार्क को एशिया का सबसे बड़ा गार्डेन होने का भी दर्जा प्राप्त है। वर्ष 2012 में इस पार्क का निर्माण कार्य शुरु हुआ था और इसकी लागत में 168 करोड़ रुपए खर्च किये जा चुके हैं। पार्क को लंदन के हाइड पार्क की तर्ज पर विकसित किया गया है। पार्क तकरीबन 376 एकड़ के क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

दुनिया का सबसे बेहतरीन पुल जो उड़ा देगा आपके होश : इस पार्क को विश्वस्तरीय दर्जा प्रदान करने का हरसंभव प्रयास मे राज्य सरकार जुटी है। यह पार्क पेरिस से लेकर सिंगापुर के अहम पर्यटन स्थल को टक्कर देता है। हाल ही में इस पार्क में मिग 21 को स्थापित किया गया है, यही नहीं गंडोला बोट भी यहां आने वाले लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह बोट इटली की अहम विरासत में से एक मानी जाती है जिस जेनेश्वर मिश्रा पार्क में स्थापित किया गया है।

"ऐ–शहरे – लखनऊ तुझे मेरा सलाम है।
दुनिया के बाद जन्नत मे तेरा ही नाम है।"
–शकील बदायुनी

लखनऊ तक कैसे पहुंचे:

लखनऊ में यातायात के सभी साधन उपलब्ध है जैसे – चौधरी चरणसिह अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, रेल मार्ग और सड़क मार्ग द्वारा पर्यटक देश–विदेश के किसी भी कोने से लखनऊ तक आसानी से पहुंच सकते है।

कहाँ ठहरें: लखनऊ में सभी प्रकार के होटल और अतिथि गृह उपलब्ध है।

लखनऊ के □मण का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के दौरान होता है।

कनिष्ठ अनुवादक
पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

जहां हर 100 किलोमीटर पर भाषा बदल जाती है, पहनावा, गीत संगीत और रहने के तौर तरीके बदल जाते हैं, वहां अगर कुछ नहीं बदलता है तो वह है घर का खाना। –**एक कहावत**

भूल सुधार

अतुल्य भारत के तीसरे अंक के पृष्ठ 21 पर प्रकाशित लेख **"रेमुना–खीर–चोरा गोपीनाथ"** के लेखक हैं श्री अबिनाश दाश पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंध संस्थान, भुवनेश्वर।

भूलवश उनका नाम लेख के आरम्भ में छपने से रह गया, इसके लिए खेद है।

बहुभाषायी पर्यटक

इन्फो सेवा 1363

– शिवकुमार

पर्यटन मंत्रालय ने देसी–विदेशी पर्यटकों को परेशानियों को समझते हुए और उन्हें किसी भी तरह परेशानियों से निजात दिलाने के लिए इसी साल फरवरी में इन्फोलाइन सर्विस शुरू की थी, जिसे काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिले हैं। सरकार ने नौ महीने पहले हिंदी–अंग्रेजी सहित बारह अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में यह हेल्पलाइन सेवा शुरू की थी, जिस पर अब तक सवा लाख से ज्यादा कॉल्स आ चुकी हैं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 8 फरवरी, 2016 को इस सुविधा का आरंभ किया गया था। यह बहुभाषायी पर्यटक सेवा 1800111363 पर अथवा लघु कोड 1363 पर निःशुल्क है। किसी भी पर्यटक को इस नम्बर पर फोन करने पर कोई पैसा नहीं देना होता है। घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक किसी भी संकट की स्थिति में इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं तथा 24 घंटे सातों दिन निरंतर सेवा प्रदान की जाती है। यह सेवा हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त दस अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं जैसे अरबी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन, जापानी, कोरियाई, चीनी, पुर्तगाली, रूसी और स्पेनिश में उपलब्ध है। किसी पर्यटक से फोन आने पर संबंधित भाषा के एजेंट से उसकी बात कराई जाती है।

भारत सरकार ने यह सेवा पर्यटकों को दिशानिर्देश प्राप्त करने और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए शुरू की गई है। इसका मकसद भारत में विदेशी पर्यटकों को पर्यटन और यात्रा से जुड़े विभिन्न पहुलओं की उन्हीं की भाषा में जानकारी देना, उन्हें सुविधाओं के बारे में बताना और मुश्किल के वक्त में मदद उनकी करना भी है।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) एवं नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा 08 फरवरी, 2016 को नई दिल्ली में ''हिंदी और अंग्रेज़ी सहित 12 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में 24x7 टोल फ्री मल्टी–लिंगुअल टूरिस्ट इन्फो लाइन'' का शुभारंभ करते हुए।

जरूरत पड़ने पर पर्यटक इस इन्फोलाइन से संपर्क कर संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों की मदद भी ले सकते हैं और उन तक अपनी कठिनाई पहुंचा सकते हैं।

पर्यटकों के लिए 8 फरवरी, 2016 को शुरू इस सेवा के जरिए नवम्बर, 2016 तक 1,27,885 कॉल्स आ चुकी हैं। सबसे ज्यादा 95,796 कॉल हिंदी में आईं। जिनमें से 95,449 का जवाब भी हिंदी में दिया गया। सबसे कम सवाल पुर्तगाली भाषा में पूछे गए कुल 248 से किसी का भी जवाब नहीं दिया जा सका। हिंदी के बाद सबसे ज्यादा क्वेरीज़ कॉल अंग्रेजी (15,204) और चीनी भाषा (3,401) में आईं। इसके बाद अरबी और रूसी में कॉल आई। जहां अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में सबसे ज्यादा कॉल सभी महीनों में आईं, वहीं हिंदी और अंग्रेजी में सबसे ज्यादा कॉल जून और जुलाई में आईं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि इन दिनों स्कूलों में छुट्टियां होने से यहां पर्यटन का बाजार सबसे ज्यादा सक्रिय होता है। मार्च–अप्रैल में इम्तिहान व स्कूल खुले होने से हिंदी में कॉल्स 3200 के आसपास रहीं, वहीं मई में बढ़कर यह 8800 से ज्यादा पहुंच गईं। जून 2016 में यह आंकड़ा 34,000 पार कर गया।

हमें आशा करनी चाहिए कि आने वाले समय में यह सुविधा और अधिक पर्यटकों तक पहुंचेगी और वे उसका लाभ उठा सकेंगे।

बहुभाषायी पर्यटक निःशुल्क सेवा **1800111363**
लघु कोड **1363**

आशुलिपिक,
पर्यटन मंत्रालय

होटल प्रबंध और खान-पान प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद

— संजय ठाकुर,

होटल प्रबंध खान.पान और प्रौद्योगिकी संस्थान हैदराबाद में कार्यशैली एक व्यवसाय ही नहीं बल्कि एक जीवन शैली है। जहाँ हम विद्यार्थियों को असमान्य प्रतिभा का धनी बनाते है। हमारे विद्यार्थी अपने सकारात्मक व्यवहार, एवं कर्मठ क्षमता के लिए माने जाते हैं।

आई.एच.एम., हैदराबाद हमेशा से विद्यार्थियों को सही कदम उठाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है जिससे दुनिया को देखने का उनका नजरिया बदलता है। हम विद्यार्थियों के जीवन को सफल बनाने का पूर्ण प्रयास करते हैं। जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतना ही शानदार होगी।

इस संस्थान की स्थापना 1972 में फूड क्राफ्ट इंस्टिट्यूट के रूप में की गई थी। यह स्वायत संस्थान, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत है।

वित्तीय पोषण : हमारा संस्थान पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित है, हमारा राजस्व व्यय, हमारा संस्थान स्वतः उठाता है, एवं पूँजीगत व्यय पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण किया जाता है।

गतिविधियाँ :

हमारे संस्थान मे विभिन्न क्षेत्रों से विद्यार्थी पढ़ने एवं सीखने आते है, पढ़ाई के अतिरिक्त हमारे प्रांगण में पाकशाला प्रतियोगिता, धार्मिक उत्सव, हास्य सप्ताह, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–कूद प्रतियोगिताएँ, स्वच्छ भारत अभियान, हिंदी दिवस, सद्भावना दिवस, खाद्य एवं पेय पदार्थ प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं, जिसमें सभी विद्यार्थी उत्साह से भाग लेते हैं।

सुविधाएँ :

हमारे संस्थान में विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की उच्चतम सुविधा है, कॉलेज में जिम, टेबल टेनिस कोर्ट, बास्केट बाल कोर्ट, शटल कोर्ट, रोट्रैक्ट क्लब, लिटिल इंडिया कैंटीन, संगीत कक्ष, अंग्रेजी भाषा प्रयोगशाला, तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु पुस्तकालय है जो कि ब्रिटिश पुस्तकालय के सहयोग से भी कार्यरत है।

हमारे संस्थान के छात्रों का निम्नलिखित होटलों द्वारा चयन किया गया है :

ताज ग्रूप ऑफ होटल, ओबराय, आई.टी.सी. होटल, द पार्क होटल, द लीला, हयात रेजेंसी, डॉमिनोज, विल्स लाइफ, लेमन ट्री, मैरियट होटल, जेट एयरवेज, मैक डॉनल्डस, स्टारवुड होटल और रिसोर्ट, बोस, ऑडियो, पार्क हयात, पी.वी.आई. सिनिमास, बेस्ट सेल्लर्स, एकॉर होटल्स, फोर सीजन, यम इंटर्नेशनल, मेट्रो, अरविंद मिल्स जैसे बडे संस्थानों द्वारा हमारे छात्रों का चयन किया जाता है। गत वर्ष कुल मिलकर 30 कंपनियाँ हमारे संस्थान में छात्रों का चयन करने हेतु आईं। जिसमें से 95% प्लेसमेंट हुआ।

पाठ्यक्रम :

हमारे संस्थान में विभिन्न कोर्स की पढ़ाई होती है।

क्र. सं.	कोर्स	अवधि	अधिकतम आयु	शैक्षिक योग्यता
1.	**तीन वर्ष बी.एस.सी. (आतिथ्य और होटल प्रबंध)** प्रति वर्ष दिसंबर–जनवरी में एन.सी.एच.एम.सी.टी. द्वारा अधिसूचना जारी की जाती है।	3 वर्ष	साधारण, एवं ओ.बी.सी. के उम्मीदवारों के लिए 1 जुलाई तक 22 वर्ष तथा (अनु.जाति और अनु. जनजाति उम्मीदवारों के लिए 25 वर्ष)	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं भारतीय स्कूल प्रमाण–पत्र परीक्षा परिषद या राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड जैसे किसी भी मान्यता प्राप्त केंद्रीय/राज्य बोर्ड की सीनियर सेकेंडरी शिक्षा की 10+2 की परीक्षा उत्तीर्ण
2.	**खाद्य उत्पादन में शिल्प कौशल कोर्स**	1) वर्ष (छमाही प्रणाली)	साधारण तथा ओ. बी. सी. उम्मीदवारों के लिए 1 जुलाई तक 22 वर्ष हो (अनु.जाति और अनु. जनजाति के उम्मीदवार के लिए 25 वर्ष)	एस.एस.सी/10 वीं का 10+2 प्रतिमान या समान
3.	**खाद्य और पेय उत्पादन में शिल्प कौशल कोर्स**	24 सप्ताह		
4.	आवास संचालन और प्रबंध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1½ वर्ष (छमाही प्रणाली)	साधारण तथा ओ. बी. सी. उम्मीदवारों के लिए 1 जुलाई तक 22 वर्ष हो (अनु.जाति और अनु. जनजाति के उम्मीदवार के लिए 25 वर्ष)	किसी भी मान्यता प्राप्त विश्व विद्यालय में स्नातक
5.	सरकार द्वारा प्रयोजित "हुनर से रोजगार तक" (एचएस आरटी) कौशल विकास कोर्स	45/60 दिन	18–28 वर्ष	8वीं उत्तीर्ण

महात्मा गाँधी की प्रतिमाः

संस्थान के मुख्य द्वार पर महात्मा गाँधी की प्रतिमा है। जिसके नीचे मेरा जीवन ही मेरा संदेश लिखा गया है जो विद्यार्थियों को अपना उदाहरण स्वरूपी जीवन जीने का संदेश देती है। यह भारत का प्रथम होटल प्रबंध संस्थान है जो महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर पूर्व छात्रों को प्रतिमा के रूप में समर्पित किया गया है।

छात्रावास :

संस्थान का छात्रावास, स्वच्छ सुंदर एवं सभी जरूरी उपकरणों से युक्त होमटेल नाम से अर्थात घर जैसा है। यहाँ पर छात्रों की सुख, सुविधाओं का खास ध्यान रखा जाता है। छात्रों के जरूरत की सारी चीजें उपलब्ध है। 24 घंटे बिजली, शुद्ध पेय जल, वाई–फाई की सुविधा उपलब्ध है।

योग कार्यक्रम :

हम सभी योग के महत्व को समझते है एवं योग के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित करते हैं। गत जून महीने में संस्थान के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया।

स्वच्छ भारत :

स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत सभी विद्यार्थी साफ–सफाई का ध्यान रखते है एवं प्रांगण में लगे पेड़ पौधों की भी नियमित रूप से देखभाल और रखरखाव करते है।

राजभाषा संक्षेप :

संस्थान में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक पत्रिका का रेफरल प्वायंट एक भाग हिंदी में भी रखा गया है। इसके अलावा, राज भाषा समिति की ओर से कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे हास्य सप्ताह, सद्भावना दिवस, हिंदी सप्ताह आदि के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

संस्थान की पत्रिका रेफ़रल प्वॉयन्ट का मुख्य पृष्ठ

रेफ़रल प्वॉयन्ट
REFERRAL POINT

IHM
Institute of Hotel Management
Living by Example

IHM-Hyderabad Newsletter	VOL - 3	Pages : 12	2016

सम्पादकीय

गो ग्रीन एक संकल्पना है जो हमें पर्यावरण का संरक्षण करना सिखाती है। यह जीवन की एक प्रतिज्ञान है जो हमें बढ़ना, परिपूर्णता और आध्यात्मिक कायाकल्प सिखाती है। गो ग्रीन धीरे-धीरे नवयुग समाज का हिस्सा बनती जा रही है। बहुत सारे साहचर्य, व्यक्ति रचनात्मक एवं महत्वपूर्ण तरीकों की तलाश में हैजो लोगों को 'गो ग्रीन' के लिए प्रेरित करे।

आई.एच.एम. हैदराबाद अपने सामाजिक एवं पर्यावरण, दोनों पहलुओं में उत्कृष्ट है। हमारा मानना है कि "उदारता की शुरूआत अपने घर से होती है, अपनी गतिविधियों का प्रदर्शन जैसे कि पौधा रोपन एवं उनकी देखभाल जो विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों में सकारात्मक उर्जा प्रदान करने के लिए प्रभावित करती है। हमारे परिसर में कई सम्मोहक क्षेत्र है जैसे कि शांति निकेतन, तनाव मुक्ति क्षेत्र, विस्मयकारी बौद्ध वृक्ष एवं हरे भरे पेड़ पौधे सभी ओर है। हमारे परिसर का हर एक कोना और लहलहाते वृक्षों से निकली मधुर ध्वनी सबको आनन्द विभोर कर देती हैं।

Editorial

Go Green is a concept that includes what is necessary to save the environment. It is an affirmation of life which indicates growth, fruitfulness and spiritual rejuvenation. Going green has slowly been catching on in the modern society. There are companies and individuals seeking creative and useful ways to go green regularly.

IHM Hyderabad is known for its excellence in both social and environmental initiatives. We believe in the maxim "charity begins at home". We perform activities like planting saplings and taking care of them – this, in turn inspires our students and staff for an enlightened life and to perform and stay positive all day long. Our campus has enchanting zones such as *Shantiniketan*, the stress buster realm, the bewildering *bodhi* tree, and a masquerade of lush green plants all around. Each corner of the campus delivers a beauteous whisper to relive and feel the aura of novelty.

Sitting Right to Left:
Mr. Puneet Razdan, Mr. Pulla Suresh

Standing Right to Left:
Harshit Luthra, Akshat Sahni,
Ehab Beg, Nikitha H.M,
Neha Chincholikar,
Malhar Chatterjee, Mahima Singh,
Nitin Goyal, Shruti Sharma,
Bhavana Ravindran, Jennifer Jahid

Special Mention :
R. Srikanth, Kara Mithun,
Pranith Gupta

पानी की टंकी की सफाई और कीटाणुशोधन

टैंक सफाई पूर्ण रूप से 'वर्षा जल संचयन' पर आधारित है। हमारा उद्देश्य पानी को बचाना एवं उसे सही इस्तेमाल के अनुकूल बनाना है। यह पूर्ण रूप से 'पर्यावरण के अनुकूल' अर्थात ईको फ्रेंडली है। इसी उद्देश्य से हमारे संस्थान में पानी की टंकी की सफाई और कीटाणुशोधन किया गया।

आध्यात्मिक क्षेत्र

'शांति निकेतन' हमारे परिसर का धार्मिक आंचल है, यहाँ पर एक छोटा सा मंदिर है, जो कि तेलंगाना संस्कृति से प्रभावित हैइस मंदिर में तेलंगाना की देवी की प्रतिमा विराजमान हैजो छात्र-छात्राओं एवं सभी कर्मचारियों में नई उर्जा एवं सकारात्मक विचारों का संचार करती है। शांति निकेतन का उद्देश्य तेलंगाना पर्यटन को बढ़ावा देना भी है। यहीं सभी के लिए प्रेरणा दायक एवं तनाव कम करने वाला क्षेत्र है।

कोर्टयार्ड

आई.एच.एम. हैदराबाद में 'कोर्टयार्ड' अर्थात आंगन एक प्रमुख हिस्सा है, यह प्राकृतिक फूल-पत्तियों से सुसज्जित हैएवं खुले आसमान के नीचे हैजो कि विद्यार्थियों मधें निई विचारधाराओं का संचार करती है, कॉलेजके सभी कार्यक्रम इसी आंगण में होते है एवं संस्थान की सभी सभाएँ यहीं सम्पन्न होती है।

फोर सीज़न्ज़

यह हमारे कॉलेज का प्रमुख अंग है, जहाँ खाद्य-भोजन परोसने के हुनर एवं तौर-तरीकों से अवगत कराया जाता है। हमारे इस कक्ष का नामांकरण फोर सीज़न्ज़ नाम से किया गया है। यह कक्ष मुख्यतः प्रायोगिक कक्षाओं तथा कर्मचारियों के दोपहर के खाने के लिए इस्तेमाल होता है।

हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी दिवस समारोह, १४ सितम्बर २०१६ को होटल प्रबन्ध संस्थान हैदराबाद में मनाया गया। इस शुभ दिन के अवसर पर कॉलेज के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम (संगीत, भाषण, कविता, आदि) में भाग लिया। इसमें प्रथम वर्ष से लेकर तृतीय वर्ष के छात्रों, निकायगण और विभागाध्यक्ष भी सम्मिलित हुए। इस दिन के अवसर पर छात्रों ने हिन्दी राष्ट्रभाषा की महत्ता बताते हुए हमारे जीवन में राष्ट्रभाषा के उपयोग के बारे में बताया।

इस समारोह का समापन करते हुए विभागाध्यक्ष श्रीमती बी. कल्याणी ने हिन्दी के प्रति अपना विचार प्रकट किया।

कार्यालय ज्ञापन

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक १०-०९-२०१६ को होटल प्रबंध संस्थान हैदराबाद में राजभाषा संबंधी निरीक्षण हुआ जिसमें मंत्रालय की ओर से श्री राम कर्ण (आर्थिक सलाहकार), श्री श्याम कुमार वर्मा (सहायक निदेशक, रा.भा.) एवं श्री मोहन सिंह (परामर्शदाता) ने भाग लिया।

स्टार्ट अप - आई.एच.एम.

होटल प्रबंध संस्थान हैदराबाद में हुनर से रोज़गार तक योजना के अंतर्गत 'क्राफ्ट कोर्स' के विद्यार्थियों को व्यापारिक नीतियों से अवगत कराने एवं इस क्षेत्र में उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए हमने नई कड़ियों को शुरू करने का विचार किया है, जिससे क्राफ्ट कोर्स के विद्यार्थी अपने द्वारा बनाये गए व्यंजनों को उचित मूल्यों से कॉलेजके विद्यार्थियों को बेच सकते है, इस प्रकार हमारा उद्देश्य उनकी नेतृत्व क्षमता एवं व्यापार नीतियों को बढ़ावा देना है।

प्रधानाचार्य,
होटल प्रबंध खान–पान और
प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद

मूल्यांकन, विवेचना और विकल्प

अतुल्य भारत : एक विचार एक अभियान

– प्रो० (डा०) निमित चौधरी

पिछले डेढ़ दशक से अतुल्य भारत " Incredible India" अभियान ने भारत के पर्यटन को एक दिशा दी है। इस अभियान ने पूरे जोर शोर से विश्व में भारत के लिए जिज्ञासा पैदा की है। आज विश्व में जब हमारी बात होती है तो **"अतुल्य भारत"** का घोष सरलता से याद आ जाता है। शैक्षिक जगत में जब भी पर्यटन के विपणन की चर्चा होती है तो हमारे अतुल्य भारत अभियान की सन्दर्भ अवश्य आता है। अतुल्य भारत के घोष को आगे ले जाने के लिए ही शायद इस पत्रिका का नाम **"अतुल्य भारत"** रखा गया है। सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है। आज जब हम पलट कर देखते हैं तो कभी कभी ऐसा लगता है की यह मज़बूत ब्रांड उतने पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर पाया जितनी की इससे अपेक्षा थी।

संख्याएं अधिक सुलभता से समझ में आती हैं इसलिए मैं इनका सहारा लेना चाहता हूँ। 2002–03 में जब हम इस अभियान की शुरुआत कर रहे थे तो हमारे देश में लगभग 23 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ। ऑस्ट्रेलिया में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या लगभग दुगनी (48 लाख) थी। इंडोनेशिया में 2002 में लगभग 50 लाख पर्यटक और जापान में 50 लाख विदेशी पर्यटक पहुंचे। इस अभियान के चलते 6–7 साल बाद इसका असर दिखना शुरू हुआ। 2009 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या दुगनी से ज्यादा हो कर लगभग 51 लाख हो गई जब कि ऑस्ट्रेलिया में यह संख्या 48 लाख से बढ़ कर 55 लाख हो गई। इसी काल में इंडोनेशिया में विदेशी मेहमान पर्यटकों की संख्या 50 लाख से बढ़ कर 63 लाख हो गई। जापान में यह संख्या 50 लाख से बढ़ कर लगभग 68 लाख हो गई।

छह साल बाद, यानी 2015 में, भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या 51 लाख से बढ़ कर 80 लाख हो गयी जबकि इसी समय में इंडोनेशिया में यह संख्या बढ़ कर 100 लाख से अधिक हो गई और जापान में आने वाले पर्यटकों की संख्या 190 लाख हो गई। ऑस्ट्रेलिया ज़रूर कुछ पीछे छूट गया। 2015 में उनके यहाँ 74 लाख पर्यटक ही आए। वियतनाम का सफ़र भी रोचक रहा। जहाँ 2009 में उनके यहाँ सिर्फ 37 लाख पर्यटक आए, 2015 में यह संख्या बढ़ कर लगभग हमारे बराबर यानि 80 लाख हो गई। UNWTO की रिपोर्टों से ली गयी इन संख्याओं से यह लगता है जहाँ इस अभियान ने अपने शुरुआती दौर में लाभ पहुँचाया, समय के साथ इसका

#यह लेख एक अकादमिक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारत या किसी अन्य सरकार की किसी नीति की आलोचना करना नहीं है। ये लेखक के अपने विचार है तथा ये किसी भी रूप में सरकार या संस्थान के दृष्टिकोण को परिलक्षित नहीं करते।

पैनापन कुछ कम हुआ है। हमारे कुछ पड़ोसी देशों में पर्यटन हमसे तीव्र गति से बढ़ा है। अतः इस अभियान की योग्यता एवं प्रासंगिकता के मूल्यांकन की नितांत आवश्यकता है।

गंतव्य की शख्सियत, उसका व्यक्तित्व : विचारणीय यह है की ऐसा क्या किया जाए कि पर्यटक भारत की ओर रुख करें। हमने उनसे वायदा किया कि वे भारत आएं क्योंकि भारत अतुल्य है। पर उनके लिए अतुल्य भारत का मायने क्या है? जब भारत या इण्डिया बोला जाता है तो उनके मस्तिष्क में कौनसा चित्र कौंधता है? UNWTO के आंकड़ो के अनुसार फ्रांस, अमेरिका और चीन ऐसे तीन गंतव्य देश हैं जहाँ सर्वाधिक सैलानी जाते हैं। हाल की एक शोध के अनुसार यह तीन गंतव्य अपनी एक विशिष्ट छवि बनाने में सफल रहे हैं। लोगों ने फ्रांस का चित्रण शिष्ट (elegant), आकर्षक (attractive) और परिष्कृत (sophisticated) के रूप में किया; अमेरिका को उन्होंने रुखा (rugged), कठोर (tough) और शक्तिशाली (strong) कहा। उनके लिए चीन साफ़ तौर पे अलग (different), अपरिचित (new) और अभिनव (innovative) था। ऐसे में वैश्विक पर्यटक समुदाय के लिए भारत क्या है? कैसा है? हर गंतव्य का एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है जिससे वह जाना- पहचाना जाता है? भारत को हम आगंतुकों के लिए कैसे परिभाषित करेंगे / क्या भारत को वर्णित करने के लिए कोई सर्व संपुटित संकल्पना, परिकल्पना या भाव हो सकता है?

पर्यटन जगत के कुछ मित्रों का मानना है कि भारत अतुल्य है अर्थात "India is incredible"। परन्तु इस "अतुल्य" या "Incredible" का क्या अर्थ है? जब यह दो शब्द उपयोग में लाये जाते हैं तो मन में क्या भाव उत्पन्न होते हैं? लोगों के मस्तिष्क में क्या चित्र उभरता है? उनके मन में क्या उम्मीद जगती है कि वे भारत आने पर क्या देखेंगे? क्या पाएंगे? कैसा महसूस करेंगें? मुझे बहुत सारे लोगों से जिनमें पर्यटक भी थे, शिक्षाविद् और व्यवसायी भी थे - इस विषय में चर्चा करने का अवसर मिला। यह जान कर मैं चकित रह गया की प्रत्येक के लिए इस का अर्थ भिन्न था। उनके लिए अतुल्य का अर्थ आश्चर्यजनक (Wonderful), अद्भुत (Amazing), अनोखा (Uniquely), नयापन लिए हुआ (Refreshing) आदि आदि था। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है की यह सब शब्द भावात्मक है। इनसे गंतव्य की कोई स्पष्ट छवि उभर कर सामने नहीं आती। दूसरी और मुझे बहुत सारे पर्यटन के क्षेत्र में कार्यरत सेवाकर्ताओं से मिलने और बात करने का भी अवसर प्राप्त हुआ है। इनमें विशेष तौर पर (पर्यटक) गाइड भी थे। यह वे लोग है जिनके साथ पर्यटक बहुत समय व्यतीत करते हैं। इनकी ज़िम्मेदारियों में यह शामिल है कि ये भारत और उसके पर्यटन के घटकों की पर्यटकों के लिए विवेचना और व्याख्या करें। मैंने इनसे यह जानने का भी प्रयास किया कि वह क्या है जो भारत को अतुल्य तथा दूसरों से अलग बनाता है। यहाँ भी सब एकमत नहीं थे। अलग–अलग आगंतुक अलग– अलग गाइड से अलग– अलग बातें जानते और सुनते हैं। जब इन सेवाकर्ताओं की भारत की अवधारणा अलग अलग है तो हम आगंतुकों से कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि उनके मन में भारत की एकल यथार्थपूर्ण परिकल्पना उत्पन्न होगी? ऐसे में पर्यटकों को कैसे विश्वास होगा कि वह असल में क्या देखने और अनुभव करने आएं हैं। कुछ के लिए यह संस्कृति है, तो कुछ के लिए इतिहास, कुछ इसके योग से, कुछ यहां के समुद्र-तटों से आकर्षित होते हैं तो कुछ आयुर्वेद अथवा वन्य जीवन या फिर कुछ और देखने के इच्छुक हैं।

बहुत सारे लोगों के लिए हमारी सांस्कृतिक विविधता ही हमारी विशिष्टता है और दुनिया भर से लोग इसे देखने आयेंगे। पर एक नज़र इस पर भी डाल लीजिये। वर्ष 2011 में इंडोनेशिया ने एक नयी ब्रांड "Wonderful Indonesia" का अनावरण किया। इंडोनेशिया इसलिए "wonderful' है क्योंकि उसकी विविधता उसके 17000 द्वीपों पर फैली है। दूसरी तरफ थाईलैंड कह रहा है की वह "Amazing Thailand" है। वह Amazing इसलिए है क्योंकि उसकी विविधता और उसके बेशुमार पर्यटन उत्पाद आगंतुको को निस्तब्ध कर देंगे। मलेशिया तो बहुत समय से

"Malaysia Truly Asia" है ही जिसका तात्पर्य यह है की यदि किसी को संपूर्ण एशियाई विविधता देखनी हो तो वह मलेशिया आए। अपने सिलसिलेवार और सशक्त विज्ञापनों की बदौलत वह यह मनवाने में काफी हद तक सफल भी हुआ है। विश्वसमुदाय, सही या गलत, यही समझने लगा है की एशियाई विविधता तो मलेशिया में ही है। उधर छोटा सा सिंगापुर अपने आप को "Uniquely Singapore" कह रहा है। वह इसका श्रेय अपनी विश्ववादी आबादी को देते हैं। कहते हैं की एशियाई मूल के लोगों के अलावा उनके यहाँ यूरोपीय संस्कृति की झलक भी मिलती है। अब आप ही बताइए कि जिन लोगों को इस विविधता की पहचान नहीं है, वे किसे सही माने और किसे कम सही माने? वे किसे असली विवधता माने? उपरोक्त सारे गन्तव्य एक दूसरे के करीब भी हैं और संभावित पर्यटकों से एक सा वायदा कर रहे हैं। जबकि हमारा ग्राहक □ांत और विमूढ़ है!

गंतव्य ब्रांडिंग क्या है

कोई भी टैगलाइन किसी वस्तु के प्रति जिज्ञासा उत्पन करती है। जिज्ञासु आगंतुक इस टैगलाइन के माध्यम से गंतव्य को समझने का प्रयास करता है। उधर इस सब से अनभिज्ञ गंतव्य अपने टैगलाइन और स्लोगन को आकर्षक और अत्यानुप्रास (rhyming) वाला बनाने के प्रयास में संभावित आगंतुकों को □मित कर देते हैं। गंतव्य के प्रचार के प्रयासों से उनकी कोई स्पष्ट छवि बनके नहीं उभरती। अधिकांश वही पारंपरिक बातें दोहराते है. संस्कृति प्रकृति, तट, खरीदारी, नाइटलाइफ़, इत्यादि। आज आगंतुकों के लिए यह अपेक्षित चीजें हैं. जो सब जगह मिलती हैं या फिर होनी ही चाहिए। पर एक संभावित ग्राहक उस अनुभूति को ढूँढ रहा है जो औरों से हट कर अलग तथा भिन्न हो।

यदि टैगलाइन और स्लोगन एक संभाव्य पर्यटक को आकर्षित करने के लिए हैं तो गंतव्य का प्रचार अभियान उस फिल्म के ट्रेलर जैसा है जो अभी देखी जाने वाली है। वस्तुतः एक गंतव्य की रणनीति अक्सर प्रतिक्रमणी होती है। सर्वप्रथम गंतव्य पर एक अनूठी विभेदित अनुभूति की परिकल्पना की जानी चाहिए। आगंतुकों के पास गंतव्य पर पधारने का एक ठोस कारण होना चाहिए। उन्हें आश्वस्त होना चाहिए कि वह एक अनूठा अनुभव खरीद रहें हैं। इस अपेक्षित अनुभव की तस्वीर उनके मस्तिष्क पर स्पष्ट होनी चाहिए तथा उन्हें यह विश्वास होना चाहिए की अमुक गंतव्य उनकी परिकल्पना पर खरा उतरेगा। गंतव्य की इस छवि को मैं गंतव्य की शख्सियत या गंतव्य का व्यक्तित्व कहूँगा।

हर स्थान की एक शख्सियत होती है। अनादी काल से उस स्थान के भूगोल से, उसके इतिहास से, वहां के लोगों की मान्यताओं सेए वहां के लोगो की दिनचर्या से, उस स्थान के जड़ एवं चेतन अवयवों से एक विरासत बनती है जो उस स्थान को एक विशिष्ट एवं विभेदित पहचान देती है। इस विशिष्टता की अनुभूति हेतु ही प्रायः आगंतुक यहाँ आते है। वे अक्सर स्थान को देखने नहीं बल्कि उसे महसूस करने आते है।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है की क्या कोई भी पर्यटक किसी भी तरह के अनुभव की ओर आकर्षित होगा, उत्तर इतना कठिन नहीं है और वह है - 'नहीं'। अलग अलग पर्यटक अलग अलग अनुभव और पर्यटन की इच्छा रखता है। हो सकता है जिन्हें समुद्र तट और तटीय गतिविधियों में आनंद आता हो, उन्हें सांस्कृतिक ध रोहर में इतनी दिलचस्पी न हो अथवा जिन्हें प्रकृति में दिलचस्पी हो, या उन्हें अध्यात्मिक गंतव्य नहीं लुभाते हों। अतः हर गंतव्य का एक विशिष्ट पर्यटक खंड (segment) होता है। स्विट्ज़रलैंड वासियों को कश्मीर का बर्फीला परिदृश्य प्रस्तुत करना या फिर अफ्रीकियों को मध्य प्रदेश के जंगल दिखाना या मॉरिशस और कैरीबियाई लोगों को गोवा के तटों का प्रस्ताव देने में कोई बुद्धिमता नहीं होगी। हमारा अनुभव हमे यह भी बताता है की गोवा के तटों पर रुस व स्वीडन के लोगों (पर्यटकों) की भरमार रहती है, जबकि जर्मन और स्विस पर्यटकों को राजस्थान अच्छा लग रहा है। पिछले कुछ वर्षों में थाई, मलेशियन और सिंगापुर वालों ने कश्मीर की वादियों में दिलचस्पी दिखाई है। जापानी और कोरियाई नागरिकों को लद्दाख से लेकर अन्य दूसरे बौध महत्व के स्थान भा रहे हैं।

हमे यहाँ भारत के समान विस्तार वाले अन्य गंतव्यों का विश्लेषण भी कर लेना चाहिए। अमेरिका, रूस, कनाडा और चीन जैसे देश क्या करते हैं? उनके आकार की वजह से उनकी विविधता भी संज्ञेय है। अमेरिका और कनाडा के तो राष्ट्रीय पर्यटन ब्रांड है ही नहीं। रूस और चीन के राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन ब्रांड का प्रचार प्रयास भी क्षीण और दुर्बल है। इसके विपरीत वे क्षेत्रीय एवं नगर स्तरीय गंतव्यों, को प्रचारित करते हैं जिनकी अपनी एक विशिष्ट शख्सियत है और इसीलिए वह पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं। इन विशिष्ट गंतव्यों के विशिष्ट पर्यटक खंड हैं जिन्हें वे योजनाबद्ध तरीके से चिन्हित करते हैं और तदुपरांत लुभाने का प्रयास करते हैं। वे राष्ट्रीय ब्रांड को पीछे रखते है तथा क्षेत्रीय एवं नगरीय ब्रांडो को प्राथमिकता देते हैं। दिखने में यह सरल और सीधा लगता है। सर्वप्रथम तो हमें यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि हमारे गंतव्य की क्या विशिष्टता है तथा वह क्या प्रस्तुत करना चाहता है। फिर, जिसे हम पेश करना कहते हैं उसका खरीदार, कौन है तथा कहाँ है? हम उस तक कैसे पहुंचेंगे और क्या कह कर उसे लुभायेंगे? इतना ही नहीं, जो कुछ हम कहेंगे, क्या हमारा संभावित पर्यटक उस चित्र को अपने मन मष्तिष्क में उतार पायेगा? आखिरकार जो चित्र हमने चित्रित किया है क्या हम उसे उसका वह सुखद अनुभव दे पाएंगे? ऐसी स्थिति में हमारा प्रयास यह होता है कि हम अपने संभावित ग्राहक को यह यकीन दिलाये कि यही वह गंतव्य है जिसे वह ढूंढ रहा है, जहाँ वह जाना चाहता है।

जब न्यूज़ीलैंड यह कहता है की "New Zealand – 100 % Pure" तो वह एक यथातथ्य प्राकृति स्थान का वादा करता है। जहाँ टैग लाइन और स्लोगन संभावित पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं, वही प्रचार अभियान उस वायदे का साक्ष्य उपलब्ध कराता है। इस प्रकार तीनो. गंतव्य का अनुभव, उसकी झलक (प्रचार अभियान) और उसका विज्ञापन घोष (टैग लाइन) – गंतव्य की शख्सियत को संप्रेषित करना चाहिए।

जैसा कि अक्सर होता है, दक्षिण एशिया तथा दक्षिण.पूर्व एशिया के अति प्रतिस्पर्धात्मक गंतव्य लगभग एक से अनुभव का वायदा कर रहें हैं यानि सभी सांस्कृतिक विविधताओं तथा प्रकृति- जिसमे वन्य जीवन और समुद्र तट भी शामिल होते हैं, को बढ़ा चढ़ा कर प्रचारित प्रसारित कर रहे हैं। जहाँ म्यांमार 'mystical' है वहां बांग्लादेश "beautiful' है, लाओस "simply beautiful' है, कंबोडिया "kingdom of wonders' है तथा श्री लंका 'wonder of

Asia' है। आगंतुक पर्यटक परेशान और व्याकुल हैं कि कौन क्या बेच रहा है तथा यह सब कैसे एक दूसरे से भिन्न हैं?

अंकोरबाट मंदिर

80 और 90 के दशक में स्लोगन अधिकांशतः एकाकी (शब्द) वर्णनकर्ता थे। वह यह बताने का प्रयास करते थे की गंतव्य या उसके अनुभव कैसे होंगें। जहाँ वर्णनकारी विशेषणों का प्रयास गंतव्य के मूल तत्व को उभारना था, वहीं कभी कभार वे गंतव्य के अनुभव के भाव को प्रतिलक्षित करता था। यहाँ यह समझना भी ज़रूरी है कि ब्रांड का प्रयास ध्यानाकर्षित करने वाले स्लोगन बनाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, अपितु गंतव्य की परिकल्पना को निष्पादित करना है। ज्यादातर प्रतिद्वंदी गंतव्य अपनी ब्रांड को एक नए अंदाज़ में प्रस्तुत करना चाह रहे हैं. वे एक अनिवारक (passive) ब्रांड की जगह एक क्रियात्मक (active) ब्रांड चाहते हैं जो संभावित पर्यटकों को सशक्त रूप से आकर्षित करे। आज एक निश्चित परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आजकल के ब्रांड "यहाँ क्या मिल रहा है" के स्थान पर "यहाँ आप क्या कर सकते हैं" पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

गंतव्य की ब्रांडिंग का उद्देश्य संभाव्य पर्यटक के मस्तिष्क में एक चित्र उकेरना होता है कि विशेष गंतव्य पर उससे (गंतव्य से) क्या अपेक्षा की जा सकती। आज जब एक पर्यटक अपनी छुट्टियां बिताने के लिए गंतव्य निर्धारित करना चाहता है तो अक्सर उसके सम्मुख प्रतिस्पर्धी विकल्प के रूप में कई गंतव्य होते हैं जो बहुधा एक से दिखते हैं और पर्यटक को **"हम भी वैसे ही हैं"** कहते हुए रिझातें हैं। एक बार जैक ट्राउट ने कहा, ''यह (ब्रांड) उत्पादों और सेवाओं की जंग नहीं है, अपितु यह पर्यटक के मन-मस्तिष्क में समझ (perception) की जद्द-ओ-जहद है।" अमुक गंतव्य से क्या अपेक्षा हो कि वहां क्या मिलेगा. एक धुंधला सा चित्र और इसकी तुलना में. कौन सा गंतव्य अपनी बात (चित्र) स्पष्टता से कहता और प्रस्तुत करता है। वस्तुतः गंतव्य ब्रांड की पूरी रणनीति गंतव्य की एक स्पष्ट छवि (एक धुंधली और अस्पष्ट छवि की तुलना में) बनाने में ही निहित है। किसी भी स्थान की समस्त जड़ एवं चेतन तत्वों (अव्ययों) को मिलाकर एक ही कहानी कहनी चाहिए जो उस स्थान के व्यक्तित्व को प्रतिलक्षित करती हों। जितना इन अव्ययों का सम्मिलन होगा उस स्थान की छवि उतनी प्रखर और स्पष्ट होगी।

राजस्थान बनाम मध्य प्रदेश – एक केस स्टडी

प्रबल प्रतिस्पर्धा के इस दौर में 'इस छवि के बनने' को संयोग पर नहीं छोड़ा जा सकता. इसकी रचना सोच.समझ कर एक रणनीति के तहत करनी होगी। यह विशिष्ट और विभेदित छवि कैसे बनेगी यह गंतव्य प्रबंधन संस्थानों पर निर्भर करेगा। अब तक प्रतिस्पर्धा का मतलब निपुणता के साथ एक उच्च कोटि की पर्यटन सेवा प्रस्तुत करना हुआ करता था। पर आज इसका मतलब तफ़सील से एक विभेदित छवि का सृजन करना तथा उसे प्रस्तुत करना है। एक बार एक ट्रेनिंग कार्यक्रम के दौरान मध्य प्रदेश के एक वरिष्ठ प्रतिभागी ने मुझसे पूछा कि ग्वालियर और मांडू के किले इतने शानदार होने के बाद भी राजस्थान के दुर्गो और महलों जितने लोकप्रिय क्यों नहीं हैं? एक तल्लीन पर्यटक राजस्थान के किलों और महलों को सरलता के साथ मध्य-कालीन राजाओं-रजवाड़ों के साथ जोड़ लेता है, जब की मध्य प्रदेश की छवि उसके प्राकृतिक सम्पदा से जुड़ी हुई है। राजस्थान के रजवाड़े और लोक-रंग उसकी एक विशिष्ट छवि बनाते है, जबकि मध्य प्रदेश अपने वन्य जीव, जंगल, आदि के लिए जाना जाता है। राजस्थान पर्यटन के homepage की पहली झलक उसके आलिशान दुर्ग, महल, Palace on Wheel से (नामक रेलगाड़ी) हेरिटेज होटल, ऊंट, घोड़े आदि को दर्शाते हैं, जबकि मध्य प्रदेश पर्यटन का वेबसाइट उसकी खूबसूरत प्रकृति को दर्शाते हुए कहता है "Unhurried। Unspoilt Undiscovered" जाने आनजाने राजस्थान एक राजसी गंतव्य की छवि बनाने में सफल रहा है और 'रंगीला राजस्थान' उसमें मेल खाता है। यहाँ तक की राजस्थान पर्यटन विकास निगम का प्रतीक चिन्ह एक राजसी पत्रक है, जबकि प्रकृति केन्द्रित मध्य प्रदेश के पर्यटन (मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम) के प्रतीक चिन्ह में एक शेर दर्शाया गया है क्योंकि उनकी छवि प्रकृति उन्मुखी है।

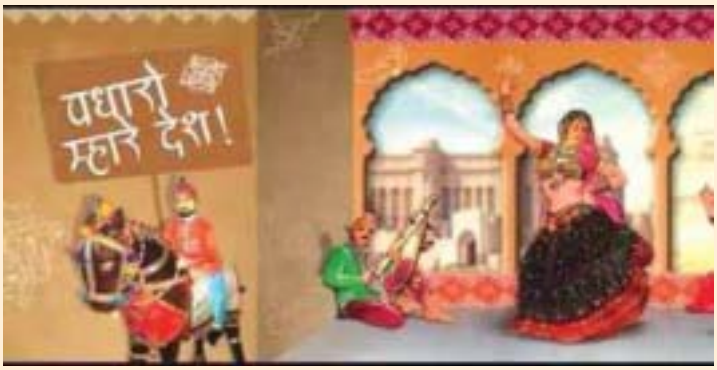

जिस क्षण एक पर्यटक राजस्थान आता है वह रंग बिरंगी पारंपरिक वेशभूषा में आम लोगों को बड़े शहरों की सडकों तक पर देखता है। स्थानीय गाइडों के हाव.भावए उनका बात करने का तरीका, उनका पारम्परिक रूढ़ीगत सत्कार, उसको मध्य. कालीन राजत्व का ध्यान दिलाते हैं. उन्हें ऐसा प्रतीत होता हैं की वह राजा.रानियों के देश में आ गये हैं। वहीं दूसरी ओर मध्य प्रदेश की सारी बातें कान्हा, बांधवगढ़, पेंच और पन्ना के (राष्ट्रीय प्राणी उद्यानों) के इर्द गिर्द ही घूमती हैं। इसमें खजुराहो और भीमबेटका का तड़का लगा लीजिये तथा कुछ आत्मिक उन्नयन के स्थानों – अमरकंटक, चित्रकूट, महेश्वर, ओंकारेश्वर आदि को परोस दीजिये। ऐसे में जो राजस्थान बेच रहा है वह विदेशी सैलानियों को आकर्षित करता है, जबकि मध्य प्रदेश केवल स्थानीय पर्यटकों को लुभा पाता है।

इस तर्क को थोडा और आगे ले जायें तो स्पष्ट है कि राजस्थान में सुविधाएँ, उनकी उत्तमता और उनका निर्धारित मूल्य विदेशियों के अनुरूप हैं जबकि मध्य प्रदेश ने स्थानीय पर्यटकों के मुनासिब सुविधाएँ तैयार कर रखी हैं। राजस्थान में अनेक हवेलियाँ और छोटे-बड़े महल हेरिटेज होटलों में परिवर्तित किये जा चुकें हैं। विश्व के कुछ बेहतरीन होटल राजस्थान में हैं क्योंकि यहाँ आने वाला पर्यटक राजशाही को महसूस करने और उसका लुत्फ़ उठाने के लिए आता है। वह इसके लिए पैसे भी खर्च करने को तैयार रहता है। दिल्ली या फिर आगरा से घूमते हुए वह मध्य कालीन राजपूती राजस्थान में आ जाता है।

राजस्थान की एक टैग लाइन है **"केसरिया बालम, पधारो म्हारे देश"**। लगभग हर बड़े होटल के बाहर, सरकारी होटलों में तो कुर्सी तक पर और ज्यादातर रिसोर्टो में यह वाक्य लिखा होता है। इसके अलावा जहां

कहीं भी पर्यटकों के लिए सांस्कृतिक और संगीत आदि का कार्यक्रम होता है, वहां राग "मांड" पर आधारित एक लोकगीत अथवा बंदिश जरूर गाया जाता है, "प्यारो सांवारे पधारो म्हारे देश" और पर्यटक मेहमान इसका खूब आनन्द लेते हैं।

उधर अन्य राज्यों से घिरा हुआ मध्य प्रदेश अपने जंगलों, वन्य–जीवों, नदियों और उनके तटों पर बने – बसे तीर्थ स्थानों को आम हिन्दुस्तानी के लिए परोसता है। उसका विज्ञापन भी हिंदी में है तथा स्थानीय चैनलों पर स्थानीय श्रोताओं पर केन्द्रित हैं। MPSTDC के लॉज और होटल जंगलों में अवस्थित हैं, जो आम लोगों के लिए उपलब्ध हैं। इसके अतिरक्त,जब विदेशी पर्यटक प्रदेश की सड़कों पर घूमते है तो उन्हें साधारण कपड़ों में ही लोग दिखाई देते है।

मध्य प्रदेश पर्यटन का एक पोस्टर

अपने लक्षित उपभोगता खंड की सहायता के लिए उसके बिक्री प्रतिनिधि मध्य प्रदेश पर्यटन को पोषित करनेवाले महत्व पूर्ण शहरों – नागपुर, मुंबई, लखनऊ, दिल्ली, अहमदाबाद, आदि में तत्पर हैं।

एक शक्तिशाली ब्रांड कैसे बनायें

रणनीति का तात्पर्य केवल कुछ गतिविधियों को छांटना और बजट निर्धारित करना नहीं है। ब्रांड रणनीति का मूल है कि गंतव्य पर विभिन गतिविधियों का आपस में सुसंगत हो तथा इन गतिविधियों का गंतव्य के व्यक्तित्व से तारतम्य में होना चाहिए। गंतव्य पर इन गतिविधियों को ब्रांड मूल्यों को प्रतिष्ठापित करना चाहिए। बार बार यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या गंतव्य की वह सभी गतिविधियाँ जिनके लिए बजट आवंटित हुआ है, का आपस में कोई तालमेल है तथा इन गतिविधियों पर व्यय करने से क्या गंतव्य की आपेक्षित छवि बनाने में सहायता मिलती है। उदाहरण स्वरुप, क्या ग्रामीण पर्यटन को एक राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि इस में यथेष्ठ संभावनाएं हैं या फिर, यह भारत की छवि के माकूल है। यदि इस दूसरे प्रश्न का उत्तर हाँ हैं तो हमें इससे रणनीति का हिस्सा बना लेना चाहिए और अगर इसका उत्तर नहीं में है तो हमे यही रुक जाना चाहिए। अगले स्तर पर यह भी विचार करना होगा की ग्रामीण पर्यटन क्या पूरे देश की छवि के लिए एक सामान रूप से उपयुक्त है या फिर अलग–अलग राज्यों के लिए इसकी उपयुक्तता अलग अलग है?

किसी ब्रांड नीति को छह कसौटियों से गुज़ारना चाहिए।

पहला विभेदन : ब्रांड का पहला काम है कि वह विभेद को सुगम बनाये। प्रतीक चिन्ह, स्लोगन, प्रचार सब ऐसा होना चाहिए कि वह गंतव्य की उसके प्रतिद्वंदियों से अलग छवि बनाये।

दूसरा व्यक्तित्व : ब्रांड केवल आकर्षक और कोलाहलपूर्ण ही नहीं होनी चाहिए अपितु उससे गंतव्य के व्यक्तित्व को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करना चाहिए। ब्रांड को गंतव्य का जीवंत वर्णन करने में सक्षम होना चाहिए। सफलता इसमें निहित है कि ब्रांड गंतव्य के सार को, उसके मूल तत्त्व को कुछ सारगर्भित शब्दों में समेट दे।

तीसरा प्रदेय : ब्रांड में निहित वायदा प्रदेय होना चाहिए, यानि ब्रांड के माध्यम से जो संभाव्य पर्यटक को वायदा किया गया है। वह ज़मीनी तौर पर पूरा किया जा सकने योग्य होना चाहिए। इसमें दो बातें हैं. एक तो गंतव्य पर पर्याप्त और उचित (गंतव्य की छवि अनुरूप) बुनियादी ढांचा उपलब्ध होना चाहिए और दूसरा वहां समर्थ और निपुण सेवाकर्मी होने चाहिए। उन्हें गंतव्य के चरित्र और लोकाचार को निरुपित करते रहना चाहिए।

चौथा विश्वसनीयता : ब्रांड गति की दो डग है। पहला तो ब्रांड एक वायदा है और दूसरा यह वायदा निभना चाहिए। अगर ब्रांड में निहित वायदा पूरा होता है तो आपेक्षित छवि को संबल मिलता है अन्यथा यह छवि धुंधली होती जाती है। ब्रांड नीति केवल यह निश्चित करना ही नहीं है कि गंतव्य पर हमें क्या करना है। इसमें इतना ही ज़रूरी यह निर्णय लेना भी है कि हम क्या क्या नहीं करेंगे भले ही कुछ प्रलोभन क्यों न हों।

पांचवां सहमति : गंतव्य पर सभी हितधारकों, जिनमें समाज एवं समुदाय शामिल हैं, की ब्रांड में प्रतिस्थापित कल्पनाओं और अवधारणा के लिए सहमति नितांत आवश्यक है। ब्रांड के प्रति उनमें उत्साह एवं प्रतिबद्ध ता होनी चाहिए।

छठा सुबोध : ब्रांड ग्राहक के सुगमता से समझ में आने वाला होना चाहिए। उन्हें यह लगना चाहिए की यही वह गंतव्य है जिसे वह छुटियाँ बिताने के लिए तलाश रहे थे और यहाँ उन्हें वह सब मिलेगा जिसकी उन्हें अपेक्षा थी।

अतुल्य भारत अभियान. कुछ विकल्प

क्या ब्रांड Incredible India उपरोक्त वर्णित छह कसौटियों पर खरा उतरता है? साफ़ तौर पर उत्तर है. 'नहीं'। क्या हम एकल ब्रांड विलक्षणता से यह अपेक्षा कर सकते है कि वह पूरे भारत के भाव का द्योतक हो? यह कोई भारत विशेष के लिए चुनौती नहीं है। हमारे समकक्ष अथवा हमसे बड़े गंतव्य जैसे की चीन, अमेरिका, रूस, कनाडा अथवा ऑस्ट्रेलिया ने भी बड़े राष्ट्रीय ब्रांड को ज्यादा तबज्जो नहीं दी है। जबकि भारत ने पिछले डेढ़ दशक के अथक प्रयासों से थाईलैंड, मलेशिया या न्यूज़ीलैण्ड की तरह एक प्रबल राष्ट्रीय ब्रांड 'Incredible India' का सृजन किया है।

समय के साथ राज्यों एवं क्षेत्रों ने अपने पर्यटन की संभावनाओं का विश्लेषण किया है। उन्होंने अपने एकसारकृत विशिष्टताओं को बढ़ावा देने का तथा प्रचारित करने का मन बना लिया है। अतः यह उपर्युक्त समय है कि हमारे सामने अपने जो ब्रांडिंग के विकल्प हैं उनपर एक बार पुनःविचार कर लिया जाए। राज्यों की यह एक न्यायोचित आकांक्षा है कि वह अपने आप को एक अलग ढंग से प्रस्तुत करें क्योंकि एकल 'Incredible India' ब्रांड राज्यों एवं क्षेत्रों के विविधता की पर्याप्त व्याख्या नहीं कर पाता है। उधर हम एक व्याक्यांश से समूची भारतीय विविधता एवं मिश्रण को प्रतिपादित करने का प्रयास करते है। मूलतः हमारे पास तीन विकल्प हैं। पहला विकल्प यह है कि हम एक मुख्य ब्रांड के साथ साथ कुछ क्षेत्रीय उप-ब्रांडों की भी परिकल्पना करें तथा उन्हें अधिकृत करें कि वे स्वावलंबी हो। चाहें तो ये उप–ब्रांड मुख्य ब्रांड से संबद्ध रहें। जैसे की 'Incredible India' का लाभ मध्यप्रदेश 'Heart of Incredible India' के स्लोगन से उठाता है, राजस्थान अपने आप को 'Incredible State of India' कहता है तो ओडिशा स्वयं को 'Essence of Incredible India' कहलाना पसंद करता है।

इसके विपरीत दूसरी रणनीति यह है कि ब्रांड परिवार स्वीकार्य हो। जैसा की कनाडा, चीन, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में होता है कि या तो वे राष्ट्रीय ब्रांड बनाते ही नहीं हैं या फिर उसे अधिक महत्व नहीं देते। वहां राज्यों या क्षेत्रों की अपने ब्रांड होते हैं, उनका अपना पर्यटक खंड होता है जिसे वे लक्षित कर सेवा प्रदान

करते हैं। उदहारण स्वरुप, कनाडा में ओंटारियो, ब्रिटिश कोलंबिया, क्यूबैक आदि के अपने अपने ब्रांड हैं। ऐसे ही ऑस्ट्रेलिया में कुईंसलैंड, विक्टोरिया और वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के अपने अपने ब्रांड हैं।

तीसरी रणनीति समर्थित ब्रांड की होती है। यहाँ स्वतंत्र हितधारकों को यह आज़ादी होती है कि वह गंतव्य के मूल ब्रांड का उपयोग करें। ऐसे में मूल ब्रांड को बार-बार स्मरण किया जाएगा। उदाहरण स्वरुप 'Incredible Tiffin' 'Incredible India' को अनुमोदित करता है। जितने अधिक हितधारक ब्रांड का इस्तेमाल करेंगे ब्रांड को उतनी मजबूती मिलेगी। हालाँकि, गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए ब्रांड प्रबंधक कुछ शर्तें, मानक और दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं। इसका एक उत्कृष्ट उद्धारण ऑस्ट्रेलिया का शहर ब्रिस्बेन है। उन्होंने ब्रिस्बेन से सम्बंधित सम्मेलनों, निवेश, अनुभव, विपणन, व्यापार बैठकों, नगर केंद्र, आदि, के लिए ब्रांड के इस्तेमाल के विस्तृत दिशा निर्देश विकसित किये हैं।

प्रचार प्रबंधन में AIDA मॉडल का ज़िक्र आता है। यहाँ। मायने Awareness (जागरूकता), मायने Interest (दिलचस्पी या रुझान) मायने Desire (इच्छा) और। मायने Action (अमल) होता है। ब्रांड का उपयोग प्रचार के लिए भी होता है। सबसे पहले गंतव्य के लिए जागरूकता लायी जाती है। इसके बाद कुछ ग्राहक (पर्यटक) इस गंतव्य में दिलचस्पी दिखाते हैं, फिर उनमें से कुछ लोग उस गंतव्य के बारे में मन बनाते है और वहां पर जाने की इच्छा जताते हैं। अंत में इनमे से कुछ उस पर अमल करते हैं, यानी कि वह छुट्टी मनाने उस गंतव्य पर जाते हैं। यहाँ यह समझना भी जरूरी है कि किसी भी गंतव्य के अलग अलग पर्यटक खंड इस AIDA की सीढ़ी के अलग अलग पायदान पर खड़े हैं अर्थात किन्ही पर्यटक बाजारों में तो जागरूकता पैदा करनी है, तो दूसरी तरफ जहाँ जागरूकता है, वहां दिलचस्पी पैदा करनी होती है। जहाँ दिलचस्पी हो, वहां ब्रांड प्रचार तंत्र को इस दिलचस्पी को इच्छा में परिवर्तित करना चाहिए और जहां इच्छा है वहां खरीद हो जानी चाहिए। यहाँ यह भी समझना चाहिए कि क्या एक ही ब्रांड यह सारे काम कर सकता है? या फिर अलग अलग पायदान पर स्थित पर्यटक बाज़ार में अलग अलग ब्रांड प्रभावशाली होंगें? क्या जहाँ पहले दो पायदान पर मूल ब्रांड प्रभावी होगा तो आखरी दो पायदान पर उप-ब्रांड ज्यादा कारगर सिद्ध होंगें? विश्व के वह देश जहाँ के लोग अभी हमारे यहाँ कम संख्या में आ रहे हैं या जहाँ भारत के बारे में जानकारी कम है, वहां 'Incredible India' से जागरूकता और दिलचस्पी पैदा की जा सकती है। जब यह हो जाए तो फिर विशिष्ट पर्यटन उत्पादों को लेकर विशिष्ट पर्यटक खण्डों तक जा कर गंतव्य के उप-ब्रांड अपनी पैठ बन सकते हैं। एक बार अपनी बात दोहरा दूँ। एक स्थान होगा, जहां उसका एक व्यक्तित्व होगा। वहां का पर्यटन उस स्थान के व्यक्तित्व के अनुरूप होगा। इस छवि की अपेक्षा लिए एक या अधिक उपभोक्ता खण्डों को पहचान कर लक्षित करना होगा। उस लक्षित खंड के क्रय व्यवहार के अनुसार उस गंतव्य के पर्यटन को सुगम बनाने का प्रयास करना होगा।

इतने समय से हम भी भारत को एक बहुमुखी गंतव्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे। जहाँ सब के लिए सब कुछ मिलता है। पर शायद यह इंगित करने में विफल रहे कि किसको क्या बेच रहे हैं। सभी विशेषताओं का सामूहिक संवर्धन प्रत्येक विशिष्टता को उसके यथोचित दमक से वंचित कर तुच्छ और फीका दिखवाता है। लक्षित पर्यटक वर्ग के लिए यह गंतव्य सामान्य सा लगता है।

आइये अपने 'Incredible India' के ब्रांड की संरचना पर बहस एवं पुनर्विचार को बनायें रखें!

''डा0 निमित चोधरी भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संसथान, नॉएडा में आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। वे Destinaton Management and Marketing, Tourism Entreprenurship, आदि पर शोध एवं शिक्षण करते हैं। nimit.chowdhary@iittmnoida.ac.in पर उनसे संपर्क किया जा सकता है।

योग दिवस पर विशेष लेख

योग बनाए सुंदर

– शहनाज हुसैन

सौंदर्य तन और मन दोनों के स्वास्थ्य का आईना है। मेरा यह मानना है कि अच्छा स्वास्थ्य तथा बाहरी सौन्दर्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि आप हर तरह से स्वस्थ नहीं है तो आपकी सुन्दरता में निखार कभी नहीं आ सकता। आकर्षक त्वचा, काले चमकीले बाल तथा छरहरा बदन केवल स्वस्थ होने से ही हासिल किया जा सकते हैं। मैंने समग्र स्वास्थ्य, आर्युवैदिक सिद्धान्तों को योग के माध्यम से ही प्रोत्साहित किया है। इस समग्र सौंदर्य की अनोखी अवधारणा को विश्वभर में सराहा गया। मेरे विचार में वर्तमान आधुनिक जीवनशैली में समग्र स्वास्थ्य तथा सौंदर्य को प्राप्त करने के लिए योग बहुत प्रसांगिक है। वास्तव में योग मेरे व्यक्तिगत जीवन का अभिन्न अंग है तथा मैंने इसके असंख्य लाभ प्राप्त किए है।

सुन्दर त्वचा तथा चमकीले बालों के लिए प्राणायाम योग का महत्वपूर्ण अंग है। इससे तनाव कम होता है तथा रक्त में आक्सीजन का संचार बढ़ता है। जिससे रक्त संचार में सुधार होता है। उत्तानासन, उत्कटासन, शीर्षासन, हलासन तथा सूर्य नमस्कार आन्तरिक तथा बाहरी सौंदय को निखारने में अहम भूमिका अदा करते है।

नियमित रूप से योग करने के लाभ

योगासन करने से व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक दोनों रूप से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। योग से न केवल मांसपेशियां सुदृढ़ होती है बल्कि शरीर में प्राणशक्ति बढ़ती है तथा आन्तरिक अंगों में दृढ़ता आती है तथा नाड़ी तन्त्र को संतुलन मिलता है। योग मानसिक तनाव से मुक्ति प्रदान करता है तथा मानसिक एकाग्रता प्रदान करता है।

योग प्राचीनकाल की भारतीय विद्या है तथा योग सन्तुलित व्यक्तित्व प्राप्त करने तथा बुढ़ापे को रोकने का प्रभावी उपाय माना जाता है। योग से सांसों पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है तथा योगक्रिया के दौरान सांसों को छोड़ने तथा सांसो को खींचने की विस्तृत वैज्ञानिक प्रक्रिया अपनाई जाती है जिससे शरीर में प्राण वायु का संचार होता है। इससे शारीरिक तथा मानसिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है। यह सौंदर्य के लिए अति आवश्यक है क्योंकि आनन्द का अहसास ही शारीरिक सौंदर्य का अनिवार्य हिस्सा है।

योग से रक्त संचार में सुधार आता है जिसकी वजह से त्वचा के बाहरी हिस्से तक रक्त में आक्सीजन का संचार होता है, सुन्दर आभा का संचार होता है, तथा त्वचा में यौवनपन बना रहता है तथा त्वचा अनेक रोगों से मुक्त रहती है। यही प्रक्रिया बालों पर भी लागू होती है।

जहां तक बाहरी रूपरेखा का प्रश्न है, छरहरे बदन से आप काफी युवा दिख सकते हैं तथा लम्बे समय

तक यौवन बनाए रख सकते हैं। योग से शरीर के प्रत्येक टिशू को आक्सीजन की आपूर्ति होती है जिससे स्वास्थ्य तथा सुन्दरता की राहें खुद ही खुल जाती है। यह बात जान लेना जरूरी है कि यदि आपके जीवन में शारीरिक सक्रियता की कमी है तो आप बुढ़ापे को आमंत्रण दे रहे हैं।

यौगिक आसनों से रीढ़ की हड्डी तथा जोड़ों को लचीला तथा कोमल बनाया जा सकता है। इससे शरीर सुदृढ़ तथा फुर्तीला बनता है, मांसपेशिया सुदृढ़ होती है, रक्त संचार में सुधार होता है, शरीर में उत्साह तथा प्राणशक्ति का संचार होता है तथा बाहरी सौंदर्य तथा अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

नियमित रूप से योग करने के लाभ

सौंदर्य से जुड़ी अनेक समस्याएं तनाव की वजह से उत्पन्न होती है। योग से तनाव कम होता है तथा शरीर शान्तमय स्थिति में आ जाता है, जिससे तनाव की वजह से होने वाले रोग जैसे बालों का झड़ना, मुंहासे, गंजापन तथा बालों में रूसी की समस्या से स्थाई निजात मिल जाता है। योग आसन को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करने वाले योगसाधकों पर किए गए एक अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया है कि योग साधको के व्यक्तित्व, व्यवहार, भावनात्मक स्थायित्व, आत्मविश्वास में सकारात्मक बदलाव देखने में मिलता है। योग का मस्तिष्क, भावनाओं तथा मनोदशा एवं चितवृत्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है। वास्तव में योग नियमित रूप से तनाव को कम करता है तथा आपकी त्वचा में आभा लाता है। योग से आप तत्काल यौवन को ताजगी तथा बेहतर मूड का अहसास करेगें।

जानी मानी सौंदर्य विशेषज्ञा

कोहरे से एक अच्छी बात सीखने को मिलती है कि जब जिंदगी में राह न दिखाई दे रही हो तो दूर तक देखने की कोशिश न करें एक–एक कदम चलते चलो रास्ता खुलता जायेगा।

–शेख सादी

बिना पैसे की दवाई

साधारण कसरत

– अनिल कुमार

व्यायाम आपको न केवल आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करता है, बल्कि तनाव को कम करने के साथ साथ मोटापा भी कम करता है। आत्मविश्वास उत्पन्न कर स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। अधिकतर लोग आज की भाग दौड़ में 40–60 मिनट तक किसी जिम में नही जाकर कसरत नहीं कर पाते क्योंकि समय का अभाव होता है। लेकिन आप अपने घर में ही छोटे छोटे व्यायाम करके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। लम्बे समय तक कसरत करने या फिर न करने से अच्छा है कि थोड़े– थोड़े समय के लिए, टुकड़े टुकड़े में व्यायाम किया जाए और अधिक लाभ उठाया जाए। आज की जिंदगी की भाग दौड़ के चक्कर में ऐसे अनेक व्यायाम है एसे व्यायाम आप घर में ही टीवी देखते हुए या फिर काम करते हुए, कहीं यात्रा में या घरके आसपास कर सकते हैं।

सैर करनाः अक्सर लोग सुबह के समय सैर करने जाते हैं और पार्क में घूमते हुए एक से डेढ़ घंटा लगा देते हैं और फिर बताते हैं कि समय बरबाद हो गया, थक गए। निश्चित रूप से आप थक जाते हैं। फिर आफिस पहुंचने के बाद आप में काम के प्रति कोई उत्साह नहीं रह जाता है। आप ऐसा कर सकते हैं कि जब आप सुबह अपने दरवाजे से अखबार उठाते हैं। तभी बाहर घूमने चले जाएं। हां घूमते हुए ब्रिस्क वाक का ध्यान रखें ओर थोड़ा तेज चलें, इतना तेज भी न चलें कि सांस फूलने लगे। तेज गति से अपने घर के आसपास दो चार चक्कर लगा लें। आपके शरीर के लिए इतना ही काफी है। घर या दफ्तर में कम से कम तीन मंजिल तक लिफ्ट का प्रयोग बिल्कुल भूल जाएं। तीन मंजिल का अर्थ मान लीजिए लगभग 45 सीढियां। इससे आपके पैरों की नसें स्वस्थ रहेंगी और रक्त के तेज बहाव से आपका दिल मजबूती पाएगा।

आजकल दिल्ली जैसे शहर में लोग अधिकतर मेट्रो रेल का उपयोग करते हैं। परन्तु मेट्रो स्टेशन से थोड़ी दूर भी घर हो तो रिक्शा आदि लेकर आते जाते हैं। इससे बचने की करोशिश करें। यदि आपका घर मेट्रो स्टेशन या बस स्टैंड से एक किलोमीटर की दूरी पर है तो पैदल टहलते हुए ही घर आएं। शुरू में आपको यह दूर लगता है तो दो चार दिन के अभ्यास से आप सक्षम हो जाएंगे। यदि सुबह मेट्रो स्टेशन या बस स्टैंड से पैदल ही आते जाते हैं तो फिर सुबह सैर पर जाने की आवश्यकता नहीं है।

घर में पतीली में दाल या दूध उबाल रहे हों और आप खड़े खड़े उसे देख रहे हैं, आफिस में किसी का इंतजार कर रहे हैं या कोई प्रिंट ले रहे हैं, अपने पैरों को पुश अप करिए। आप अपने घुटने और पैरों को एकदम सीधा करके थोड़ा तन कर खड़े हो जाएं और कुछ समय के लिए सांस रोक लें। इससे आपके पैरों की नसों को आराम मिलेगा और सीने के मांसपेशियां भी मजबूत होंगी।

याद करिए अपने बचपन के दिनों को जब घर या स्कूल में कोई गलती होने पर आपको कान पकड़कर उठक–बैठक करने की सजा मिलती थी आज इसे हम पूरी तरह से भुला चुके हैं। जबकि आज हमें इसकी सख्त जरूरत है, यदि स्वस्थ रहना है। विशेषज्ञ इसे स्क्वेट कहते हैं। आपके पैरों और कूल्हों के लिए यह एक चमत्कारिक व्यायाम है। विशेषकर उन लोगों के लिए जो दिन भर कुर्सी पर बैठ कर काम करते हैं और जब उठते हैं तो पैरों या घुटनों में अकड़न या दर्द महसूस होता है तथा नसों में खिंचाव सा लगता है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए

शेष अगले पृष्ठ 39 पर

योग दिवस पर विशेष लेख

दोस्ती साइकिल से

– राज कुमार

भाग–दौड़ भरी जिंदगी में अगर आपके पास फिटनेस पर ध्यान देने, कसरत करने का समय नहीं है तो आप एक साइकिल को अपना मित्र बना लीजिए। पिछले दिनों जापान में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, साइकिल चलाने से बड़ी बीमारियों को दूर रखा जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि साइकिल चलाने से आपको एक नई जिंदगी मिलती है। इसके बहुत से फायदे बताए गए हैं।

साइकिल चलाने से शरीर से पसीना निकलता है जो शरीर में मौजूदा विषैले तत्वों को बाहर ले आता है। साइकिल चलाने से जोड़ों का दर्द या गठिया होने का खतरा कम हो जाता है। साइकिल चलाने से व्यायाम होता है कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रैशर को नियंत्रित होता है आपका हृदय मजबूत होता है। साथ ही, विशेषज्ञ घर या जिम में ट्रेडमिल पर साइक्लिंग की कसरत से दूर रहने की सलाह देते हैं और बाहर खुले में साइकिल चलाने की पुरजोर सिफारिश करते हैं क्योंकि जब आप धूप में साइकिल चलाते हैं तो आपके शरीर को सूरज की रोशनी मिलती है जो विटामिन–डी का प्राकृतिक स्रोत है। विटामिन–डी कई छोटी–बड़ी बीमारियों से आपको बचाता है। विशेषज्ञ आगे बताते हैं कि प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा साइकिल चलानी चाहिए। जो लोग साइकिल से अपने दफ्तर आते हैं वे पूरे दिन चुस्त–दुरुस्त रहते हैं। तो आज से साइकिल अपना मित्र बना लें।

निजी सचिव
पर्यटन मंत्रालय

बस दोनों कानों को पकड़ कर हल्का सी खींचे और अधिक नहीं चार पांच बार ही उठक–बैठक करें। घुटनों/पैरों में अकड़न या दर्द तथा नसों में खिंचाव को दूर करने के साथ ही आपके सुनने की क्षमता बढ़ती है।

अपने दोनों पैरों पर पूरा दबाव देते हुए सीधे खड़े और एक एक पैर को बारी बारी से घुटनों तक थोड़ा थोड़ा मोड़े और प्रयास करें कि आपकी ऐड़ी कूल्हें को छूए। या फिर कुछ देर बाद सीधे लेट जाएं दोनों हाथों को सिर के नीचे रखें। शरीर को ढीला छोड़े और पैरों को सीधा रखें। केवल पांच मिनट ही बहुत है बिस्तर पर या जमीन पर दो मिनट के लिए पेट के बल लेट जाएं फिर दोनों हाथों को सीधा कर अपने शरीर को अकड़ा का ऊपर उठाएं, घुटने सीधे रखें पाव की उंगलियों हाथ की हथेलियों पर भार देते हुए दो तीन बार उठे। पेट घटाना चाहते हैं तो इससे उत्तम व्यायाम नहीं है। इसे क्रंच भी कहते हैं जो पेट की नसों को मजबूत बनाता है।

योग प्रशिक्षक
भारतीय योग संस्थान,
करौल बाग, नई दिल्ली

जल संरक्षण

पानी का करें सम्मान

—मोहन सिंह

यदि हमारे घर का नल लीक हो रहा हो तो हम तुरंत ठीक कराते हैं। आखिर क्यों? क्योंकि धार्मिक दृष्टि से हम नल से पानी का टपकना, अशुभ समझते हैं और मानते है कि टपकते पानी से धन की हानि होती है। इससे लक्ष्मी नाराज हो जाएगी मगर क्या हमने कभी विचार किया कि हम कितना पानी बरबाद करते हैं। नहाने के लिए शॉवर का प्रयोग करते हैं और हमें पता ही नहीं होता कि एक बार नहाते हुए हमने कितना पानी व्यर्थ में बहा दिया? जी हां, एक बार में लगभग 100 से 150 लीटर पानी बर्बाद कर दिया। इतना नहाए नहीं, जितना पानी बरबाद कर दिया।

अधिकतर महिलाएं घर में काम करते समय, विशेषकर बर्तन साफ करते समय, नल को पूरा खोल देती हैं, जिससे काफी पानी व्यर्थ हो जाता है। बहुत से लोग सुबह 'पेस्ट' करते हुए या दाढी बनाते समय नल को खुला रखते हैं। इसी प्रकार आजकल कपड़े धोने के लिए लोग अधिकतर वाशिंग मशीन का उपयोग करते हैं। मगर क्या आपने कभी ध्यान दिया कि इससे आपके वस्त्र अच्छी प्रकार से नहीं धुल पाते हैं। मशीन में तीन से चार बार पानी भरना होता हैं। क्या आप जानते हैं कि वाशिंग मशीन में एक बार में 75 से 100 लीटर तक पानी भरा जाता है इस प्रकार आप एक बार में 300 से 400 लीटर पानी खर्च करते हैं और फिर भी आपके वस्त्र भी अच्छी प्रकार से नहीं धुल पाते हैं। हमने इतना पानी बहा दिया और फिर भी काम ठीक से नहीं हो पाया?

अब पानी के बारे में भी थोडा विचार कर लें। हमारी पृथ्वी के चारों ओर 70 प्रतिशत जल पाया जाता है जो भूमि के अन्दर भी बडी मात्रा में परतों में फैला है। बावजूद इसके यह भी सत्य है कि पृथ्वी के कई हिस्से सूखे है और धरती के कुछ भाग धीरे–धीरे सूख रहे हैं।

इतनी प्रचूर मात्रा में जल उपलब्ध होने के बाद भी यह पानी मनुष्य के पीने योग्य नहीं है क्योंकि इसमें नमक की मात्रा इतनी होती है कि पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों की हड्डियां तक गला देता है। अतः यह मनुष्य के लिए व्यर्थ है। इसीलिए मनुष्य को जीवित रहने के लिए मीठे पानी की जरूरत है। अब यह मीठा पानी आए कहां से?

हमारी धरती के नीचे जो पानी संचित होता है वह भी समुद्र से ही आया हुआ है लेकिन पृथ्वी की सतह में आते आते वह स्वयं ही शोधित हो जाता है। नमक की मात्रा धरती की परतों में ही रह जाती है। मनुष्य को जीवित रखने के लिए प्रकृति द्वारा किया गया अदभुत कार्य ?

फिर भी धरती के कई भागों में पानी शोधित नहीं हो पाता है। कहीं खारा, कहीं एकदम खारा जिसे पिया नहीं जा सकता तो कहीं मीठा अर्थात उसमें खारापन नहीं होता और यही पानी पीने योग्य माना जाता है।

भू–जल के अलावा हम आज भी मुख्य रूप से वर्षा पर ही निर्भर करते हैं। हमारी नदियां, झीलें और तालाब भी वर्षा पर आधारित है। हिमालय क्षेत्र से आने वाली नदियां पहाडों पर पड़ी बर्फ के पिघलने से उत्पन्न जल हमें नदियों के माध्यम से मिलता है। एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि विश्व के अधिकांश देशों में, पानी

के उत्पादन से संबंधित आंकडे उपलब्ध नहीं है। केवल जल की आपूर्ति के आंकडे मिलते है। अब कुछ देशों में मांग के आंकडे भी तैयार किए जाने लगे है।

सरकारें पानी की आपूर्ति की मात्रा और गुणवत्ता को समायोजित करने के लिए जो प्रयास करती हैं वे अधिक कारगर नहीं हो पा रहे हैं। हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 44 प्रतिशत आबादी को ही पेयजल (वह भी शुद्धता की गारंटी के बिना) उपलब्ध है। इसमें भी लगभग 71 प्रतिशत भाग महानगरों और कुछ बडे शहरों को चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि आज भी देश की एक बडी आबादी को सरकार की ओर से पेयजल उपलब्ध नहीं कराया जा सका है। पेयजल के मामले में ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति और भी दयनीय है।

श्रीमद् प्रेमसागर नामक ग्रंथ में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के वस्त्र हरण का एक अध्याय है। इस कथा के द्वारा श्रीकृष्ण ने गोपियों के माध्यम से समाज को यही उपदेश दिया था कि जल को दूषित नहीं करें। इस प्रकार पानी बर्बाद करने से जल देवता वरूण रूष्ट होते हैं।

आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग करने से पानी नष्ट होता है। नदी में नहाने या मवेशियों को नहलाने से जल दूषित होता है। इसी जल का पशु पक्षी ही नहीं मनुष्य भी पीने के लिए उपयोग करते हैं। क्या आप चाहेंगे कि आपको पीने के लिए दूषित जल दिया जाए, कभी नहीं। जब आप दूषित जल नहीं पीना चाहते तो दूसरों को दूषित जल क्यों पिलाते हैं?

अब ऊपर के विषय पर विचार करते हैं। एक ओर नल के रिसने को हम धन की हानि के रूप में देखते हैं, लेकिन जल को बर्बाद करने से होने वाले दुष्परिणामों से हम अंजान हैं। शॉवर के नीचे खडे होकर नहाने से या फिर खडे रह कर देर तक पानी में काम करने से हमारे शरीर पर इसका क्या प्रभाव पडता हैं, हमें पता ही नहीं है। इस तरह खड़े रह कर नहाने से हमारे पैरों की नसों पर धीरे.धीरे खिंचाव पडता है और बाद में यही हल्का हल्का दर्द बन जाता है। जो बाद में बहुत बढ भी सकता है। यही समस्या रसोई में देर तक खडे रहकर पानी में काम करने वाली स्त्रियों के साथ होती है। एक समय के बाद शरीर में, विशेषकर पैरों में, दर्द रहने लगता है और नींद भी सही प्रकार से नहीं आती है। यह स्थिति घरेलु महिलाओं के साथ ज्यादा होती है क्योंकि कामकाजी या नौकरी पेशा महिलाएं अक्सर काम निपटाने की जल्दी में होती हैं और वे एक साथ दो तीन काम करती हैं जिससे उनका 'मूवमेंट' बना रहता है। इस प्रकार पानी का उपयोग भी कम ही करती है।

खड़े होकर नहाने अथवा देर तक खड़े रहकर पानी में काम करने वालों के स्वभाव में धीरे–धीरे चिड़चिड़ापन आने लगता है। मानसिक रूप से स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन छोटा समझने की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है। साथ ही, इस हीन भावना से ग्रस्त होने से एक समय के बाद, दूसरों पर रौब डालने या फिर दिखावे के लिए अनावश्यक चीजें खरीदने अर्थात अधिक से अधिक खर्च करने की इच्छा होती है और करने भी लगते हैं। यह भी तो धन की हानि ही है। क्यों न हम इस तरह मान लें कि लक्ष्मीजी नाराज हो रही हैं? परिणामस्वरूप कई घरों में क्लेश का वातावरण बनने लगता है और अक्सर ऐसी छोटी छोटी बातों को लेकर कलेश होता है जिसके कारण हम समझ नहीं पाते हैं। इस चिड़चिड़ेपन के कारण ही हम या तो अपने में ही मस्त यानि अपने तक ही सीमित रहने लगते हैं और किसी की बात यहां तक कि हंसी मजाक भी सहन नहीं कर पाते और लोगों से कहा–सुनी और कभी–कभी लड़ाई भी हो जाती है।

इसलिए घर में नहाते समय किसी बरतन या बाल्टी में पानी भरें और पटरे या चौकी पर बैठकर ही नहाएं। बाल्टी में इतना ही पानी भरें जितने से आप नहा सके। बड़ी बाल्टी भरकर थोडे से पानी से नहा कर बाकी बचे पानी को फैंकने की आदत से बचें। इससे पानी का सदुपयोग होगा। नदी या तालाब में नहाते समय किनारे बैठकर ही नहाएं या फिर तैरकर नहाएं और उसमें अधिक समय तक न तैरें क्योंकि इससे पानी दूषित होता है।

कपडे धोने के लिए, अच्छा होगा कि आप कपड़ों को दो से तीन घंटे के लिए पहले साबुन में अच्छी प्रकार से डुबा दें। बाद में एक–दो पानी में खंगाल दें। इस प्रकार आपका काम कम से कम पानी में हो जाएगा और वस्त्रों में भी चमक आएगी। रसोई में बर्तन आदि धोते समय नलके के पानी की धारा कम पर रखें। इससे कम पानी खर्च होगा। दाढी बनाते या मंजन करते समय जब जरूरत हो तभी नल चलाएं।

यदि आज, आप इस बारे में किसी से पूछें तो आज के पढ़े लिखे लोगों को यह कहते देखा गया है कि कौन सा वरूण देव है, जो नाराज हो रहा है। परन्तु असली बात को वे समझ नहीं पाते हैं। वरूण देव की नाराजगी तो जग जाहिर है, मगर हम नहीं जान पातें। आने वाले समय में, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास के लिए जल के अत्यधिक दोहन के कारण पानी की कम आपूर्ति के तथा मांग में वृद्धि एक बड़ी चुनौती बनने की संभावना है।

भारत में ही नहीं, विश्व के कई देशों के बीच या उनके अपने अन्दरूनी राज्यों के बीच, जल संसाधनों के बंटवारे के लिए तनाव बढ़ रहा है और विवाद पैदा हो रहे हैं। आगे भी ऐसे विवाद सामने आऐंगे। अनेक क्षेत्रों में जल की कमी इसी कारण हुई क्योंकि वहां के वासियों ने उस समय पानी का सम्मान नहीं किया, उसका ध्यान नहीं रखा। अधिकतर महानगरों में जल की समस्या का यहीं कारण है कि हम इस छोटी सी बात पर ध्यान ही नहीं देते हैं। इसलिए, मित्रों पानी के मूल्य को पहचानिए और जल को बरबाद मत करिए। पानी का हमें संभालकर प्रयोग करना चाहिए यह बातें अपने बच्चों को भी समझाएं कि जल की बर्बादी रोकिए। इससे ही वरूण देव प्रसन्न होंगे और हमें और हमारी आने वाली पीढियों को आशीर्वाद देंगे।

कंसल्टेंट
पत्रिका के प्रबंधन संपादक
पर्यटन मंत्रालय

देश की महान विभूतियां

प्रथम स्वतंत्रता सेनानी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

—हेमन्त कुमार

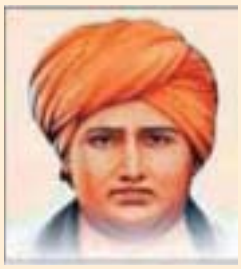

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824—1883)
आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज—सुधारक व देशभक्त

स्वामी दयानन्द सरस्वती को हम सामान्यतः केवल आर्य समाज के संस्थापक तथा समाज—सुधारक के रूप में ही जानते हैं। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए किये गए प्रयत्नों में उनकी उल्लेखनीय भूमिका की जानकारी बहुत कम लोगों को है। जबकि तथ्य यह है कि पराधीन भारत में यह कहने का साहस सम्भवतः सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही किया था कि "भारत भारत वासियों का है"। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, हमारे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (सन् 1857) की क्रान्ति की सम्पूर्ण योजना भी स्वामी जी के नेतृत्व में ही तैयार की गई थी और वही उसके प्रमुख सूत्रधार भी थे। वे अपने प्रवचनों में श्रोताओं को प्रायः राष्ट्रीयता का उपदेश देते और देश के लिए मर मिटने की भावना भरते थे।

1855 में हरिद्वार में हुए कुम्भ के मेले में शामिल होने के लिए स्वामी जी ने आबू पर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की थी। रास्ते में उन्होंने स्थान—स्थान पर प्रवचन किए तथा देशवासियों का मन जानने की कोशिश की कि फिरंगियों के बारे में लोग क्या सोच रहे थे। उन्होंने यह महसूस किया कि लोग अब अंग्रेजों के अत्याचारों से तंग आ चुके थे और देश की स्वतन्त्रता के लिए कैसा भी संघर्ष करने को तैयार हो उठे थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार पहुंच कर वहां एक पहाड़ी के एकान्त स्थान पर अपना डेरा जमाया। वहीं पर उन्होंने पांच ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात की, जो आगे चलकर सन् 1857 की क्रान्ति के कर्णधार बने। ये पांच व्यक्ति थे नाना साहेब, अजीमुल्ला खां, बाला साहब, तांत्या टोपे तथा बाबू कुंवर सिंह। बहुत विचार के बाद, यहीं पर यह तय किया गया कि फिरंगियों के विरुद्ध पूरे देश में सशस्त्र क्रान्ति के लिए आधार तैयार किया जाए और उसके बाद एक निश्चित दिन सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रान्ति का बिगुल बजा दिया जाए। जनसाधारण तथा भारतीय सैनिकों में इस क्रान्ति की आवाज को पहुंचाने के लिए "रोटी तथा कमल" की भी योजना यहीं तैयार की गई थी। इस सम्पूर्ण विमर्श में स्वामी जी की प्रमुख भूमिका रही थी।

तांत्या टोपे

बाबू कुंवर सिंह

योजना–निर्धारण के बाद स्वामी जी तो हरिद्वार में ही रुक गए तथा अन्य पांचों राष्ट्रीय नेता इस योजना को यथार्थ रूप देने के लिए अपने–अपने स्थानों पर चले गए। उनके जाने के बाद स्वामी जी ने अपने कुछ विश्वस्त साधु संन्यासियों से सम्पर्क स्थापित किया और उनका एक गुप्त संगठन बनाया। इस संगठन का मुख्यालय दिल्ली में महरौली स्थित योगमाया मन्दिर में बनाया गया। इस मुख्यालय ने स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। स्वामी जी के नेतृत्व में साधुओं ने भी सम्पूर्ण देश में क्रान्ति का अलख जगाया। वे क्रान्तिकारियों के सन्देश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचाते, उन्हें प्रोत्साहित करते और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं भी हथियार उठाकर अंग्रेजों से संघर्ष करते। सन् 1857 की क्रान्ति की सम्पूर्ण अवधि में राष्ट्रीय नेता, स्वामी दयानन्द सरस्वती के निरन्तर सम्पर्क में रहे।

स्वतन्त्रता–संघर्ष की असफलता पर भी स्वामी जी निराश नहीं थे। उन्हें तो इस बात का पहले से ही आभास था कि केवल एक बार प्रयत्न करने से ही स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकेगी। इसके लिए तो संघर्ष की लम्बी प्रक्रिया चलानी होगी। हरिद्वार में ही 1855 की बैठक में बाबू कुंवर सिंह ने जब अपने इस संघर्ष में सफलता की संभावना के बारे में स्वामी जी से पूछा तो उनका बेबाक उत्तर था "स्वतन्त्रता संघर्ष कभी असफल नहीं होता। भारत धीरे–धीरे एक सौ वर्ष में परतन्त्र बना है। अब इसको स्वतन्त्र होने में भी एक सौ वर्ष लग जाएंगे। इस स्वतन्त्रता प्राप्ति में बहुत से अनमोल प्राणों की आहुतियां दी जाएंगी।" स्वामी जी की यह भविष्यवाणी कितनी सही निकली, इसे बाद की घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया। स्वतन्त्रता– संघर्ष की असफलता के बाद जब तांत्या टोपे, नाना साहब तथा अन्य राष्ट्रीय नेता स्वामी जी से मिले तो उन्हें भी उन्होंने निराश न होकर और सक्रिय प्रयास करने तथा उचित समय की प्रतीक्षा करने की ही सलाह दी।

दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फ़रवरी टंकारा में सन् 1824 में मोरवी के पास काठियावाड़ क्षेत्र गुजरात में हुआ था। उनका नाम मूलशंकर रखा गया। पिता का नाम करशनजी लालजी तिवारी और माँ का नाम यशोदाबाई था। उनके पिता एक टैक्स – कलेक्टर थे और अपने क्षेत्र में ब्राह्मण परिवार के एक समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। अतः उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत आराम से बीता।

प्रखर बुद्धि मूल शंकर के जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं हुईं, जिन्होंने उन्हें पारम्परिक मान्यताओं और ईश्वर के बारे में गंभीर प्रश्न पूछने के लिए विवश कर दिया। एक बार शिवरात्रि के दिन उनका पूरा परिवार रात्रि जागरण के लिए एक मन्दिर में ही रुका हुआ था। सारे परिवार के सो जाने के पश्चात् भी वे जागते रहे कि भगवान शिव आयेंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे। उन्होंने देखा कि शिवजी के लिए रखे प्रसाद को चूहे खा रहे हैं। यह देख कर वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे कि जो ईश्वर स्वयं के प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकता वह मानव की रक्षा कैसे करेगा?

माता–पिता ने 12 वर्ष की अवस्था में ही उनका विवाह करना चाहा (19 वीं सदी के भारत में यह आम प्रथा थी)। लेकिन बालक मूलशंकर ने दृढ़ता से मना कर दिया। वे 1846 फाल्गुन कृष्ण संवत् 1895 में शिवरात्रि के दिन उनके जीवन में नया मोड़ आया। उन्हें नया बोध हुआ और वे घर से निकल पड़े, सत्य की खोज में। यात्रा करते हुए वह गुरु विरजानन्द के पास पहुंचे। आगे चलकर एक पण्डित बनने के लिए वे संस्कृत, वेद शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए।

उन्होंने ने 1875 में एक महान समज सुधारक संगठन – आर्य समाज की स्थापना की। वे एक सन्यासी तथा एक महान चिंतक थे। उन्हों ने वेदों की सत्ता को सदा सर्वोपरि माना। स्वामीजी ने कर्म सिद्वान्त, पुनर्जन्म, ब्रहमचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनाया।

गुरुवर ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पातंजली–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा– विद्या को सफल कर दिखाओ, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओ, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करो, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है।

महर्षि दयानन्द के हृदय में आदर्शवाद की उच्च भावना, यथार्थवादी मार्ग अपनाने की सहज प्रवृत्ति, मातृभूमि की नियति को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह, धार्मिक–सामाजिक–आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से युगानुकूल चिन्तन करने की तीव्र इच्छा तथा भारतीय जनता में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जगाने की भावना थी। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा की परवाह किये बिना भारत के रूढ़िवादी समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बना लिया था।

ऊँ को आर्य समाज में ईश्वर का सर्वोत्तम और उपयुक्त नाम माना जाता है। महर्षि दयानन्द ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गिरगांव मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज का नियम है, प्राणि मात्र का शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नयन करना। संसार के उपकार और कल्याण हेतु प्रयास करना ही मानव और समाज का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

स्वामीजी ने अपने महाग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में सभी मतों में व्याप्त बुराइयों का खण्डन किया है। उनके समकालीन सुधारकों से अलग, स्वामीजी का मत शिक्षित वर्ग तक ही सीमित नहीं था अपितु आर्य समाज ने भारत के साधारण जनमानस को भी अपनी ओर आकर्षित किया।

वेदों को छोड़ कर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाणिक नहीं है – इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना प्रारंभ किया। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धाराप्रवाह बोलते थे। साथ ही वे प्रचंड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थों का भी भली–भांति अध्ययन–मन्थन किया था। स्वामी दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था।

सन् 1872 ई. में स्वामी जी कलकत्ता पधारे। वहां देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। कहा जाता है कि कलकत्ता में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप संस्कृत छोड़कर छोड़ कर आर्यभाषा यानि हिन्दी में बोलना आरम्भ करें, तो और अधिक लोग आपकी बात समझ सकेंगे। इससे देश का असीम उपकार हो सकता है। उसी दिन से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गयी और भारत के उत्तरी, मध्य तथा पश्चिमी प्रान्तों में उन्हे अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ता से स्वामी जी मुम्बई पधारे और वहीं 10 अप्रैल 1875 ई. को उन्होंनें 'आर्य समाज' की स्थापना की।

दिल्ली से स्वामी जी पंजाब गए। पंजाब में उनके प्रति बहुत उत्साह जागृत हुआ और सारे प्रान्त में आर्यसमाज की शाखाएं खुलने लगीं। तभी से पंजाब आर्यसमाजियों का प्रधान गढ़ माना जाता है।

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढियों–बुराइयों को दूर करने के लिए जनमानस को प्रोत्साहित किया और निर्भय होकर उन पर व्याख्यान दिए। वे "संन्यासी योद्धा" कहलाए। उन्होंने जन्म जाति का विरोध किया तथा कर्म को आधार मानकर वेदानुकूल वर्ण–निर्धारण की बात कही। उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति जीविका हेतु कोई भी कार्य करने के लिए स्वतन्त्र हैं। उन्होंने दलितोद्धार और स्त्री की शिक्षा के पक्ष में प्रबल आन्दोलन चलाया। उन्होंने बाल विवाह तथा सती प्रथा का निषेध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण तथा प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत माना। उनके दार्शनिक विचार वेदानुकूल थे। उनके अमर ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" "संस्कार विधि" और

स्वामी दयानन्द के प्रमुख अनुयायियों में लाला हंसराज ने 1886 में लाहौर में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना की तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरूकुल की स्थापना की।

"ऋग्वेदादि भाष्य" में उनके मौलिक विचार सुस्पष्ट रूप में प्राप्य हैं।

स्वामी जी एक योगी थे तथा प्रणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णों तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे। राष्ट्रीय जागरण की दिशा में उन्होंने सामाजिक क्रान्ति तथा आध्यात्मिक पुनरुत्थान के मार्ग को अपनाया। उनकी शिक्षा सम्बन्धी धारणाओं में प्रदर्शित दूरदर्शिता, देशभक्ति तथा व्यवहारिकता पूर्णतया प्रासांगिक तथा युगानुकूल है।

महर्षि दयानन्द समाज सुधारक तथा धार्मिक पुनर्जागरण के प्रवर्तक तो थे ही, वे प्रचण्ड राष्ट्रवादी तथा राजनैतिक आदर्शवादी भी थे। उनका कहना था कि आर्यावर्त में विदेशियों का राज्य होने के कारण ही आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का पालन न करना, विषयासक्ति, मिथ्या भाषावादी कुलक्षण जैसे विकार देश में फैल रहे थे। जब आपस में भाई–भाई लडते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। उन्होंने राज्याध्यक्ष तथा शासन की विभिन्न परिषदों एवं समितियों के लिए आवश्यक योग्यताओं को भी गिनाया है। उन्होंने न्याय की व्यवस्था ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के आधार पर किए जाने का पक्ष लिया। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका कहना था, "मैं मानता हूँ कि गीता में कुछ भी गलत नहीं है। इसके अलावा गीता और वेद किसी व्यक्ति, मत या पंथ के खिलाफ नहीं है।"

प्रारम्भ में बहुत से व्यक्तियों ने स्वामी जी के समाज सुधार के कार्यों में उनका विरोध किया। धीरे– धीरे उनके तर्क लोगों की समझ में आने लगे और विरोध कम हुआ। उनकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ने लगी। इससे अंग्रेज अधिकारियों के मन में यह इच्छा उठी कि अगर इन्हें अंग्रेजी सरकार के पक्ष में कर लिया जाए तो सहज ही उनके माध्यम से जनसाधारण में अंग्रेजों और अंग्रेजी को लोकप्रिय बनाने में सहायता मिल सकती है। इससे पूर्व भी अंग्रेज अधिकारी कुछ अन्य धर्मोपदेशकों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिला चुके थे। इसी विचार के अनुसार, एक ईसाई पादरी के माध्यम से मार्च 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी की तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड नार्थब्रुक से मुलाकात करवायी गई।

गर्वनर जनरल की बात सुनकर स्वामी जी सहज ही सब कुछ समझ गए। उन्होंने दृढ़ता से गवर्नर जनरल को उत्तर दिया, "मैं ऐसी किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि राजनीतिक स्तर पर मेरे देशवासियों की निर्बाध प्रगति के लिए तथा संसार की सभ्य जातियों के समुदाय में भारत को सम्माननीय स्थान प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य है कि मेरे देशवासियों को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो। सर्वशक्तिशाली परमात्मा के समक्ष प्रतिदिन मैं यही प्रार्थना करता हूं कि मेरे देशवासी आपकी विदेशी सत्ता के जुए से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हों।"

लॉर्ड नार्थब्रुक

इधर–उधर की कुछ औपचारिक बातों के उपरान्त लॉर्ड नार्थब्रुक ने विनम्रता से अपनी दो बातें स्वामी जी के सामने रखी– पहली "अपने व्याव्याख्यान के प्रारम्भ में आप जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, क्या उसमें या प्रार्थना के बाद आप अंग्रेजी सरकार के कल्याण की भी प्रार्थना कर सकेंगे।" दूसरी, "आप अंग्रेजी के भी विद्वान हैं, इसलिए अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी का भी उपयोग करिए।"

गवर्नर जनरल को स्वामी जी से इस प्रकार के तीखे उत्तर की आशा नहीं थी। इसके उपरान्त सरकार के गुप्तचर विभाग द्वारा स्वामी जी तथा उनकी संस्था आर्य–समाज पर गहरी निगरानी रखी जाने लगी। उनकी प्रत्येक गतिविधि और उनके द्वारा बोले गए प्रत्येक शब्द का रिकार्ड रखा जाने लगा। आम जनता पर उनके बढ़ते प्रभाव से सरकार को अहसास होने लगा कि यह बागी फकीर और आर्यसमाज किसी भी दिन सरकार के लिए खतरा बन सकते हैं। अतः स्वामी जी को समाप्त करने के लिए भी तरह–तरह के षड्यन्त्र रचे जाने लगे।

वे जोधपुर नरेश महाराज जसवन्त सिंह के निमन्त्रण पर जोधपुर गये हुए थे। वहां उनके नित्य ही प्रवचन होते थे। महाराज जसवन्त सिंह भी उनके चरणों में बैठकर वहां उनके प्रवचन सुनते। दो–चार बार स्वामी जी भी राज महल में गए। वहां पर उन्होंने नन्हीं नामक वेश्या का अनावश्यक हस्तक्षेप और महाराज जसवन्त सिंह पर उसका अत्यधिक प्रभाव देखा। स्वामी जी को यह बहुत बुरा लगा। उन्होंने महाराज को इस बारे में समझाया तो उन्होंने विनम्रता से उनकी बात स्वीकार कर ली और नन्हीं को महल से निकाल दिया। इससे नन्हीं स्वामी जी के विरुद्ध हो गई। उसने स्वामी जी के रसोइए, जगन्नाथ उर्फ कालिया से उनके दूध में पिसा हुआ कांच डलवा दिया। परन्तु थोड़ी ही देर बाद स्वामी जी के पास आकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया और उसके लिए क्षमा मांगी। उदार–हृदय स्वामी जी ने उसे राह–खर्च और जीवन–यापन के लिए पांच सौ रुपए देकर वहां से विदा कर दिया ताकि महाराज और पुलिस उसे परेशान न करें। बाद में जब स्वामी जी को जोधपुर के अस्पताल में दाखिल करवाया गया तो वहां का चिकित्सक भी शक के दायरे में रहा। उस पर आरोप था कि वह औषधि के नाम पर स्वामी जी को हल्का विष पिलाता रहा। बाद में जब स्वामी जी की तबियत बहुत खराब होने लगी तो उन्हें अजमेर के अस्पताल में लाया गया। मगर तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। स्वामी जी को बचाया नहीं जा सका। स्वामी जी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन संध्या के समय हुई थी।

अंतिम शब्द

स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति और स्वदेश की उन्नति के अग्रदूत स्वामी दयानन्द जी का शरीर सन् 1883 में दीपावली के दिन पंचतत्व में विलीन हो गया और वे अपने पीछे छोड़ गए एक सिद्धान्त, **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** – अर्थात सारे संसार को श्रेष्ठ मानव बनाओ। उनके अन्तिम शब्द थे – "प्रभु ! तूने अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।"

डाटा एंट्री आपरेटर

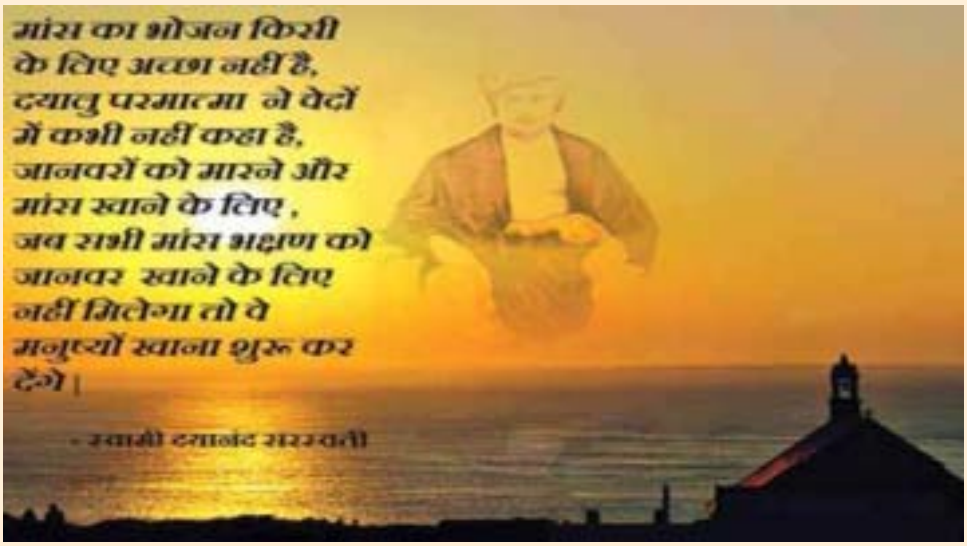

कहानी : राजभाषा नियमों की

यह बात सन् 1975 के मई–जून की है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल की सामान्य मासिक बैठक थी। इसमें कई बड़े मामलों पर विचार किया गया अन्य विषयों में कृषि, सिंचाई ओर श्रम मंत्री बाबू जगजीवन राम ने बेरोजगारी की समस्या की ओर सभी का ध्यान दिलाया। इस पर प्रधानमंत्री ने पूछा कि क्या रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। चूंकि सरकार में पद खाली नहीं थे इसलिए नई भर्ती नहीं की जा सकती थी। साल भर में कुल मिला कर 150–200 लोग ही सेवानिवृत्त हो रहे थे।

प्रधानमंत्री ने पूछा कि क्या कोई नया क्षेत्र नहीं हैं जहां रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके। काफी विचार विमर्श के बाद बाबू जगजीवन राम की ओर से एक आया दिया कि सरकार में हिन्दी में काम नहीं हो पा रहा है और हिन्दी में काम करने की आवश्यकता है, जबकि राजभाषा अधिनियम में हिन्दी में काम करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। लेकिन मंत्रालयों और दूसरे कार्यालयों में प्रशिक्षित स्टाफ नहीं है और अधिकतर कार्मिक अपना काम हिन्दी में नहीं कर पाते है। संसद में जो कुछ काम आ रहा है वह भी अच्छी कोटि का नहीं होता है, लोग जैसे तैसे हिन्दी करके भेज देते हैं। प्रधानमंत्री को यह सुझाव अच्छा लगा। अगली बैठक में इस मद को एजेंडा के रूप में प्रस्तुत करने के निदेश दिए गए।

अगली बैठक में तत्कालीन गृहमंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी ने बताया कि 1963 में अधिनियम तो बना दिया गया था उसमें कुछ प्रावधान भी कर दिए गए थे लेकिन परन्तु उसका पालन करना मुश्किल हो रहा हे क्योंकि उसे करने के लिए कार्यबल उपलब्ध नहीं है। कारण हिन्दी में प्रशिक्षण नहीं हो पा रहा है और कुछेक कार्यालयों को छोड़कर अधिकतर में हिन्दी में काम करने के लिए अलग से कोई स्टाफ नहीं है। हिन्दी टाइपिस्टों, आशंलिपिकों, अनुवादकों और पूरे काम की निगरानी करने के लिए अधिकारी हो सकते हैं। एक अनुमान लगाया गया कि इससे केन्द्र सरकार तथा इसके अन्य कार्यालयों में लगभग 10,00 और कुछ अधिक पद सृजित हो सकेंगे। यह निर्णय लिया गया कि इससे पहले इसके तहत नियम बनाए जाएं ताकि बेहतर कार्य की सभावनाएं बढ़ाई जा सके।

इसके लिए गृह मंत्रालय को नियम बनाने के लिए आदेश दिए गए। लगभग 20 दिन की मेहनत के बाद राजभाषा नियम तैयार कर सरकार के अनुमोदन के लिए भेजे गए। जिसमें कुल 11 नियम बनाए गए थे, जिनका उल्लेख अगले पृष्ठों पर किया गया है। अनुमोदन के लिए भेजी गई फाइल वापस आने पर देखा कि उसमें प्रधानमंत्री के हाथ से लिखा था।

"नियम 12 : इन नियमों के अनुपालन का दायित्व कार्यालय के प्रधान का होगा।"

(गृहमंत्रालय में कार्यरत तत्कालीन अवर सचिव श्री हरि बाबू कंसल तथा उपसचिव डा० राजमणि तिवारी से हुई चर्चा के आधार पर प्रस्तुत (राजभाषा नियम बनाने में इन दोनों अधिकारियों का बड़ा योगदान था)

प्रबंध संपादक

हिन्दी दिवस पर विशेष लेख

खुलकर पढ़िए, लिखिए, बोलिए हिंदी

– बालेन्दु शर्मा दाधीच

दृश्य एक : मैं न्यूयॉर्क से नई दिल्ली आने वाली एमिरेट्स की उड़ान में बैठा था। एयर होस्टेस यात्रियों को अखबार बांट रही थी। फटाफट आगे बढ़ते हुए उसने मेरे पड़ोस की सीट पर बैठे सज्जन को दिल्ली का एक राष्ट्रीय हिंदी अखबार थमा दिया। उन्होंने तुरंत प्रतिरोध किया और अंग्रेजी में बोल–मुझे आप अंग्रेजी अखबार दीजिए, मैं हिंदी को 'मैनेज' नहीं कर सकता। विमान परिचारिका विदेशी थी। उसने थोड़ा खिन्न होकर उन्हें अंग्रेजी अखबार थमा दिया। मैंने कहाए मुझे हिंदी अखबार दे दीजिएए मैं हिंदी को अच्छा 'मैनेज' कर लेता हूं।

दृश्य दो : न्यूयॉर्क से लौटे यात्री नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के बाहर आकर टैक्सी वालों के साथ जूझ रहे हैं। मैंने देखा–मेरे पड़ोस में बैठे वहीं सज्जन खांटी पंजाबी मिश्रित हिंदी में एक ड्राइवर के साथ मोल–भाव करने में जुटे हैं। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने उन्हें तिरस्कार की नजर से देखते हुए कहा कि जनाब आप तो हिंदी को मैनेज ही नहीं कर सकते थे, अब क्या हुआ?

एक अनजाना डर

पता नहीं, वह कौन सा डर है जो हम हिंदी वालों को आत्मविश्वास और आत्मगौरव के साथ हिंदी बोलने, लिखने, पढ़ने से रोकता है। मैं गुडगांव में सिटी बैंक की शाखा में गया। गेट पर रखे रजिस्टर में हिंदी में अपना नाम लिखा और हिंदी में ही दस्तखत किए। मेरे अलावा करीब आधा दर्जन और भी लोग थे वहां, जिन्होंने यही औपचारिकताएं अंग्रेजी में पूरी कीं। यहां तक ठीक था, लेकिन नोट करने वाली बात यह थी कि गेटकीपर ने मुझसे मेरा पहचान पत्र दिखाने को कहा। मैंने अपनी आईडी दिखाई और पूछा कि क्या यह इसिलए कि मैंने अपना नाम हिंदी में लिखा है? वह कुछ नहीं बोलाए मुस्करा भर दिया।

मैंने कहा कि भाई मुझे अंग्रेजी बोलनी–लिखनी आती है लेकिन मैं अपनी भाषा से प्यार करता हूं। अपने देश में, अपनी ही भाषा बोलने वालों को ऐसी तिरस्कार भरी नजरों से मत देखोए खासकर तब जबकि तुम ढंग से हिंदी भी नहीं बोल पाते। आसपास खड़े लोगों ने मुझे कुछ ऐसे देखा जैसे मैं अभी–अभी अजायबघर से निकल कर आया हूं।

मुझे नहीं लगता कि उनमें से किसी भी व्यक्ति ने इस घटना से प्रेरित होकर हिंदी में दस्तखत करने शुरू किए होंगे। लेकिन मैं ऐसी गुस्ताखियां करता हूं, करता रहूंगा। मसलन, मैं जिस बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता हूं, सोशल मीडिया पर उसके विभिन्न समूहों में हिंदी में संदेश भेजना मुझे पसंद है। ट्वीट भी मैं हिंदी में ही करता हूं और फेसबुक पर मेरे 95 फीसदी पोस्ट हिंदी में ही होते हैं। बस–ट्रेन में यात्रा के दौरान मैं फर्ख के साथ हिंदी की पत्रिकाएं और किताबें पढ़ता हूं। जब लोग हिंदी के प्रति मेरी संकोचहीनता, बेशर्मी, आत्मविश्वास और गौरव–भाव देखते हैं तो वे भी खुलने लगते हैं और हिंदी में बोलने लगते हैं।

ऐसे लोगों से मैं पूछना चाहता हूं कि हजरत आप लखनऊ, पटना, शिमला या जयपुर से आते हैं तो ऐसी क्या मजबूरी है कि आप जबरिया अंग्रेजी परस्त और हिंदीहीन दिखने के लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं? अमां

लखनऊ वाले विकास कुमार या जयपुर वाले आनंद प्रकाश बने रहने में कौन सी तकलीफ है जो आप दिल्ली वाले गुप्ता सर या मुंबई वाले मिस्टर शर्मा बनने को आमादा हैं? बच्चों को पढ़ा लीजिए पब्लिक स्कूल में, उन्हें सीखने दीजिए अंग्रेजी, पर अंग्रेजी अपनाने के लिए हिंदी त्यागना क्यों जरूरी है? जनाब, दोनों में कोई विरोधाभास नहीं है। आप अंग्रेजी में काम करत हुए भी अपनी भाषा से प्यार कर सकते हैं। आपको ऐसा करने से कोई नहीं रोकता।

अभी पिछले सितंबर में भारतीय रिजर्व बैंक के मुंबई स्थित मुख्यालय में मेरा व्याख्यान था– हिंदी और तकनीक पर। खुशी हुई यह देखकर कि व्याख्यान स्थल कर्मचारियों से खचाखच भरा था। इसकी बहुत सी वजहें हो सकती हैं। लेकिन एक अहम वजह यह रही कि श्री रघुराम राजन, जो उस समय तक रिजर्व बैंक के गवर्नर थे और जो लंबे अरसे तक विदेश में ही रहे, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बेहद सम्मान की दृष्टि से देखते थे। बैंक की तरफ से हिंदी में होने वाले पत्र–व्यवहार में वे हिंदी में ही दस्तखत करते थे और गवर्नरी संभालने के बाद अपनी हिंदी सुधारने के लिए उन्होंने कई महीनों तक एक शिक्षक की सेवाएं लीं। जब दुनियां के शीर्ष अर्थशास्त्रियों और वित्तीय प्रशासकों में से एक, मूलतः तमिलभाषी रघुराम राजन को हिंदी लिखने, बोलने और सीखने में कोई संकोच नहीं तो कानपुर, कोटा या जबलपुर जैसे हिंदी भाषी शहरों के आप–हम को क्यों तकलीफ है ? हिंदी हमारी रोजमर्रा की भाषा है, अंग्रेजी नहीं। मुझे नहीं लगता कि हिंदी से किसी को भी दिक्कत होनी चाहिए।

अंत में हे हीन भाव से ग्रस्त हिंदी भाषी, अब शर्म, संकोच, कुंठा और आत्महीनता के खोल से बाहर आ जाओ क्योंकि तुम्हारी भाषा में ऐसी कोई कमी नहीं है जो इसे दुनिया की दूसरी आधुनिक भाषाओं के सामने छोटा सिद्ध कर सके। यह हर दृष्टि से एक सक्षम भाषा है, निरंतर बढ़ती हुई भाषा है और दुनिया की दूसरी नहीं तो तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। न उसके शब्द भंडार में कोई कमी है, न साहित्यिक विधाओं का ही टोटा है। किसी भी तरह के विचारों और तथ्यों को स्वर और लिपि देने में वह सक्षम है। मनोरंजन, मीडिया और तकनीक जैसे क्षेत्रों में वह बहुत मजबूत है। कुछ क्षेत्रों में वह कमजोर है, जैसे कारोबार, कानून और पेशेवर शिक्षा। अन्य भाषाओं की भी यही स्थिति है। वे कुछ क्षेत्रों में कमजोर हैं तो कुछ में मजबूत। हिंदी को उन क्षेत्रों में भी मजबूत बनाने में हाथ बंटाओ, अंग्रेजी का खोल ओढ़कर उससे नकली दूरी मत बनाइए।

तकनीकविद् और वरिष्ठ पत्रकार
नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली से साभार 14.11.2016

असम में नदी द्वीप

असम का माजुली नदी द्वीप

– सुधीर कुमार

यदि आप पर्यावरण और हरियाली प्रेमी हैं और किसी प्रदूषण मुक्त स्थान पर जाना चाहते हैं तो आप बिना झिझक असम के जोरहाट में माजुली चले आइए। स्वच्छ वातावरण के साथ जंगल नदियां ही नहीं प्रतिदिन शाम के समय जगह जगह हो रहे नृत्य संगीत के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ही नहीं संकीर्तन का भी आनन्द लीजिए और साथ ही चखिए विविध स्वादिष्ट व्यंजन।

असम की राजधानी गुवाहाटी से लगभग 200 किलो मीटर पूर्व में तथा जोरहाट शहर से मात्र 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित माजुली द्वीप, एक प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में माना जाता है। माजुली को असम की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है क्योंकि यह असम में ही नहीं, पूर्वोत्तर क्षेत्र में नव वैष्णव विचारधारा का मुख्य केंद्र है।

जैसे ही 08 सितम्बर, 2016 को "गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" ने माजुली को विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप घोषित किया असम सरकार ने माजुली का दर्जा उपमंडल से बढ़ाकर इसे प्रदेश का 35 वां जिला बना दिया। प्रदेश के नए मुख्य मंत्री श्री सर्बानन्द सोनोवाल, जिनके चुनाव क्षेत्र में माजुली आता है, ने माजुली में ही मंत्रीमंडल की बैठक बुलाई और मंत्रीमंडल ने इस द्वीप के संरक्षण और विकास के लिए सरकार के दृढ निश्चय की जानकारी दी। मंत्री–मंडल ने बाढ़ तथा भूमि–कटाव को रोकने के लिए एक जल संसाधन केन्द्र तथा द्वीप में पक्की सड़कें बनाने की योजना तैयार की है। इस बारे में केन्द्र सरकार ने पहले ही मंजूरी प्रदान कर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को एक प्रस्ताव भेज रखा है। नदी द्वीप को जोड़ने के लिए 121 कि.मी. लम्बे दो पुल एक जोरहाट तथा दूसरा लखीमपुर से जोड़ने के लिए बनाने का प्रस्ताव है।

द्वीप के विकास के लिए 1200 करोड़ रूपए का एक पैकेज रखा गया है, जिससे एक सांस्कृतिक विश्वविद्यालय और एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय भी खोलने का प्रस्ताव है।

ब्रह्मपुत्र और उसकी सयहायक नदियों में जमा गाद निकालने, जिससे बाढ़ नियंत्रण और भू–कटाव को रोकने के लिए एक परियोजना के निधिकारण के लिए विश्व बैंक तथा एशियाई विकास बैंक से सहायता की मांग की गई है। इस परियोजना में द्वीप के चारों ओर सीमेंट की पक्की दीवारें बनाने के साथ साथ भू–कटाव को रोकन के लिए लम्बी जड़ों और रेशे वाली घास लगाने का भी प्रावधान किया गया है।

आशा है कि इन सब उपायों से माजुली पहूंचने में बहुत आसानी हो जाएगी। इससे यहां की कला, संस्कृति, आध्यात्म के साथ साथ यहां की प्राकृतिक सुन्दरता को देखने और अनुभव करने के लिए और अधिक देशी तथा विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा।

माजुली के वैष्णव सत्र राज्य की सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार के लिए एक बहुत अच्छा माध्यम रहें हैं। यहाँ 16 वीं शताब्दी के बाद से बने अनेक सत्र, जिन्हे हम आश्रम कह सकते हैं, देखे जा सकते है। पर्यटक इन सत्रों में प्राचीन असमीया कलाकृतियों, अस्त्र–शस्त्र, बर्तनों, वस्त्र, आभूषण और हस्तशिल्प के व्यापक संकलन को देख सकते हैं और असम की विरासत को महसूस कर सकते हैं।

माजुली या **माजोली** असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में बसा एक बड़ा नदी द्वीप है। ब्रिटिशईस्ट इंडिया कम्पनी के ए.जे. मिफेट मिल्स के सर्वेक्षण अनुसार 1853 में इसका कुल क्षेत्रफल 1246 वर्ग किमी था परन्तु प्रतिवर्ष बाढ़ और भू–कटाव के चलते, 2001 के सर्वे के अनुसार, यह सिमट कर मात्र 421.65 वर्ग किमी रह गया है। सच्चाई ये है की माजुली प्राकृतिक और मानवजनित कारणों से दिन प्रतिदिन सिकुड़ रहा है और इसके अस्तित्व पर सवालिया निशान लगा हुआ है।

माजुली द्वीप के दक्षिण में बह्मपुत्र नदी और उत्तर में खेरकुटिया खूंटी नामक नदी–धारा बहती है। खेरकुटिया खूंटी ब्रह्मपुत्र नदी से निकलती है और आगे चलकर फिर उसी में मिल जाती है। उत्तर में सुबनसिरी खेरकुटिया खूंटी से जुड़ जाती है। माजुली द्वीप कालांतर में ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियांए विशेषकर लोहित नदी के दिशा और क्षेत्र परिवर्तन की वजह से बनी है।

हाल ही तक, माजुली का जिला मुख्यालय जोरहाट, शहर था, जो यहाँ से 20 कि.मी. दूर है। माजुली जाने के लिए जोरहाट से नियमित परिवहन सेवाएँ उपलब्ध हैं। आज भी माजुली जाने के लिए "फेरी" लेना जरुरी है क्योंकि यहाँ नदी पर पुल नहीं है। इतना सब विशेष होने के बाद भी द्वीप की किस्मत नहीं बदली। अंत में केन्द्र सरकार और असम की नई सरकार ने माजुली के विकास के लिए उपाय करते हुए कई योजनाएं और परियोजनाएं शुरू करने का निश्चय किया है।

इतिहास

वास्तव में 7वीं सदी की शुरुआत में, माजुली एक बड़े क्षेत्र का एक हिस्सा था और ये काफी संकरा और लम्बा था। उस समय इससे "माजोली" यानी दो समानांतर नदियों के बीच की जगह, के नाम से जाना जाता था। माजुली के उत्तर में ब्रह्मपुत्र नदी (जिसे पहले लोहित, लुहित या लुईत के नाम से जाना जाता था) बहती थी और इसके दक्षिण में दिहिंग नदी बहती थी, जिसकी अनेक सहायक नदियाँ थीं जैसे– दिखाँ, धनशिरी, भोगदोई, झांजी। ये सभी धाराएं लाखू नामक स्थान में आकर मिल जाती थीं। अलग अलग नदियों द्वारा लाये गए मिट्टी और रेत के जमाव से नदियों की धाराओं में बदलाव होने लगा और धीरे धीरे इसने एक अलग भूखंड का स्वरुप ले लिया।

भौगोलिक दृष्टिकोण से माजुली एक असमतल भूमि थी। यह जल के अनेकों चैनलों के मध्य स्थित छोटे–छोटे टापुओं (स्थानीय भाषा में "छापोरी") का एक नेटवर्क था और लोहित तथा दिहिंग नदियों से घिरा हुआ था। प्राकृतिक संसाधनों के विविध रूपों– दक्षिणी और उत्तरी किनारे पर बड़ी नदियाँ, सहायक नदियों के नेटवर्क और मध्य में छोटे छापोरी अर्थात द्वीप होने के कारण एक विशाल मध्य नदी डेल्टा विकसित होने लगी।

कालक्रम में विभिन्न कारणों से ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियों का दिशा परिवर्तन हुआ इसी तरह की 1750 में भयंकर बाढ़ आई थी जिसके कारण ब्रह्मपुत्र दो भागों में विभक्त होकर कई नालों में बदल गई। इनमे से एक मुख्य धारा उत्तर की तरफ से बहने लगी जबकि दूसरी दिहिंग नदी के साथ मिलकर दक्षिण की ओर से बहने लगी और माजुली द्वीप विशाल भूखंड बन गया।

मिट्टी और रेत के लगातार जमाव से यह भूमि उपजाऊ होने लगी और एक बड़े हिस्से को जन बस्ती के लिए उपयुक्त बनती गई। प्राकृतिक संसाधनों के विविध रूपों ने इस जगह के समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

माजुली जोरहाट जिले के उत्तर में मुख्य भूमि से 2.5 कि.मी. की दूर है और ब्रह्मपुत्र नदी मुख्य भूमि से अलग करती है। यहां फेरी द्वारा यह निमाटीघाट (मुख्य भूमि की ओर) और कमलाबारी (माजुली की ओर) से जुडती है। उत्तरी तटों पर द्वीप के निकटवर्ती मुख्य भूमि लखीमपुर और ढकुआखाना हैं।

माजुली नदी द्वीप ब्रह्मपुत्र बेसिन के विशाल गतिशील नदी प्रणाली का एक हिस्सा है। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लंबाई 2706 किमी और जलग्रहण क्षेत्र 580,000 वर्ग किलोमीटर है। ब्रह्मपुत्र के इस नदी प्रणाली में एक नदी डेल्टा, माजुली द्वीप का बनना एक असाधारण भौगोलिक घटना है। ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी और दक्षिणी किनारों पर दलदली इलाकें हैं जो की ऐसी जल प्रणाली की विशेषता होती है। ऐसे दलदली इलाकों को यहाँ की भाषा में "बील" कहते हैं। ये बील वनस्पतियों और जीव के प्रजनन और विकास के लिए उत्तम वातावरण प्रदान करते हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी बाढ़–सक्रिय मैदानों के बीच से गुजरती है और उसकी अनेक उपनदियाँ दक्षिण और उत्तर दोनों तरफ से आकर जुडती है। इसीलिए माजुली गंभीर बाढ़ में ही नहीं बल्कि सामान्य बाढ़ में भी जलमग्न हो जाता है। कई कारणों से गर्मियों में मानसून के महीने माजुली के लिए मुख्य बाढ़ का मौसम है।

ब्रह्मपुत्र तथा सुबनिसरी नदियों के बीच बसे नदी द्वीप "माजुली" को गिनीज बुकऑफ वर्ल्ड रिकार्ड ने विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप घोषित किया हैं।

अभी माजुली में केवल फेरी से ही जाया जा सकता है। जोरहाट से 20 कि.मी. दूर तथा वहां से फेरी से छः कि.मी. नदी पार कर ही द्वीप में पहुंचा जा सकता है।

अभी यहां 32 वैष्णव मठ हैं जो नव वैष्णववाद की संस्कृति, कला और आध्यात्म को बढ़ावा देने में लगे हैं।

150वीं शताब्दी से ही माजुली नव वैष्णववाद की संस्कृति और आध्यात्म का गढ़ माना जाता है। वैष्णववाद के संस्थापक शंकर देव अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए यहां पहुंचे थे। परन्तु इसकी प्राकृतिक सुन्दरता को देखकर हुए उन्होंने यही बसने का निश्चय किया और पहले वैष्णव मठ की स्थापना की थी। यहां पहुंचने के लिए आज भी केवल नावें और फेरी ही एकमात्र साधन है।

असम में भू–कटाव हर नदी के तट पर होने वाली एक प्राकृतिक घटना है क्योंकि यहाँ की मिट्टी रेतीली है। सन् 1950 के विनाशकारी भूकंप के बाद से द्वीप के दक्षिणी किनारे पर लगातार कटाव से कई गांवों और सत्र नदी के गाल में समा चुके हैं। भूकटाव ने माजुली द्वीप के पर्यावरण, सामाजिक संरचना और आर्थिक विकास को खासा प्रभावित किया है।

असम के अन्य भागों की तरह माजुली द्वीप में भी उप–उष्णकटिबंधीय मानसून जलवायु पाया जाता है। यहाँ की जलवायु परिस्थितियाँ भारत के पूर्वोत्तर मैदानी क्षेत्रों के जैसे ही है। ग्रीष्मकाल आमतौर पर गर्म रहता हैं और अत्यधिक नमी बनी रहती है। क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 215 सेमी है। वास्तव मेंए माजुली यात्रा करने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च है।

गर्मी– माजुली में गर्मी के मौसम मध्य मार्च से जुलाई अंत तक होता है। इस समय यहाँ काफी गर्मी होती है और आर्द्रता प्रतिशत काफी ऊँचा होता है। इन महीनों के दौरानएतापमान सर्वाधिक 36 डिग्री सेल्सियस भी हो सकता है। पर्यटकों ऐसे मौसम से दूर रहना पसंद करते हैं।

मानसून– माजुली में मानसून का मौसम जुलाई के आसपास शुरू होता है और अगस्त तक रहता है। इस समय बाढ़ का तांडव चरम पर होता है। ऐसे में वहां न जाना ही अच्छा है।

सर्दी–सर्दियों के मौसम नवंबर से शुरू होता है और फरवरी तक रहता है। मौसम के दौरान औसत तापमान सर्वाधिक 18 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 7 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है। बारिश कम या नहीं के बराबर होती है। यहां सभी प्रमुख उत्सव तथा त्योहारों को सर्दियों के मौसम में ही आयोजित किया जाता हैं जब मौसम शांत और सुखद होता है।

माजुली की जनसंख्या का मजेदार पहलू ये है कि 1971 के बाद से यहाँ रहने लायक क्षेत्र घटा है जबकि जनसंख्या में एकदम से बढोतरी हुई है। यहां के मूल निवासियों के रोज़गार, शिक्षा आदि की तलाश में बड़ी संख्या में लोगों का द्वीप से बाहर जाने के बावजूद, असम के बाहर के लोगों के आने तथा कुछ अमीर अमीर लोगों द्वारा यहां जमीन लेकर बड़े बड़े घर/फार्म हाउस बनाने से जनसंख्या में इज़ाफा हुआ है।

सांस्कृतिक राजधानी

माजुली में विभिन्न जनजातियों के लोग रहते हैं। जिन्होनें माजुली की शानदार सांस्कृतिक विरासत में अमूल्य योगदान दिया है। यहाँ जनजातियों के लोग ज्यादा बसते हैं। द्वीप में 57% जनसंख्या जनजातियों की है जिनमें मिसिंग, देउरी और सोनोवाल–कछारी शामिल हैं। माजुली की आबादी में असमिया के अन्य उपजातियां जैसे–कलिता, नाथ, अहोम और ब्राह्मण भी रहते हैं। इन के अलावा, कमोवेश नेपाली, बंगाली, मारवाड़ी और मुस्लिम भी वर्षों से यहाँ वास कर रहे हैं।

बीहू नृत्य का एक दृश्य

माजुली में मिसिंग समुदाय के लोगों की संख्या लगभग 68,000 के आसपास है (2011 जनगणना के आधार पर)। मिसिंग जनजाति को "मिरी" भी पुकारा जाता है। यह संख्या द्वीप की कुल आबादी का 41 प्रतिशत है। मिसिंग जनजाति सदियों पहले अरूनाचल प्रदेश से यहां आकर बस गए थे। मिसिंग लोग वास्तव में बर्मा (वर्तमान म्यांमार) देश सेताल्लुक रखने वाले मंगोल मूल के लोग हैं। लगभग 700 साल पहले वे बेहतर जीवन की तलाश में अरुणाचल प्रदेश के रास्ते होते हुए असम आये और ब्रह्मपुत्र नदी के सहायक नदियों जैसे दिहिंग, दिसांग, सुवनशिरी, दिक्रंग के इर्द गिर्द बसने लगे। इसी क्रम में माजुली में भी मिसिंग लोग बहुतायात में बस गए। नदी के किनारे बसने के कारण वे बहुत कुशल नाविक और मछुआरे होते हैं। ऐसा कहा जाता है की हर दूसरा मिसिंग बच्चा बढ़िया तैराक होता है। ये लोग नदी किनारे की ज़िन्दगी के आदी हैं और नदी को अपना जीवनदात्री मानते हैं।

मिसिंग लोगों के विशिष्ट लोक संगीत, नृत्य और संगीत वाद्ययंत्र होते है। इनमें से अधिकांश का इस्तेमाल उनकी सामाजिक और धार्मिक उत्सवों के दौरान होता हैं। एक परंपरागत मिसिंग घर लठ्ठों (आमतौर पर बांस) के ऊपर बना होता है। ऐसा वे अचानक आने वाली बाढ़ से बचने के लिए करते है। इनके घरों की छतें फूस से बनी होती हैं और फर्श, दीवारों और छत के लिए बांस बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है। मिसिंग लोग यूँ तो विभिन्न त्योहारों को मनाते हैं लेकिन उनके दो मुख्य पारंपरिक त्योहार हैं– आली–आय–लिगांग और पोराग। ये त्यौहार उनके कृषि के साथ जुड़े होते हैं। मिसिंग महिलायें कुशल बुनकर होतीं हैं। वे अपनी किशोरावस्था तक पहुँचने से पहले ही बुनकर कला में निपुण हो जाती हैं। उन्हें प्राकृतिक रंगों का भी अच्छा ज्ञान होता है। मिसिंग महिलाओं को कपड़ों के विदेशी डिजाइन और मनभावन रंग संयोजन के लिए जाना जाता है। वे "मिरजिम" नामक विश्व प्रसिद्ध कपड़े बनाती हैं। यहाँ लगभग 20 गाँव कच्चे रेशम की एक किस्म "एंडी" का उत्पादन करते है और उसके उत्पाद तैयार करते हैं। विशेष रूप से उनके उत्तम हथकरघा उत्पाद मिरीजेन शॉल और कंबल की मांग पूरे देश में रहती है।

माजुली में देउरी लोगों की जनसंख्या तीन प्रतिशत है और उनकी मुख्य आबादी दो गाँवों श्रीराम देउरी और मेजर देउरी गाँव तक ही केन्द्रित है। देउरी लोगों को जनजातियों में पुरोहित वर्ग माना जाता है। अपने स्वयं के बोली और संस्कृति अक्षुण्ण रखते हुएए माजुली के देउरी लोग बिहू मनाते हैं और अलग नृत्य और गीत की शैली के साथ हुरियारंगाली भी मनाते हैं। उनकी जीवन शैली मिसिंग लोगों से काफी मिलती जुलती है।

यहाँ का मुख्य उद्योग कृषि है और मुख्य उत्पाद धान/चावल है। यहाँ एक समृद्ध और विविध कृषि परंपरा है। माजुली में अन्य उद्योग भी प्रचलित हैं जिनमें मछली पालन एक पारंपरिक उद्योग है। यहाँ स्थित 60 से अधिक बड़े जलनिकायों (बील) माजुली निवासियों को बड़ी संख्या को आजीविका प्रदान करते है। पशु पालन और डेयरी भी लोगों के आजीविका का प्रमुख स्रोतों में से एक है। माजुली मिट्टी के बर्तनों के उत्पाद और कलाकृतियों के डिजाइन और गुणवत्ता के लिए भी प्रसिद्ध है। हालांकि मांग में कमी के चलते यह उद्योग मुमूर्ष अवस्था में है।

इसके अलावा, जलीय इलाका एवं बाढ़ के खतरे के कारण नाव एक उपयोगी साधन है, इसीलिए नाव बनाने की कला यहाँ का एक पारंपरिक व्यवसाय है। यहाँ के नाव बनाने में माहिर लोगों की मांग पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में हमेशा बनी रहती है।

मुखौटा शिल्प बहुत प्रसिद्ध है और मुखौटा बनाना भी यहाँ कमाई का एक स्रोत है। सत्रों में भावना (नाटक), रास उत्सवों में इस्तेमाल होने वाले मुखौटों की माजुली से बाहर भी आपूर्ति की जाती है। विशेष रूप से सामागुरी मुखौटा बनाने के शिल्प में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध है।

चावल से बने व्यंजन जरूर चखें

यहां आने वाले पर्यटकों को चावल तथा मछली से बने व्यंजनों को चखने का अवसर मिलता है। यहाँ चावल की लगभग एक सौ अलग अलग किस्में, किसी भी प्रकार के कृत्रिम खाद या कीटनाशक के इस्तेमाल के बिना उगाई जाती हैं। "कुमलशाऊल" (जिसे हम हिंदी में कोमल चावल कह सकते हैं) यहाँ चावल के सबसे लोकप्रिय किस्मों में से एक है। इसे सिर्फ दस मिनट के लिए गर्म पानी में डुबो कर रखने के बाद खाया जा सकता है। आमतौर पर इसे नाश्ते के रूप में खाया जाता है। "बाओधान", चावल की एक अनूठी किस्म होती है जो कि पानी के नीचे होती है और जिसे दस महीने के बाद काटा जाता है। "बोरा शाऊल" एक अन्य किस्म का चावल है जो चिपचिपा भूरे रंग का होता है। यह चावल असम का पारंपरिक खाद्य "पीठा" बनाने और अन्य आनुष्ठानिक कार्यों में प्रयुक्त होता है।

कला और संस्कृति

माजुली द्वीप असमिया नव वैष्णव संस्कृति का केन्द्र रहा है। नव–वैष्णव विचारधारा असमिया संत महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव द्वारा 15वीं सदी के आसपास शुरू की गयी थी। इन महान संतों द्वारा निर्मित कई सत्र यानि आश्रम अभी भी अस्तित्व में हैं और असमिया संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। माजुली प्रवास के दौरान श्रीमंत शंकरदेव यहाँ पश्चिम माजुली के बेलागुडी नामक स्थान में कुछ महीने रूके थे और बेलागुरी में "मनिकंचन संजोग" सत्र स्थापित हुआ। हालांकि यह सत्र अब अस्तित्व में नहीं है। इस सत्र के बाद माजुली में पैंसठ सत्र और स्थापित किए गए। असम में कुल 665 मूल आश्रमों/सत्रों में से 65 माजुली में स्थित थे। माजुली में स्थित मूल पैंसठ मठों/सत्रों में से अब केवल बाईस ही अस्तित्व में है। कुछ सत्र भू–कटाव के चलते विलीन हो गए और कुछ सत्र सही परिचालन और धन के अभाव में बंद हो गए।

- दक्षिणी पाठ सत्र : इस सत्र को वनमाली देव ने स्थापित किया था। वे रासलीला अथवा रास उत्सव के समर्थक थे। रासलीला अब असम के राष्ट्रीय त्योहारों के रूप में मनाया जाता है।
- सामागुरीः यह सत्र रास उत्सवए भावना (धार्मिक नाट्य) और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए मुखौटा बनाने के लिए भारत भर में प्रसिद्ध है।
- गरमूढ सत्रः 'यह सत्र लक्ष्मीकांत देव द्वारा स्थापित किया गया था। शरद ऋतु के अंत के दौरान, पारंपरिक रासलीला समारोह धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन हथियार जिन्हें "बरतोप" या तोप कहा जाता है यहाँ संरक्षित किये गए हैं।
- आउनी आटी सत्रः निरंजन पाठक देव द्वारा स्थापित किया गया यह सत्र "पालनाम और अप्सरा नृत्य" के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। यह सत्र प्राचीन असमी कलाकृतियों, बर्तनों, आभूषण और हस्तशिल्प के अपने व्यापक संकलन के लिए भी प्रसिद्ध है। इस सत्र के दुनिया भर में एक सौ पच्चीस शिष्य और सात लाख से अधिक अनुयायी हैं।

- कमलाबारी सत्र : बादुला पद्म आता द्वारा स्थापित किया गया यह सत्र, माजुली द्वीप में कला, सांस्कृति, साहित्य और शास्त्रीय अध्ययन का एक केंद्र है। इसकी शाखा उत्तर कमलाबारी सत्र पूरे देश में और विदेशों में सत्रीय नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते है।
- बेंगेनाआटी सत्रः इस सत्र की स्थापनाश्रीमंत शंकरदेव की सौतेली माँ के पोते श्री मुरारी देव ने की थी। यह सांस्कृतिक महत्व और कला का प्रदर्शन करने के लिए एक नामचीन सत्र माना जाता है। यहाँ अहोम राजा स्वर्गदेव गदाधर सिंघा का शुद्ध सोने से बनी शाही पोशाक आज भी रखी गई है। इसके अलावा यहाँ स्वर्णनिर्मित एक शाही छाता भी संरक्षित है।

ये सत्र "बरगीत'', ''मटियाखारा", सत्रीय नृत्य जैसे– झुमोरा नृत्य, छली नृत्य, नटुआ नृत्य, नंदे भृंगी, सूत्रधार, ओझापल्ली, अप्सरा नृत्य, सत्रीय कृष्णा नृत्य, दशावतार नृत्य आदि के संरक्षक स्थल हैं। ये सभी श्रीमंत शंकरदेव द्वारा स्थापित किये गए थे।

माजुली में रासलीला

इन सत्रों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– कमलाबारी सत्र, उत्तर कमलाबारी सत्र, सामागुरी सत्र, गरमूढ़ सत्र, आउनीआटी सत्र, बेंगेनाआटी सत्र, दक्षिणपाट सत्र इत्यादि। नवम्बर महीने में यहाँ तीन दिवसीय रास उत्सव होता है जिसे देखने दूर दूर से लोग आते हैं। साल भर यहाँ रंग बिरंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं जो पर्यटकों को बहुत भाते हैं।

पुंग नृत्य

रास लीला का एक दृश्य

अलि–आए–लिगांग मिसिंग जनजाति द्वारा वसंत ऋतु (फ़रवरी– मार्च) में मनाया जाने वाला एक त्योहार है। पर्यटक इस त्यौहार का भी काफी लुत्फ़ उठाते हैं। इस के अलावा, यहाँ मुखौटे, मिट्टी के बर्तन, मूंगा रेशम की बुनाई जैसे हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को देख/ख़रीद सकते हैं।

यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और जैव विविधता को देखने और अध्ययन के लिए विश्व भर से लोग आते हैं। यहाँ अनेक प्रजातियों के दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रवासी पक्षियों का आवागमन चलता रहता है। इनमे हवासील (पेलिकान), साइबेरियन क्रेन और ग्रेटर एडजुटेंट सारस जैसे प्रवासी पक्षी शामिल हैं। इन पक्षियों को देखने के लिए नवंबर से मार्च के बीच का समय सबसे उत्तम होता हैं। यहाँ तीन ऐसे स्पॉट्स हैं जहाँ से इन पक्षियों को देखा जा सकता है–माजुली द्वीप के दक्षिण पूर्व इलाका, 'माजुली द्वीप के दक्षिण पश्चिम इलाका और माजुली द्वीप के उत्तरी भाग।

माजुली में साल के किसी भी वक्त □मण किया जा सकता है। वर्षा ऋतु के दौरान इस द्वीप लगभग 50% भाग में पानी भर जाता है, लेकिन विडंबना यह है कि साल के इस समय यहाँ नाव से यात्रा आसान हो जाती है। प्राकृतिक सुन्दरता भी इसी समय अपने चरम पर होती है।

माजुली में पर्यटन के लिए बुनियादी सुविधाओं का विकास नहीं किया जा सका है। यहाँ न तो कोई बड़ा नगर है, न ही यहाँ कोई अच्छे होटल हैं। यहाँ के सबसे बड़े नगर कमलाबारी और गरमूढ़ है। अभी यहाँ कोई स्टार होटल नहीं है, हां कुछ मध्य और निम्न स्तर के होटल जरुर हैं। यहाँ असम सरकार के कुछ अतिथि भवन जैसे "सर्किट हाउस", "इंस्पेक्शन बंगले" जरूर हैं पर वे सीमित संख्या में हैं और आम पर्यटक की पहुँच से दूर हैं क्योंकि सरकारी अधिकारियों और नेताओं को वहां प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ असम पर्यटन विभाग का "प्रशांति टूरिस्ट लॉज" भी है परन्तु यह भी सीमित संख्या में ही टूरिस्टों को रख सकता है।

कैसे पहूंचे

माजुली की एक ओर मुख्य भूमि जोरहाट है, जो भारतीय रेलवे के नेटवर्क से अच्छी तरह जुड़ा है। यहां देश के लगभग सभी महानगरों से रेलगाड़ियां आती है।

जोरहाट के लिए कोलकाता, गुवाहाटी, नई दिल्ली और असम के कुछ अन्य स्थानों से से सीधी सेवाएं उपलब्ध हैं। जोरहाट से निमाटी घाट जाने के लिए बसें तथा टैक्सियां मिल जाती हैं

वहां से आपको छः किलोमीटर फेरी से कमलाबारी (माजुली की ओर) जाना होगा।

कुछ "सत्र" पर्यटकों के लिए डीलक्स और साधारण कमरे उपलब्ध कराते है। इसके लिए पहले से ही सत्र परिचालक से संपर्क करना आवश्यक है। नतुन कमलाबारी, उत्तर कमलाबारी, आउनीआटी, भोगपुर और दक्षिणपाट सत्रों में ठहरने के लिए अच्छे कमरे तथा स्थान उपलब्ध हैं।

सहायक निदेशक (एचआर),
पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

पर्यटन का आनन्द लें - कुछ सीखें

—रमण कुमार वर्मा

किसी दूसरे शहर में घूमने फिरने जाने को आम तौर पर जिन्दगी में काम काज के तनाव से कुछ समय के लिए राहत के रूप में लिया जाता है। लेकिन हम इसे पर्यटन भी कह सकते हैं। वास्तव में हमें जिन्दगी की भागदौड़ में कभी कभार समय निकालना ही चाहिए ताकि हम कुछ आराम कर सकें। हम में से कुछ लोग दक्षिण में समुद्र तटों पर घूमना पसंद करते हैं तो कुछ पहाड़ों में हरियाली और बर्फ का नजारा लेना चाहते हैं। चाहे कुछ भी हो ऐसे में पर्यटन आपके व्यक्तित्व की संभावनाओं में परिवर्तन करता है।

इतना ही नहीं अब तो व्यापारी लोगों के लिए भी पर्यटन के बारे में विचार किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया जाने लगा है। एक बड़े दुकानदार कभी कहीं नहीं जाते थे। प्रातः छः बजे से रात के नौ बजे तक दुकान में ही हाजिर, जब कभी घर के लोगों ने वैष्णव देवी या हरिद्वार चलने की बात की तो पैसे थमा दिए और कहा कि तुम सब जाओ। ऐसे व्यक्ति अपने तक ही सीमित रह जाते हैं। आजकल कुछ एजेंसियों ने ऐसे लोगों के लिए एक–दो रात के टूर कार्यक्रम तैयार करने शुरू कर दिए है। यदि समय की कमी हो तो, इन एजेंसियों से भी संपर्क कर सकते हैं।

अच्छे स्थानों को देखने और वहां घूमने से आप अपने कार्यालय में अपने साथियों की तुलना में अच्छे परिणाम दे सकते हैं, उन साथियों की तुलना में जो अच्छे परिणाम नहीं दे पाते आप उनका नेतृत्व कर सकते हैं।

यहां हम आपको बताते है कि पर्यटन क्यों और कैसे आपके व्यक्तित्व के साथ साथ आपके जीवन में कैसे सहायक हो सकता है। पर्यटन में अधिकतर लोग जानी पहचानी जगहों पर ही जाते हैं जहां कई बार जाने से आपको वहां की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में पता चलता है। चाहे वहां की भाषा आपके घूमने में बाधा बन रही हो लेकिन जब आप वहां के स्थानीय लागों के सम्पर्क में आते हैं तो कुछ शब्द तो अवश्य ही सीख जाते हैं। आपको अपने और वहां के लोगों के बीच भिन्नता का पता चलता है। चाहे आप उनसे घुल मिल न सके हों फिर भी भाषा के साथ साथ उनके उठने बैठने वहां के खान पान के बारे में पता चलता है। कई बार ऐसा भी होता है कि उस क्षेत्र का कोई अधिकारी या सहकर्मी कार्यालय मे आ जाता है तब वहां के अनुभव आपके काम आते है और आपका उससे अच्छा तालमेल बन सकता है।

आम तौर पर ज्यादा छुट्टियां लेना भी संभव नहीं होता। इसलिए थोड़े समय में ही अधिक जानने का प्रयास करें। टिकट बुकिंग कराने के साथ ही होटल या गैस्ट हाउस आदि समय से पहले ही बुक करा लिया जाए तो इधर उधर नहीं भटकना पड़ेगा। इससे समय नष्ट नहीं होगा और आप आराम से अपने गंतव्य का आनन्द ले सकते हैं। इससे आपको समय से पूर्व अपना काम करने की सीख मिलती है।

जब आप पर्यटन पर जाते हैं तो अपने आरामदायक घर से बाहर होते हैं ऐसे में कई बार अनेक प्रकार की छोटी मोटी असुविधाएं भी सामने आती हैं। उनके बारे में शिकायत करने के बजाय उन्हें सहना सीखिए। ऐसी समस्याओं का सामना करते हुए अपने मन सें किसी भी प्रकार का डर उत्पन्न न होने दें। आपको जो सुविधाएं मिलती हैं उनका पूरा लाभ और लुत्फ उठाएंए उनमें कमियां निकालने का प्रयास न करे। मान लीजिए, आपने कैब/

टैक्सी बुक कराई या आपके आफिस की कार आपको लेने आने वाली है। मगर किसी कारण से उसके आने में देरी हो जाती है तो नाराज न हों और कुछ बड़बड़ाए नहीं। हो सकता है कि ड्राइवर कहीं जाम में फंस गया हो, पार्किंग से निकलने में देरी हो रही हो या फिर आपके आस पास ही हो लेकिन आपको ढूंढ नहीं पा रहा हो। दूसरा उदाहरण आप होटल बुक करा चुके है मगर यह जरूरी नहीं कि आपके पहुंचते ही वहां का स्टाफ तुरंत ही आपको चाबी दे दे। वह कुछ व्यस्त भी हो सकता है, आपको कमरे में ले जाने में 10–15 मिनट देर हो सकती है। आप आराम से लॉबी में बैठें। उनकी कठिनाईयों पर भी ध्यान दें। इससे आपको जीवन में छोटी मोटी असुविधाए होंगी तो आप उनके बारे में अधिक नहीं सोचेंगे।

अतः यह आवश्यक है कि आप इस बदलाव को अपने जीवन में लाएं। एक दो बार आपको गुस्सा भी आ सकता है, परन्तु धीरे धीरे आप इस प्रकार की चीजों के आदी होने का प्रयास करें। यदि आप व्यापार करते हैं तो आप देखेंगे कि इससे आपके व्यापार में भी तुलनात्मक परिवर्तन होगा।

जब आप पर्यटन पर घूमने जाते हैं तो आपको आवास, खानपान और यात्रा के साथ साथ कभी कभी अपनी जेब पर भी निर्णय लेना होता है। ऐसे में कभी कभार परिस्थितियों को देखते हुए 'प्लान बी' पर भी विचार करना पड़ता है। इससे आपको योजना बनाने और अच्छे निर्णय लेने में सहायता मिल सकती है। अच्छे और शीघ्र निर्णय लेने वाले अधिकारी किसी भी मामले में गुण दोष का आंकलन करने के बाद ही ध्यानपूर्वक निर्णय कार्यान्वित करते हैं।

आप अपने परिवार के साथ तो घूमने जाते ही हैं, कभी कभार मित्रों के साथ सपरिवार अपने सहयोगियों के साथ भी कार्यक्रम बनाइए। यदि चार परिवार मिल कर एक साथ किसी स्थान पर जाते हैं, तो कम से कम चार लोगों को अलग अलग जिम्मेदारी दें। उदाहरण के तौर पर किसी को बस आदि की व्यवस्था, किसी को खान पान की व्यवस्था तो किसी को ठहरने आदि की व्यवस्था करने का काम सौंप दें। हां, ऐसे में मेरे परिवार को यह असुविधा हो रही है जैसी बात न करें। इससे आपको उन लोगों की क्षमताओं का भी पता लग जाएगा। किसी बड़े काम के समय आप उन पर भरोसा कर सकेंगे।

इस प्रकार आप देखेंगे कि पर्यटन से आप मे एक आत्मविश्वास जागृत होता है और टीम की भावना भी उत्पन्न होती है। इससे आपको यह भी पता लग जाएगा कि किस किस में कौन–कौन सी क्षमताएं हैं और टीम में किसे कौन सा काम सौंपा जा सकता है। आप स्वयं ऐसी स्थिति पर विचार करें जब आप लाइन के बीच में हैं और कोई आप पर ध्यान नहीं दे रहा है और खुद आप अपने काम के बारे में पूरी तरह से नहीं जान पा रहे हैं। ऐसे में आपकी क्या स्थिति होगी आप महसूस कर सकते हैं। यदि आप पर्यटन को साधारण नहीं मानते तो आप मे एक आत्मविश्वास पैदा होता है और आप ऐसी परिस्थितियों से निपट सकते हैं।

इस मे कोई शक नहीं कि आप मेहनती हैं और आप अकेले भी बहुत सा काम कर सकते हैं। लेकिन जो लोग कभी ग्रुप में आपके साथ गए होंगे वे सभी आपके काम में भागीदार बनेंगे और जिम्मेदारी से काम को पूरा करते हुए, आपकी सहायता करेंगे। जब आप टीम की भावना से काम कराते हैं तो आप अपने सहयागियों को भी बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

जब आप कहीं बाहर जाएं तो एक बात का और ध्यान रखें अपने टेबलेट, लैपटॉप या मोबाइल से थोड़ा दूर रहना ही अच्छा होगा। सुंदर रिमझिम बारिश हो रही हो या कहीं समुद्र के किनारे टहल रहे हों प्रकृति के संगीत के बीच भी कान में इयरफोन लगा कर आप प्रकृति का सच्चा आनन्द नहीं ले सकते।

कुछ देशों में तो चेक–इन के समय ही आपके मोबाइल फोन और लैपटाप जमा करवा लिए जाते है। हमारे देश में भी कुछ होटलों ने स्वागत कक्ष में अपने मोबाइल फोन जमा करवाने पर खाने के बिल में कुछ प्रतिशत की छूट देने की शुरूआत की है। हाल ही में "हफिंग्टन पोस्ट" की को–फाउंडर व संपादक रह चुकी एरियाना हाफिंग्टन ने हवाई आइलैंड में गैजेट्स के बगैर बिताई छुट्टियों के अनुभव बताएं हैं जिसमें उन्होने बताया है कि इसके चलते आपके और दिमागी शांति और बीच एक ट्रैफिक जाम बन जाता है। इसलिए जब भी पर्यटन पर जाएं मोबाइल और लैपटॉप से बॉय बॉय रखें।

आजकल कार्पोरेट जगत में अपने कार्मिकों को एक साथ किसी स्थान पर घुमाने के लिए ले जाने की परम्परा चल पड़ी है। अधिकतर लोग इसे पिकनिक ही मानते हैं। वास्तव में यह भी पर्यटन ही है। वहां जब सब लोग मिल बैठकर गाते हैं, खाना खाते हैं, बातें करते हैं तो हमारी ऊपर बताई गई एकदम सटीक बैठती है।

सहायक निदेशक (राजभाषा)
पर्यटन मंत्रालय

पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 15.04.2016 को हुई बैठक - एक रिपोर्ट

माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा की अध्यक्षता में पर्यटन मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक दिनांक 15.04.2016 को अपराह्न 3.00 बजे होटल ताज लैंड्स एंड, मुम्बई में हुई।

सचिव (पर्यटन) ने माननीय अध्यक्ष महोदय, बैठक में उपस्थित समिति के माननीय सदस्यों तथा अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने समिति को बताया कि पिछली बैठक में माननीय सदस्यों से प्राप्त सुझावों के अनुसार मंत्रालय द्वारा हिंदी में **"अतुल्य भारत"** के नाम से एक गृह पत्रिका की शुरूआत की गई है। दिनांक 27.09.2015 को विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर मंत्रालय की पुनर्संरचित वेबसाइट लांच की गई है जिसमें हिंदी में भी सामग्री अपलोड करने का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि हिंदी सलाहकार समिति की बैठकों के आयोजन से मंत्रालय के कार्मिकों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने के प्रति नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति एवं उड्डयन मंत्री डा. महेश शर्मा 15 अप्रैल, 2016 को मुंबई में पर्यटन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए इस अवसर पर श्री विनोद जुत्शी, सचिव (पर्यटन), श्री राम कर्ण, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन), और अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित हैं।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि इस बैठक में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों के साथ होने पर उन्हें बेहद खुशी हुई है। उन्होंने कहा कि हिंदी सलाहकार समिति एक ऐसा मंच है, जो हमें हिंदी में काम करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने आगे बताया कि वे स्वयं भी हिंदी क्षेत्र से हैं तथा उनको वह दिन आज भी याद है जब हिंदी माध्यम के स्कूल से उनको अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भर्ती कराया गया था। उस समय उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। इसलिए, वे हिंदी भाषियों की व्यथा को अच्छी तरह समझते हैं। संपर्क भाषा का ज्ञान होना एक अच्छी बात है। किसी के लिए किसी भाषा या कितनी भी भाषाओं का ज्ञान होना गर्व और गौरव की बात है। परन्तु हमें हिंदी भाषा को सम्मान देना चाहिए जिसका अर्थ है कि हम सब अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करके अपने आप को गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। हम सबको हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के साथ–साथ देश की अन्य भाषाओं के प्रति भी समान आदर का भाव रखना चाहिए। देश की संस्कृति के विकास के लिए हमें अपनी सभी भारतीय भाषाओं का समान रूप से विकास करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय ने आशा व्यक्त की कि आज की बैठक में सदस्यों की सक्रिय सहभागिता से कार्यसूची पर सार्थक चर्चा

होगी और राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और हिंदी का प्रचार–प्रसार करने के संबंध में माननीय सदस्यों से व्यावहारिक और कारगर सुझाव प्राप्त होंगे।

डॉ. त्रिलोकी नाथ गोविल ने समिति का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनालॉजी परिषद, नोएडा का यह कहना है कि होटल प्रबंधन संस्थानों के पाठ्यक्रम होटल उद्योग की मांग पर ही निर्धारित किए जाते हैं और उनकी मांग के कारण ये पाठ्यक्रम अंग्रेजी में ही हैं। उन्होंने कहा कि व्यवसायियों की मांग पर हिंदी भाषा को हानि नहीं होनी चाहिए। श्री अजय मिश्र टेनी, सांसद ने कहा कि संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार मंत्रालय और इसके शिक्षण संस्थानों और अन्य सभी कार्यालयों का पूरा प्रशासनिक कार्य हिंदी में ही किया जाना चाहिए और व्यवसायिक मामलों में हिंदी माध्यम से पढ़ाने, परीक्षा देने, आदि का विकल्प भी दिया जाना चाहिए। सचिव (पर्यटन) ने कहा कि यह बात सही है कि होटल प्रबंध संस्थानों में हिंदी माध्यम होना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इन प्रशिक्षण संस्थानों से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों के लिए रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध हों। इस प्रकार दोनों ही दृष्टि से एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा।

श्री अजय मिश्र टेनी, सांसद ने कहा कि योजनाओं की प्रोत्साहन राशि बहुत कम है, इन्हें बढ़ाया जाना चाहिए। श्री हामिद अली ने कहा कि प्रोत्साहन योजनाओं की पुरस्कार राशि आकर्षक होने से कार्मिक इन योजनाओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रेरित और उत्साहित होंगे। मंत्रालय में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की प्रोत्साहन योजनाएं और भारत पर्यटन विकास निगम लि. और इसकी इकाइयों में उनकी अपनी 4 प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं। राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री विजय कुमार ने बताया कि इस विभाग की प्रोत्साहन योजनाओं की राशि को काफी लम्बे समय से नहीं बढ़ाया गया है। सचिव (पर्यटन) ने कहा कि आज की बैठक में यदि समिति पुरस्कार राशि बढ़ाने के संबंध में सर्वसम्मति से संकल्प पारित करे तो यह मंत्रालय राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से पुरस्कार राशि बढ़ाने के लिए प्रस्ताव भेजेगा। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारत पर्यटन विकास निगम लि. भी पुरस्कार राशि बढ़ाने के लिए अपनी प्रोत्साहन योजनाओं की समीक्षा करेंगे। समिति ने सर्वसम्मति से पुरस्कार राशि बढ़ाने का संकल्प पारित किया।

श्री प्रशांत त्यागी ने समिति को बताया कि पिछली बैठक में उन्होंने पर्यटन मंत्रालय और इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के हिंदी में अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिंदी मित्र या किसी अन्य नाम से एक पुरस्कार योजना चलाने का सुझाव दिया था जिस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सदस्य सचिव ने समिति को बताया कि मंत्रालय द्वारा इस वर्ष माह सितम्बर, 2016 हिंदी माह के रूप में मनाया जाएगा जिसमें हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों के साथ–साथ हिंदी मित्र पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। डॉ. त्रिलोकी नाथ गोविल ने सुझाव दिया कि मंत्रालय और इसके अधीन आने वाले कार्यालयों द्वारा आयोजित किए जाने वाले हिंदी कार्यक्रमों में समिति के गैर–सरकारी सदस्यों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। सचिव (पर्यटन) ने समिति को बताया कि इस वर्ष हिंदी मित्र पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों आदि में आयोजित होने वाले राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आदि में गैर सरकारी सदस्यों को आमंत्रित किया जाएगा।

श्री हामिद अली ने सुझाव दिया कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा मंत्रालय के कार्यकलापों का हिंदी में प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से वर्ष में एक बार मंत्रालय की तरफ से राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जाए जिसमें समिति के गैर सरकारी सदस्यों को भी वक्ता आदि के रूप में आमंत्रित किया जाए।

श्री हामिद अली ने सुझाव दिया कि मंत्रालय को देश भर विद्यार्थियों को गाइड का प्रशिक्षण देना चाहिए

ताकि वे खाली समय में गाइड के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर सकें। इस कार्य के लिए पड़ोसी देशों से भी सहयोग किया जा सकता है। इसके साथ–साथ उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि मंदिर के पुजारियों को भी मंदिर के इतिहास आदि के बारे में प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे पर्यटकों को मंदिर के बारे में हिंदी में जानकारी दे सकें। मंदिर के इतिहास आदि का विवरण देने के लिए एक सूचना पट्ट भी लगवाया जा सकता है। सचिव (पर्यटन) ने समिति को बताया कि आईआईटीटीएम, ग्वालियर द्वारा गाइडों तथा पुजारियों को प्रशिक्षित करने के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनके बारे में संस्थान के निदेशक, श्री संदीप कुलश्रेष्ठ ने समिति को इस संबंध में जानकारी दी जिसकी समिति ने भूरी–भूरी प्रशंसा की।

श्री हामिद अली ने सुझाव दिया कि अतुल्य भारत पत्रिका के प्रत्येक संस्करण में वित्त वर्ष की प्रत्येक तिमाही के दौरान पर्यटन मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के हिंदी में अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम उनके फोटो के साथ प्रकाशित किए जाएं ताकि अन्य अधिकारी और कर्मचारी भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित हों। सचिव (पर्यटन) ने कहा कि गृह पत्रिका अतुल्य भारत के आगामी संस्करणों में इनको शामिल किया जाएगा।

इसके बाद अध्यक्ष महोदय ने समिति के माननीय गैर–सरकारी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए और गैर–सरकारी सदस्यों से निम्नानुसार सुझाव प्राप्त हुएः–

I. **श्री अजय मिश्र टेनी, संसद सदस्य (लोक सभा)**

(1) हिंदी सलाहकार समिति इन बैठकों में व्यवसायिक कार्यों पर चर्चा न होकर मंत्रालय तथा इसके अधीन आने वाले कार्यालयों के प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा होनी चाहिए।

(2) मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों में पुस्तकालय होना चाहिए और उनमें हिंदी की पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिएं।

(3) मंत्रालय के अधिकारी अधीनस्थ कार्यालयों के किसी भी प्रकार के निरीक्षण जैसे प्रशासनिक, लेखा, तकनीकी आदि से संबंधित टिप्पणी हिंदी में भी लिखें और इसमें उस कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के कामकाज की स्थिति के बारे में भी टिप्पणी लिखी जाए।

II. **श्री राम चरित्र निषाद, संसद सदस्य (लोक सभा)**

हिंदी सलाहकार समिति की बैठक तथा मंत्रालय की उपलब्धियों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए ताकि जनता की इन कार्यक्रमों में रूचि उत्पन्न हो।

III. **श्री प्रशांत त्यागी, गैर–सरकारी सदस्य**

(1) संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार हिंदी व अन्य भाषाओं में प्रवीण प्रशिक्षित गाइडों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए और पर्यटक गाइड प्रशिक्षण कार्यक्रम हिंदी में भी संचालित किए जाएं।

IV. **श्री हामिद अली, गैर–सरकारी सदस्य**

संयुक्त सचिव तथा समकक्ष तथा उनसे उच्च स्तर के अधिकारियों में से हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों को भी सम्मानित किया जाना चाहिए।

समिति के सभी सदस्यों ने हिंदी सलाहकार समिति की बैठक समय पर आयोजित करने एवं प्रभावी और सफल बैठक के आयोजन के लिए माननीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की सराहना की।

अंत में, अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देते हुए बैठक संपन्न हुई ।

पहाड़ी दर्रा

नाथुला

– निर्मला खन्ना

नाथूला पास, हिमालय का एक पहाड़ी दर्रा है जो भारत के सिक्किम राज्य और दक्षिण तिब्बत में चुम्बी घाटी को जोड़ता है यह 14 हजार 200 फीट की ऊंचाई पर है। बीसवीं सदी की शुरुआत में भारत और चीन के बीच होने वाले व्यापार का 80 प्रतिशत हिस्सा नाथू ला दर्रे के ज़रिए ही होता था। यह दर्रा प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा का भी हिस्सा रहा है।

दर्रे के खुलने पर कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें दोनों तरफ के सैन्य अधिकारी शामिल होते हैं, हालांकि, यह उम्मीद की गई थी कि दर्रे से होते हुए दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ेगा, लेकिन अब तक कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है। लेकिन दर्रे को फिर से खोलने से यात्रा की दूरी कम हुई, जिससे क्षेत्र में विभिन्न बौद्ध एवं हिंदू तीर्थ केंद्रों के लिए यात्रा दूरी को कम करता है।

शब्द 'नाथू' का अर्थ है 'सुनते हुए कान' और 'ला शब्द तिब्बती भाषा में 'दर्रे' का अर्थ रखता है। नाथू ला दर्रा चीन और भारत के बीच तीन खुली व्यापार चौकियों में से एक है। वर्ष 1962 में इस दर्रे को सील कर दिया गयाए भारत–चीन युद्ध के बाद ऐसा किया गया और वर्ष 2006 में इसे फिर से खोल दिया गया।

नाथुला गेट

भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध के बाद इसे बंद कर दिया गया था। इसे दोबारा वापस 5, जुलाई, 2006 को व्यापार के लिए खोल दिया गया है।

नाथू ला दर्रा गंगटोक के पूर्व की ओर 54 किमी की दूरी है। यह अत्याधिक बर्फबारी के कारण सर्दियों के दौरान बंद रहता है। इस क्षेत्र की सड़क के रखरखाव का काम भारतीय सेना विंग–सीमा सड़क संगठन को सौंपा गया है।

नाथू ला सप्ताह में बुधवार से रविवार तक खुला होता है। सोमवार और मंगलवार जनता के लिए बंद होता है। मई से अक्तूबर के बीच जाना अच्छा होता है जब तापमान 10 से 15 डिग्री होता है। इन दिनों आम तौर पर मौसम साफ रहता है और धूप खिली होती है। ऐसे में आप ऊंचे पहाड़ों पर जाते हुए दर्रे की सड़कों को देख सकते हैं।

नवम्बर से फरवरी तक अत्यधिक सर्दी होती है चारों ओर भारी बर्फ पड़ती है। विशेषकर जनवरी में तापमान (–4 से 5) शून्य से भी चार– पांच डिग्री कम हो जाता है। इतनी भारी बर्फबारी में नाथुला से आवागमन बंद कर दिया जाता है। फिर भी आप इसे देखने जा सकते हैं लेकिन इसके लिए आपको स्नोसूट और भारी कपड़े पहनने की जरूरत होगी। यह सामान आपको गंगटोक में या फिर छांगू लेक के बाजार में किराए पर भी मिल जाता है। नवम्बर और मार्च ही ऐसे महीने होते है जब कम बर्फ पड़ती है और बर्फीले नाथुला का नजारा दे सकते हैं।

नाथुला पर बर्फबारी का एक मनमोहक दृश्य

यहां एक भारतीय युद्ध स्मारक भी मौजूद है। सेना से कुछ लोगों को छोड़ कर इस जगह पर शायद ही कोई अन्य नागरिक देखने को नहीं मिलता है, असल में सेना को जो कार्य सौंपा गया है, वो है दोनों पक्षों पर सीमाओं की रक्षा के काम से कुछ पुरुषों के लिए छोड़कर एक जगह पर शायद ही कोई दूसरा आदमी कर सके। दर्रे में कई डूबे हुए क्षेत्र हैं और भूस्खलन के प्रति संवेदनशील भी।

इस बात का विशेष ध्यान रखें कि नाथुला एक संरक्षित क्षेत्र है। विदेशी पर्यटकों को यहां जाने की बहुत ही कम अनुमति है। भारतीय पर्यटकों को भी नाथुला जाने के लिए अनुमति (परमिट) लेना जरूरी है। यह परमिट सिक्किम पर्यटन विभाग, गंगतोक द्वारा आपके पहचान पत्र के आधार पर जारी किया जाता है। आप यह अपने होटल के प्रबंधक के द्वारा भी बनवा सकते हैं। इसके लिए आपको अपने दो पासपोर्ट साइज फोटो और आई.डी. कार्ड की कापी देनी होती है। इसके लिए अपनी यात्रा के कम से कम एक दिन पहले आवेदन करना होता है।

याद रखिए, यदि आप आज ही गंगतोक पहुंचते हैं और अगले ही दिन जाने का विचार है तो उसी समय अपने टूर आपरेटर/होटल के प्रबंधक को अपने कागजात दे दीजिए ताकि वह शाम तक परमिट की व्यवस्था करा सके। परमिट के लिए 200 रूपए का शुल्क लिया जाता है और चार साल तक के बच्चों के लिए परमिट जरूरी नहीं है।

नाथुला पास भारत–चीन की सीमा का अति संवेदनशील सीमा क्षेत्र है अतः यहां फोटो खींचने या किसी प्रकार के विडियो बनाने की मनाही है। पर्यटक सीमा क्षेत्र से एक किलोमीटर नीचे आकर फोटो खींच सकते हैं।

त्सोंगमो झील या छांगू लेक नाथुला से लगभग 10 किलोमीटर त्सोंगमो झील आती है इसे ही छांगू लेक भी कहा जाता है। सर्दियों में इस झील की सतह जम जाती है। दिसम्बर से फरवरी तक तो इतनी जम जाती है कि इसकी सतह पर लोग क्रिकेट खेलते दिखाई देते हैं। यहां तक कि अगस्त से अक्तूबर तक यहां पानी इतना ठंडा होता है कि लोग इसके पानी में घुसने या नहाने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं। 3780 मीटर (12310 फीट) की ऊँचाई पर स्थित इस झील का पानी पास के ग्लेशियर से आता है। यहाँ से उत्तर में सड़क मेनमेचो झील से होती हुई नाथू ला दर्रे की ओर निकलती है जिसके पार तिब्बत की चुम्बी घाटी है। यह चारों ओर से ऊंचे पर्वतों से घिरी है।

यहां भी एक अच्छा खासा बाजार जहां दुकानदार नाममात्रके पैसे पांच–दस रूपए लेकर आपके कैमरे आदि रखते हैं क्योंकि ऊपर नाथुला में कैमरे आदि ले जाने की अनुमति नहीं है। बाजार के सामने ही याकों का झुंड खड़ा होता है। लोग याक पर बैठकर, उसके साथ या उसे पुचकारते हुए फोटो खिंचवाते हैं। जरा सावधान रहें, यहां के लोग आपको याक के साथ सैल्फी लेने के लिए पैसे मांगते है। जबकि वहां मौजूद फोटोग्राफर सिर्फ 10 मिनट में ही आपकी फोटो तैयार कर आपके हाथ में थमा देते हैं और उसके लिए कम से कम 20 रूपए लेते हैं। इससे उनका भी रोजगार चलता है।

बाबा हरभजन सिंह का मंदिर :

नाथुला से वापिस आते हुए बाबा हरभजन सिंह के मंदिर में जरूर दर्शन करें। जिनके बारे में आज भी एक बड़ा सवाल है कि क्या कोई सैनिक मृत्यु पश्चात भी अपनी ड्यूटी कर सकता है? क्या किसी मृत सैनिक की आत्मा, अपना कर्तव्य निभाते हुए देश की सीमा की रक्षा कर सकती है? लेकिन यह सच है कि इस मृत सैनिक की आत्मा आज भी देश की रक्षा करती है। आपको यह सवाल अजीब से लग सकते है, आप सब कह सकते है की भला ऐसा कैसे संभव है लेकिन सिक्किम के लोगों और वहां पर तैनात सैनिकों से अगर आप पूछेंगे तो वो कहेंगे जी हां ऐसा पिछले 50 वर्षों से यह लगातार हो रहा है। उन सबका मानना है की पंजाब रेजिमेंट के जवान हरभजन सिंह की आत्मा पिछले 50 वर्षों से लगातार देश की सीम की रक्षा कर रही है। इसलिए बाबा हरभजन सिंह का मंदिर देखना न भूलें।

आज भी सीमा पर तैनात सैनिकों का कहना है की हरभजन सिंह की आत्मा, चीन की तरफ से होने वाले किसी भी खतरे के बारे में कमाण्डर को पहले से ही बता देती है। यदि भारतीय सैनिकों को चीन के सैनिकों का कोई मूवमेंट पसंद नहीं आता है तो उसके बारे में वो चीन के सैनिकों को पहले ही बता देते हैं ताकि बात ज्यादा नहीं बिगड़े और मिल जुल कर बातचीत से उसका हल निकाल लिया जाए। आप चाहे इस पर यकीं करे या ना करे पर खुद चीनी सैनिक भी इस पर विश्वास करते है इसलिए भारत और चीन के बीच होने वाली हर फ्लैग मीटिंग में हरभजन सिंह के नाम की एक खाली कुर्सी रखीं जाती है ताकि वो मीटिंग अटेंड कर सके।

कौन है हरभजन सिंह :

हरभजन सिंहका जन्म 30 अगस्त 1946 को, जिला गुजरावाला में हुआ था (जो अब पाकिस्तान में है) हरभजन सिंह 24वीं पंजाब रेजिमेंट के जवानथे जो की 1966 में आर्मी में भारत हुए थे। मगर दो साल की नौकरी करके 1968 में, सिक्किम में,एक दुर्घटना में मारे गए। बताया जाता है कि एक रात जब वह खच्चर पर बैठ कर नदी पार कर रहे थे तो खच्चर सहित नदी में बह गए। नदी में बह कर उनका शव काफी आगे निकल गया। दो दिन की तलाशी के बाद भी जब उनका कुछ पता नहीं चला तो अधिकारियों ने मान लिया कि या तो चीनी सिपाही उसे पकड़ ले गए हैं और या फिर वह फौज से भाग गया है।

तीसरी रात हरभजन अपने कमांडर को सपने में दिखें और उन्होंने अपने मरने और बर्फ में दबे होने की बात बताई, साथ ही उस स्थान के बारे में भी बताया जहां वे दफन थे। सवेरे सैनिकों ने बताई गई जगह से हरभजन का शव बरामद कर अंतिम संस्कार किया। हरभजन सिंह के इस चमत्कार के बाद साथी सैनिकों की उनके प्रति आस्था बढ़ गई और उन्होंने उनके बंकरको एक मंदिर का रूप दे दिया। हालांकि जब बाद में उनके चमत्कार बढ़ने लगे और बाबा पहले तो सेना के जवानों और फिर आसपास की जनता की आस्था का केंद्र बन गए तो उनके लिए एक नए मंदिर का निर्माण कराया गया जो 'बाबा हरभजन सिंह मंदिर' के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर मेंजेलेप्ला दर्रे और नाथुला दर्रे के बीच, 13000 फ़ीट की ऊंचाई पर स्थित है। पुराना बंकर वालामंदिर इससे 1000 फ़ीट ज्यादा ऊंचाई पर स्थित है। मंदिर के अंदर बाबा हरभजन सिंह की एक फोटो और उनका सामान रखा है।

बाबा हरभजन सिंह अपनी मृत्यु के बाद से लगातार ही अपनी ड्यूटी देते आ रहे हैं। इनके लिए उन्हें बाकायदा तनख्वाह भी दी जाती है, उनकीसेना में एक रेंक है और नियमानुसार उनका प्रमोशन भी किया जाता रहा है। यहां तक कि कुछ साल पहले तक उन्हें दो महीने की छुट्टी पर गाँव भी भेजा जाता था। इसके लिए ट्रैन में सीट रिज़र्व की जाती थी, तीन सैनिको के साथ उनका सारा सामान उनके गाँव भेजा जाता था तथा दो महीने पूरे होने पर फिर वापस सिक्किम लाया जाता था। जिन दो महीने बाबा छुट्टी पर रहते थे उस दरमियान पूरा बॉर्डर हाई अलर्ट पर रहता था क्योकि उस वक्त सैनिको को बाबा की मदद नहीं मिल पाती थी। धीरे धीरे बाबा का सिक्किम से जाना और वापस आना एक धार्मिक आयोजन का रूप लेने लगा था जिसमें बड़ी संख्या में जनता इकठ्ठी होने लगी थी। कुछ लोगों ने इस आयोजन को अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाला माना और उन्होंने अदालत का दरवाज़ा खटखटाया क्योंकि सेना में किसी भी प्रकार के अंधविश्वास की मनाही है। लिहाज़ा सेना ने बाबा को छुट्टी पर भेजना बंद कर दिया। अब कई साल से बाबा जी बारह महीने ड्यूटी पर रहते है। मंदिर में बाबा का एक कमरा भी है जिसमे प्रतिदिन सफाई करके बिस्तर लगाया जाता है। बाबा की सेना की वर्दी और जूते रखे जाते है। कहते है की रोज़ सवेरे सफाई करने पर उनके जूतों में कीचड़ और बिस्तर की चादर पर सलवटें पाई जाती हैं।

चीनी सैनिक भी बाबा का पूरा सम्मान करते हैं कहा जाता है कि जब उनकी कोई रेजिमेंट सीमा के उस पार ड्यूटी पर आती है तो उनके कुछ अधिकारी बाबा के मंदिर में माथा टेकने जरूर आते हैं। चीन के एक अधिकारी ने बताया कि बहुत पहले उनका एक अधिकारी एक रात पहाड़ी से कूद कर आत्महत्या करने जा रहा था, बाद में पता चला कि वह अपने घर के हालात और सेना की सख्त ड्यूटी से परेशान था। अचानक किसी ने पीछे से पकड़ लिया और उसे दूसरी तरफ उछाल दिया और आवाज आई दिखता नही सामने गहरी खाई है अभी गिर कर मर जाते। उसने कहा कि मैं तो मरने ही जा रहा था। आवाज ने पूछा, क्यों? तभी उसकों लगा कि जैसे कोई उसके कंधों को प्यार से सहला रहा है। वह खुद को रोक नहीं पाया और रो पड़ा, रोते–रोते ही बताया कि उसकी बेटी घर से भाग गई थी, इस बदनामी से उसकी पत्नी आत्म हत्या करने के लिए छत से कूद गई थी। उनकी मां बहूत बीमार थी। उन्हें देखने के लिए घर जाने की छुट्टी भी नहीं मिल रही है। इसलिए वह मरना चाहते थे। तभी उसे लगा जैसे किसी ने मुझे बांहों में भर लिया है और सुनाई दिया कि पागल मत बनो, तुम्हारी पत्नी ने छलांग जरूर लगाई थी पर वह बच गई है, कुछ चोटें लगी है। तुम्हारी बेटी जिस लड़के के साथ भागी थी वह बड़ा नेक है दोनों ने शादी कर ली है, बूढ़ी मां जल्दी ही ठीक हो जाएगी। कल शाम तक तुम्हारी छुट्टी मंजूर हो कर आ जाएगी, हिम्मत से काम लो....। उसके आगे ठीक से नहीं सुन पाए और जब होश आया तो खुद को अपने कैम्प के बाहर पाया। उनके पास चीन के सिपाही खड़े थे। उन्होंने बताया कि सफेद रंग के घोड़े पर एक हिन्दुस्तानी यहां छोड़ गया था। उन्होंने बताया कि वह समझ गए कि शायद यह वही हिन्दुस्तानी सिपाही होगा जिसके बारे में हम अक्सर सुन चुके थे कि वह ड्यूटी पर सोते पाए जाने पर सिपाहियों को थप्पड़ मार देता था। उसी दिन शाम को उनकी छुट्टियां मंजूर हो गई। जब घर जाकर देखा तो पत्नी को सच में ही कुछ चोटें लगी थीं, बाद में मां भी ठीक हो गई। उस दिन से वह उनका मान करने लगे। कभी कभी हम लोगों को भी लगता है कि वह हिन्दुस्तानी सिपाही नहीं कोई देवता ही है।

आस्था का केंद्र है मंदिर :

बाबा हरभजन सिंह का मंदिर सैनिकों और स्थानीय जनता की आस्था का केंद्र है। इस इलाके में आने वाला हर नया सैनिक सबसे पहले बाबा के धोक लगाने यानि माथा टेकने आता है। इस मंदिर को लेकर यहाँ के लोगो में एक अजीब सी मान्यता यह है की यदि इस मंदिर में बोतल में भरकर पानी को तीन दिन के लिए रख

दिया जाए तो उस पानी में चमत्कारिक औषधीय गुण आ जाते है। इस पानी को पीने से लोगों के रोग मिट जाते हैं। इसलिए इस मंदिर में नाम लिखी हुई बोतलों का अम्बार लगा रहता है। यह पानी 21 दिन के अंदर प्रयोग में लाया जाता है और इस दौरान मांसाहार और शराब आदि के सेवन की पूरी तरह से मनाही होती है।

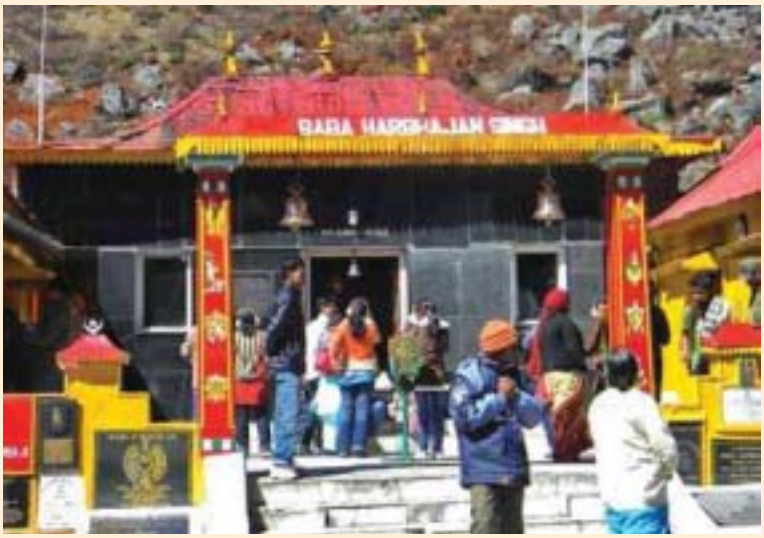

इसी तरह आप एक तरफ ढेर सारी चप्पलें देखेंगे। लोग यहां नई चप्पलें छोड़ कर वहां रखी कोई चप्पल (वह भी नई ही होती है) ले जाते हैं कहा जाता है कि इन चप्पलों को पहनने से पैर के रोग दूर हो जाते है

बाबा का असली बंकर, जो की नए मंदिर से 1000 फ़ीट की ऊंचाई पर है, लाल और पीले रंगो से सज़ा है। सीढ़िया लाल रंग की और पिलर पीले रंग के। सीढ़ियों के दोनों साइड रेलिंग पर नीचे से ऊपर तकघंटिया बंधी है। बाबा के बंकर में कॉपिया राखी है। इन कॉपियों में लोग अपनी मुरादे लिखते है ऐसा माना जाता है की इनमे लिखी गई हर मुराद पूरी होती है।

इसी तरह में बंकर में एक ऐसी जगह है जहाँ लोग सिक्के गिराते है यदि वो सिक्का उन्हें वापस मिला जाता है तो वो भाग्यशाली माने जाते हैं। फिर उसे हमेशा के लिए अपनेपर्स या तिजोरी में रखने की सलाह दी जाती है। दोनों जगहों का सम्पूर्ण संचालन आर्मी के द्वारा ही किया जाता है।

तो आइए और नाथुला का आनंद लीजिए।

कैसे पहुंचें

नाथू ला दर्रे से निकटतम रेलवे स्टेशन न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन है। आप यहां से रिक्शा या आटो लेकर सिलीगुड़ी (लगभग पांच किलोमीटर दूर) जाना होगा। वहां से गंगतोक के लिए सरकारी और निजी बसें और टैक्सियां मिल जाती है।

निकटतम हवाई अड्डा बागडोगरा है जो सिलीगुड़ी से लगभग 15 किलो मीटर दूर है।

कहां ठहरें :

गंगतोक में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। यहां फाइव स्टार होटल से लेकर बजट होटल तक उपलब्ध हैं। खानपान की भी अच्छी व्यवस्था उपलब्ध है।

निजी सचिव
पर्यटन मंत्रालय

कविता

मेरा शहर

– रेखा द्विवेदी,

ये मेरा शहर है
मगर अपने ही शहर में
मैं अजनबी हूं
या यूं कहिए कि ये शहर
मेरे लिए अजनबी है!

अंधेरे में चीत्कार उभरती है
मगर हम नहीं सुनते
दरवाजे खिड़कियां बंद रखते हैं
अपने ही घर में परदे लगाकर रहते हैं !
कहीं से सिसकियों की आवाज आती है
हम उन्हें भी नहीं सुनते
कहीं दंगे फसादों का भयंकर शोर होता है
मगर हम अपने कान बंद रखते हैं !

मासूम अबोध बच्चे हाथ फैलाते हैं
लेकिन हम नहीं देखते
नहीं देखते सड़क पर
घिसटते घिसटते भीख मांगते वृद्ध असहाय को

नहीं देखते हम बेगुनाहों को सजा पाते हुए
रोटी की तलाश में दर–दर भटकते
अपने स्वपनों को स्वयं चूर–चूर करते
विशेष योग्यता प्राप्त विद्यार्थियों को !

भविष्य को चिथड़ों में लिपटा हुआ भी
हम नहीं देखते
नहीं देखते भूख से बिलखते हुए
रोटी के लिए झगड़ते हुए !

ईश्वर तू गर्व न कर
तेरे दिए हुए आंख और कान व्यर्थ हैं
रह सकता है आदमी बिना सुनेए बिना देखे
रह सकता है आदमी बिना सुनेए बिना देखे !

वरिष्ठ अनुवादक,
पर्यटन मंत्रालय

कविता

इसलिए यूँ ही नहीं, पानी कहलाता हूँ मैं

– उरूज ज़ैदी

बहता हूँ कभी नदी या समंदर में।
बहता हूँ कभी आंसू बनकर।
बहता हूँ कभी बूँद बनकर बारिश में।
बहा देते लोग मुझे बेकार समझ कर,
इसीलिए यूँ ही नहीं पानी कहलाता हूँ मैं?

बहता हूँ गंगा, जमना, गोदावरी, कृष्णा में,
पवित्र गंगा को और भी पवित्र बनाता हूँ।
फख्र करता हूँ के हिन्दुस्तान में बहता हूँ मैं।
स्वच्छ भारत को और भी स्वच्छ बनाता हूँ।
इसीलिए यूँ ही नहीं पानी कहलाता हूँ मैं ?

याद आते हैं वह दिन कभी निर्मल हुआ करता था मैं।
आज कूड़े और गंदगी के संग से चलता हूँ मैं।
हे ईश्वर पहले जैसा बनादो अभी मुझे।
जिसे दिया था जीवन दान आज पूछते नही मुझे।
इसलिए यूँ ही नहीं पानी कहलाता हूँ मैं?

प्यास लगे तो पीते हो मुझे तुम याद कर कर।
एक दिन भी रह सकते नही मेरे बिना पर।
याद रखना मानस एक दिन ऐसा भी आएगा।
तड़पोगे तुम मेरा भी नाम याद कर कर?
इसलिए यूँ ही नहीं पानी कहलाता हूँ मैं?

होटल प्रबंध संस्थान, हैदराबाद
द्वितीय वर्ष के छात्र
08790293823

कविता

फिर मौका हाथ न आएगा !

–हेमंत कुमार

ये धरती है घर तेरा,
जिस पर टिका है तेरा बसेरा,
जल है इसकी जीवन धारा,
वनों में बसता जीवन सारा,
क्यों तू इसकी जड़ों को खोदे,
कब तक महल बनाएगा?
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा!

पानी को तू व्यर्थ बहाता,
गाड़ी–घोड़े–ढोर नहलाता,
फव्वारे से स्नान तू करता,
बाल्टी भर से काम न चलता,
ये कुंआ एक रोज़ सूख जाएगा,
जल सपना फिर हो जाएगा..
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा!

पेड़ भी तूने खूब गिराए,
अपने स्वार्थ के महल बनाए,
जिन जीवों से जीवन तेरा,
उन्हीं के घर को आग लगाए,
ये मूक बेचारे कहां पर जाएँ,
और कितना पाप कमाएगा?
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा!
धरती का तू सीना चीरे,
और निकाले सोना–हीरे,
चट्टानों के सिर को फोड़े,
पर मिट्टी की कभी कद्र न की रे..

इसी मिट्टी की है ये काया,
एक रोज़ इसी में मिल जाएगा,
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा!

तकनीकी से काम कराता,
उद्योग चलाकर नाम कमाता,
कंक्रीट के जंगल बनाकर,
आब–ओ–हवा में ज़हर मिलाता,
गंगा की गोद में गंदगी भरकर,
मूर्खपने पर खूब इतराता,
इस पावनता को मैली करके
अपने दामन में दाग लगाएगा,
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा!

भावी पीढ़ी की सुधि बिसार,
धरती का तू दोहन करता,
आधुनिकता स्वांग रचाकरे
पर्यावरण का शोषण करता,
तेरी करनी और तेरे स्वार्थ का
एक दिन ये घड़ा भर जाएगा,
अभी वक्त है संभल जा प्राणी
फिर मौका हाथ न आएगा..
फिर मौका हाथ न आएगा!

डाटा एंट्री आपरेटर

कविता

फाईल पर दर्द नहीं आता

– राजीव कुमार पाहवा

दर्द मंद कहाँ जाएँ अपना दर्द बाँटने
अब तो कोई भी दर्दख्वार नहीं
कहते हैं अब है ज़माना तरक्की का
किसके पास वक्त है जो बांटे दर्द किसी का
पोटली दर्दों की जो गुरबत के दिए हुए है
नहीं हलकी होती दीख पड़ती
बहुत गुहार लगाई ऊपर वाले को
पर नहीं थी कोई सुनवाई
कहा जाता है जिस का कोई नहीं
उसके लिए सरकार है
कहते की सरकारें लोगों की है
और उनके लिए ही है
पर सरकारें चलती है फ़ाईलों पर
कब हुआ कि दिल का दर्द फ़ाईलों पर नजर आया
कब हुआ कि आँख का अश्क फ़ाईलों पर उभर आया
नहीं होगा तेरा भी दर्द कम क्योंकि
फाईल पर दर्द नहीं आता

सेवा निवृत मुख्य अभियंता,
केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण,
नई दिल्ली

हास्य व्यंग्य

लखनऊ मैट्रो में आपका इस्तकबाल है!

— राम बाबू

जल्दी ही लखनऊ में मैट्रो रेल आरंभ होने वाली है। लखनऊ की तहजीब पूरे भारत में विख्यात है, इसी को ध्यान में रखते हुए तैयार रहें लखनऊ मैट्रो रेल में कुछ ऐसी अनाउंसमेंट्स के लिए, लखनऊ के अदब के अनुसार तैयार की गई हैं।

1. आंखों में सारी रात जलें अश्क के चराग,
   बस्ता सम्भाले जनाब अगला स्टेशन है चारबाग।
2. निशातगंज उतरने वाले अहिस्ता से उठ लें,
   अगला स्टेशन वही है यहां की यादगार रख लें।
3. छूटी जगह का ख्याल रखें, न करे किसी पे तंज,
   सवारियां गौर फरमायें अगला स्टेशन हजरत गंज।
4. नाश्ता न किया हो और भूखें हों जनाब,
   आलमबाग उतर लें यहां की मुगलई है लाजवाब।
5. मुसाफिर जो जा रहें हैं, गोमती नगर,
   आहिस्ता से दरवाजे पर आ जायें निकलकर।
6. चिकन और चिकेन के कद्रदान गौर कर लें,
   अगला स्टेशन अमीना बाग आराम से उतर लें।
7. शिकवा किसी से और किसी से गिला कर लिया,
   मोहतरम आपका दर आ रहा है मुंशी पुलिया।
8. जिंदगी के दिन चार बचे तो फिर मिलेंगे,
   अगला स्टेशन नाका हिंडोला, दरवाजे बाईं ओर खुलेंगे।
9. हौसला रखें, जल्दी न मचायें ख्वातिनों हाजरात,
   खरामा खरामा चलें अपनी चीजें रखें अपने साथ।
10. अरमां जितने इश्क की बारिश से हरे हो जाएं,
    जनाने और सयाने दिख जायें तो सीट से खड़े हो जाएं।
11. दरवाजों के पास न खड़े हजूर रहे,
    अंजानी चीजों से भरसक दूर रहे
12. अपनी खातिर का मौका हमें आपने दिया,
    खुशनसीब रहें ताउम्र, मेट्रों में सफर का शुक्रिया

कनिष्ठ अनुवादक
पर्यटन मंत्रालय

विविध

पर्यटन मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालयों में अपना अधिकाधिक सरकारी काम काज हिन्दी में करने वाले अधिकारी

(हिन्दी सलाहकार समिति के निर्णय के अनुसार)

श्री अनूप चटर्जी
प्रधान प्रबंधक (एचआर–एनई)
भारत पर्यटन विकास निगम लि.

श्री संजय मिश्र
प्रधान प्रबंधक(एचआर–विधि)
भारत पर्यटन विकास निगम लि.

सुश्री पायल बत्रा
प्रधान प्रबंधक (सुरक्षा)
भारत पर्यटन विकास निगम लि.

श्री विनायक गर्ग
मुख्य सतर्कता अधिकारी
भारत पर्यटन विकास निगम लि.

श्री विनोद कुमार
पुस्कालयाध्यक्ष
होटल प्रबंध व्यवस्था भोजन भंडार एवं
पोषाहार संस्थान, गुरदासपुर, पंजाब

श्री रवि कुमार
कनिष्ठ लिपिक
होटल प्रबंध व्यवस्था भोजन भंडार एवं
पोषाहार संस्थान, गुरदासपुर, पंजाब

शुभ कामनाएं

1 अप्रैल से 30 सितम्बर, 2016 के दौरान पर्यटन मंत्रालय से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

क्र.सं.	अधिकारी / कर्मचारी का नाम व पदनाम	माह
1.	श्री बी.डी. मांझी, चौकीदार	मई, 2016
2.	श्री बचन लाल, पर्यटक सूचना अधिकारी	जून, 2016
3.	श्री राजेन्द्र प्रसाद, सहायक महानिदेशक	जुलाई, 2016
4.	श्री प्रवीण अरोड़ा, पर्यटक सूचना अधिकारी	जुलाई, 2016
5.	श्रीमती अनिता कपूर, सहायक	जुलाई, 2016
6.	श्रीमती विजय शर्मा, डाटा एंट्री ऑपरेटर	अगस्त, 2016
7.	श्री पी.के. कुहन, पर्यटक सूचना अधिकारी	सितम्बर, 2016
8.	श्री एच.सी. दास, चपरासी	सितम्बर, 2016
9.	श्री ओम पाल, लेखाकार	सितम्बर, 2016

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत हुए सभी पदधारियों को शुभकमानाएं देते हुए हम उनके अच्छे स्वास्थ्य और सुखद जीवन की कामना करते हैं।

"अतुल्य भारत" पत्रिका में प्रकाशन हेतु लेख आमंत्रित हैं

"अतुल्य भारत" पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन, संस्कृति, पुरातत्व, विरासती धरोहरों पर लेखकों, वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं, प्रौद्योगिकीविदों, तकनीकी विशेषज्ञों, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित हैं।

"अतुल्य भारत" पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजे जाने वाले लेखों का मूल विषय पर्यटन के अंतर्गत होना चाहिए।

लेखकों के लिए दिशा–निर्देश

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय (करंट टॉपिक्स) एवं इससे संबंधित विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो। किसी विशेष अवसर पर रिपोर्ट के लिए भेजा गया लेख अधिकतम लगभग 1500 शब्दों का हो। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के उपयुक्त फोटोचित्र/रेखाचित्र आदि भी संलग्न करें और फोटोचित्र/रेखाचित्र के मूल–स्रोत का संदर्भ अवश्य दें। लेख में यदि आंकड़ों का प्रयोग किया गया है तो साथ में आंकड़ों के मूल–स्रोत का संदर्भ भी दें। लेख के साथ इस आशय का घोषणा–पत्र अवश्य भेजें कि आपका लेख मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित है।
- लेख सरल हिंदी भाषा में लिखा हो। कोष्ठक में वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी शब्द (यदि आवश्यक हो, तो) भी अवश्य दें।
- लेख कागज के एक ओर टाइप किया हुआ हो। टाइप किया लेख (Open File) में (फोन्ट सहित) ई–मेल माध्यम से भेजें।
- प्रकाशन के लिए उपयुक्त पाए गए लेखों को ही पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। किसी लेख के प्रकाशन हेतु चयन के संदर्भ में संपादक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
- लेख के अंत में अपने हस्ताक्षर सहित अपने पत्र–व्यवहार का पता भी दें। साथ ही लेख के कुल पृष्ठों की संख्या, फोटोचित्रों/रेखाचित्रों और सारणियों की संख्या का भी उल्लेख करें।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी किसी भी दायित्व के लिए स्वयं लेखक जिम्मेदार होंगे।

लेख इस पते पर भेजें :

संपादक, पर्यटन मंत्रालय, सी–1 हटमेंट्स, डलहौजी रोड, नई दिल्ली–110011

ई–मेल : editor-atulyabharat@gmail.com

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां

पर्यटन मंत्रालय के सचिव, श्री विनोद जुत्शी 01 अप्रैल, 2016 को नई दिल्ली में, 64 दिनों की लघु अवधि में कन्याकुमारी से श्रीनगर तक 4600 कि.मी. 'स्पिरिट ऑफ इंडिया रन' को सफलतापूर्वक पूरा करने पर अल्ट्रा मैराथन रनर एवं ऑस्ट्रेलियाई संसद के पूर्व सदस्य, श्री पैट्रिक फार्मर के लिए आयोजित अभिनंदन समारोह में शिरकत करते हुए।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा ने 05 मई, 2016 को नई दिल्ली में पर्यटन संबंधी मुद्दों को लेकर केंद्रीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु से भेंट की।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) एवं नागर विमानन राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा 14 जून, 2016 को नई दिल्ली में कृष्णा और रामायण सर्किट स्वदेश दर्शन स्कीम पर राष्ट्रीय समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए। पर्यटन मंत्रालय के सचिव, श्री विनोद जुत्शी भी साथ हैं।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री, डॉ. महेश शर्मा 18 जून 2016 को हंगरी के बुडापेस्ट में योग कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

19 जून, 2016 को हंगरी के एस्ट्रगोम में भारत महोत्सव के दौरान पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) एवं और नागरिक उड्डयन मंत्री डॉ. महेश शर्मा तथा अन्य अतिथि।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा 26 जुलाई, 2016 को नई दिल्ली में स्वदेश दर्शन योजना के लिए तीसरे राष्ट्रीय स्तर की संचालन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए। इस अवसर पर पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री विनोद जुत्शी भी मौजूद हैं।

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन 30 जुलाई, 2016 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार 2014–15 प्रस्तुतीकरण के दौरान। इस अवसर पर पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा, पर्यटन मंत्रालय मे सचिव श्री विनोद जुत्शी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित हैं।

09 अगस्त, 2016 को नई दिल्ली में होटल एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 'साउथ एशियन होटेलियर्स कॉन्क्लेव' के उद्घाटन अवसर पर पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री डॉ महेश शर्मा। साथ में एनडीएमए के सदस्य सचिव श्री आर.के. जैन और पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री विनोद जुत्शी भी हैं।

पर्यटन सचिव श्री विनोद जुत्शी 01 सितंबर, 2016 को मध्य प्रदेश के खजुराहो में ब्रिक्स पर्यटन सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए। साथ में हैं मध्य प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा तथा अन्य ।

पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा 05 सितंबर 2016 को नई दिल्ली में पर्यटन मंत्रालय द्वारा 21–23 सितंबर 2016 तक आयोजित होने वाले 'अतुल्य भारत पर्यटन निवेशक शिखर सम्मेलन 2016' के बारे में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए। इस अवसर पर सचिव, पर्यटन मंत्रालय, श्री विनोद जुत्शी और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित हैं।

भारत में जापान के राजदूत श्री केंजी हीरामात्सु 07 सितंबर, 2016 को नई दिल्ली में पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) एवं संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा से भेंट करते हुए।

पर्यटन मंत्रालय के संस्थानों के अधिकारीगण, स्टाफ और छात्र 21 सितंबर, 2016 को नई दिल्ली में साफ–सफाई से संबंधित विषय पर 16 से 30 सितंबर तक चलने वाले स्वच्छता पखवाड़ा के तहत लाल किला परिसर की प्रतीकात्मक सफाई करते हुए।

होटल प्रबंध, खान–पान प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषण विज्ञान संस्थान

आल्त–पर्वरी, गोवा 403521

स्वच्छ भारत अभियान पर अभिभाषण

संस्थान के विद्यार्थियों व कर्मचारियों को स्वच्छ भारत के प्रति जागरूक कराने के उद्देश्य से होटल प्रबंध संस्थान, गोवा में 22 अगस्त, 2016 को एक समारोह का आयोजन किया गया। गोवा की राज्यपाल महामहिम डॉ (श्रीमती) मृदुला सिन्हा, कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी और उन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

माननीय महामहिम राज्यपाल डॉ. (श्रीमती) मृदुला सिंहा द्वारा अभिभाषण

राज्यपाल ने विद्यार्थियों से कहा कि वे स्वच्छता को अपने जीवन का एक अंग बनाएँ और उसका पालन करते हुए वैसे ही आनंद उठाएँ जैसे जीवन में विशेष रीति–रिवाजों के निर्वाहन में उठाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि, गांधी जी के स्वच्छ भारत का सपना तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक कि हम सब इसमें स्वयं भागीदार न बनें और यह प्रण कर लें कि 'न गंदगी फैलाएँगे न फैलाने देंगे'। तत्पश्चात उन्होंने सभी को स्वच्छता का प्रण दिलवाया। महामहिम के करकमलों से संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''आरोह'' के द्वितीय संस्करण का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती डोना डि'सूझा, प्रधानाचार्यय श्री. संजीव कड़कड़े, विभागाध्यक्ष–1, श्रीमती लिझा डायस, विभागाध्यक्ष–2, श्री सूर्यकांत पराष्टेकर, प्रशासनिक अधिकारीय, कर्मचारी वृंद व विद्यार्थीगण समारोह में उपस्थित थे।

प्रधानाचार्य श्रीमती डि'सूझा ने अतिथियों की अगुवाई की। विभाग प्रमुख श्री संजीव कड़कड़े ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री पंकज कुमार सिंह, व्याख्याता ने कार्यक्रम का आयोजन व संयोजन का कार्यभार संभाला।

उज्जैन में अक्ष्य तृतीया शाही स्नान दिवस के
अवसर पर सिहंस्थ कुंभ मेले का दृश्य (9 मई 2016)

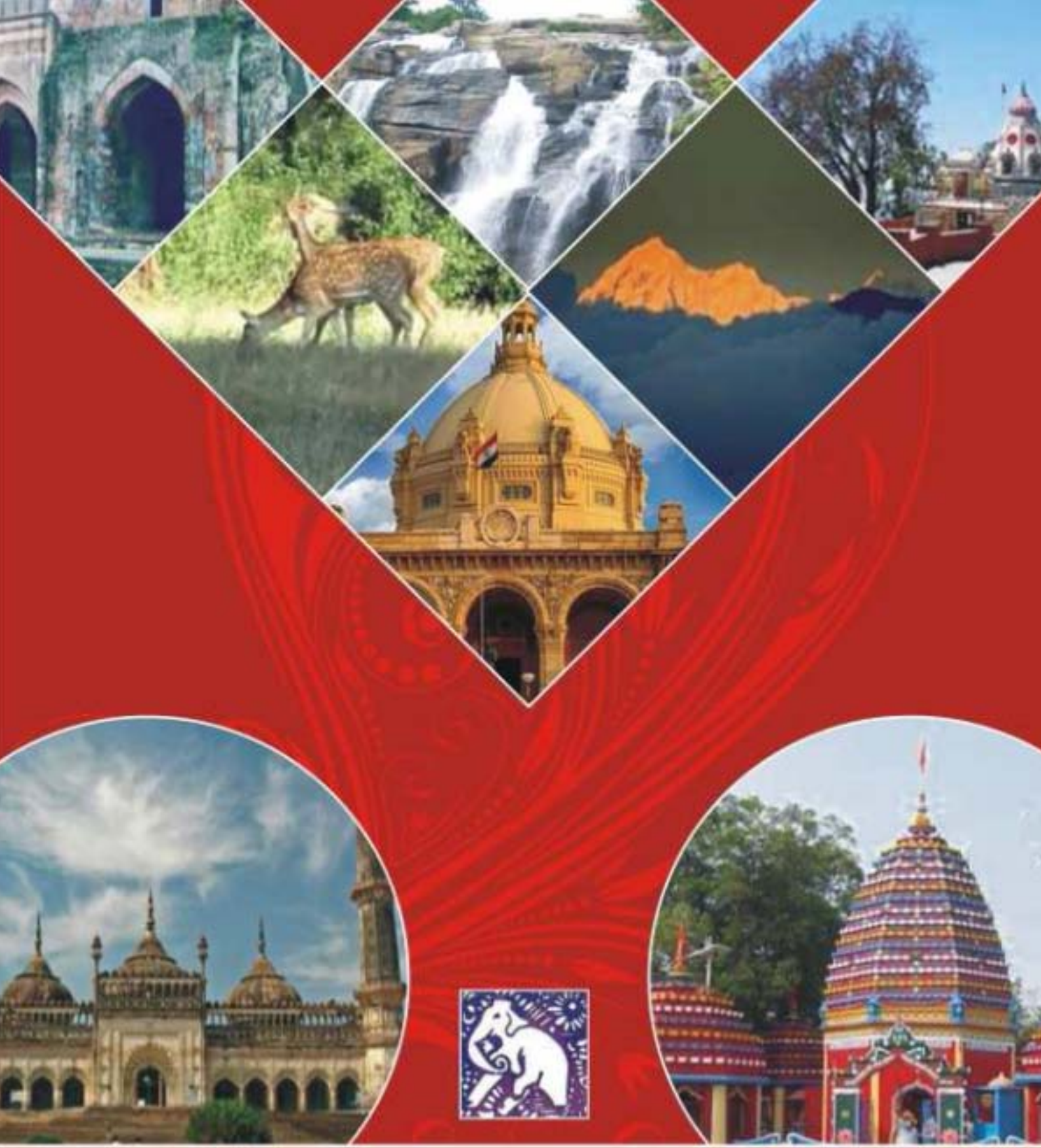

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंटस,
डलहौजी रोड, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com